॥ श्रीः ॥

मदनकोष।

अर्थात्

जीवनचरित्रस्तोम।

(BEING A DICTIONARY OF UNIVERSAL BIOGRAPHY FOR SANSKRIT AND HINDI READERS.

जिसमें

संसारके १००० महानुभावोंके चरित्र संगृहीत हैं।

जिसको

संस्कृत व हिंदी पाठकोंके हितार्थ,

श्रीमान् पण्डित मदनलाल तिवारी असिस्टन्ट टीचर गवर्नमेन्ट हाईस्कूल इटावाने

निर्माण किया,

और

खेमराज श्रीकृष्णदासके

बंबई "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकराय प्रसिद्ध किया।

FIRST EDITION

Copies 1,000.

संवत् १९६४, सन् १९०७.

मूल्य

PREFACE

In Resolution No. $\frac{448}{XV-\frac{48}{9}}$ dated Naini Tal, the 8th October 1901, Sir A. P. Macdonnel, the then Lieutenant Governor of N. W. P. & oudh, very emphatically pointed out the need of fairly good biographies being written in Vernacular and observed that no form of literature impresses a boy of a thoughtful turn of mind so much as a well written biography.

Influenced by these remarks of the Lieutenant Governor, I have written this book which is the first one of its kind in Hindi, in as much as, it contains in alphabetical order the lives of about one thousand celebrities of the world, with Special reference to Sanscrit and Hindi literature.

Information has been collected from the best and most reliable sources and the researches of modern scholars have been freely made use of in writing the lives of prehistoric personages.

Only the most reasonable and logical explanations have been accepted to settle those points upon which the best authorities are at variance.

On most occasions I have had recourse to original sources of information and where I have borrowed from other compilers I have always taken care to be assured of their accuracy.

The book may with equal advantage be employed both for reference and general reading most of the biographies being written at full length.

As a work of reference, it will supply the long-felt want, and will greatly improve the Study of Sanscrit and Hindi languages. The moral tone which pervades the whole work will not be without its influence on the reading public.

Etawah
The 7th March 1907.

MADAN LAL TEWARI.

प्रस्तावना।

पश्चिमोत्तर व अवध देशके लफ़टिनेन्ट गवरनर, सर ए. पी. मैकडानल साहब बहादुरने शिक्षाविभागकी रिपोर्टका गुणदोष विवेचन करते हुए, रेजोल्युशन नं ४४८/१५-४८ के द्वारा, नैनीतालसे ८ अक्टोबर, सन् १९०१ को उत्तेजनाके साथ सूचना दी थी कि देशी षभाषामें अच्छे २ जीवनचारित लिखाजाना अत्यावश्यक है, क्योंकि विचारशील चित्तवृत्ति छात्रोंपर इतना प्रभाव किसी प्रकारके साहित्यका नहीं पड़ता है जितना कि अच्छे २ चारित्रोंका।

लार्डसाहबके पूर्वोक्त कथनसे प्रेरितहोकर मैंने यह रचना की जो अपने ढङ्गकी अनूठीहै क्योंकि इसमें संसारके १ सहस्र श्रेष्ठजनोंके चारित हैं जिनमेंसे बहुतसे संस्कृत व हिंदी साहित्यसे सम्बंध रखने वाले हैं।

ग्रंथकी सामग्री केवल अत्यंत विश्वसनीय स्रोतोंसे एकत्र कीगईहै और प्राचीन तथा रहस्यमय चारित्रोंके लिखनेमें पुरातत्त्ववेत्ताओंके अन्वेषणका भलीभांति व्यवहार कियागयाहै। जिन बातोंके विषयमें प्रामाणिक विद्वानोंका मतभेदहै, उनके निर्णय करनेमें केवल अधिक बुद्धिसम्मत तथा न्यायसंगत मतोंको ग्रहण किया है।

बहुधा स्थलोंमें तो चारितान्वेषणके लिये केवल मूल स्रोतोंका ही आश्रय लिया है और यदि कोई चारित संग्रहग्रंथोंके आधारपर लिखाहै तो उसकी शुद्धताकी परीक्षा सावधानीसे कर ली है।

यह ग्रंथ अध्यापक, जिज्ञासु तथा पाठकोंको समानरीतिसे लाभदायी होगा। क्योंकि बहुतसे चारित विस्तृतरूपसे भी लिखे हैं।

जिज्ञासुओंकी आवश्यकता पूरक इस प्रकारका यह पहलाही ग्रंथहै। संस्कृत और हिंदी साहित्य शिक्षाकी इससे बड़ी उन्नति होगी और पढनेवाली दुनियापर नीति तथा बुद्धिमत्ताका, जिससे यह ग्रंथ ओतप्रोतहै, अवश्यही प्रभाव पड़ेगा।

इटावा.
७ मार्च, १९०७.

मदनलाल तिवारी.

DEDICATED

WITH

HIS HIGHNESS' GRACIOUS PERMISSION

TO

MAHARAJ ADHIRAJ SIR SHIVAJI RAO HOLKER,

BAHADUR, G. C. S. I..

RETIRED

MAHARAJA OF INDORE

AS A HUMBLE TAKEN OF

GREAT REGARD FOR HIS HIGHNESS' HIGH-MINDEDNESS, GENEROSITY, & LONE OF HINDI LITERATURE.

BY

HIS HIGHNESS MOST DEVOTED ADMIRER & WELL WISHER

PANDIT MADAN LAL TEWARI

THE AUTHOR

ॐ

जीवनचरित्रस्तोम.

(मदनकोष.)

अकबर (मुगलसम्राट् दिल्ली)-जब बादशाह हुमायूं शेरशाह सूरसे हारकर ईरानकी तरफ भागाजाता था तो रास्तेमें स. ई. १५४२ की साल अमरकोटके क़िल्लेमें उसके अकबर पैदा हुआ। अकबरने बचपन में ही अस्त्र शस्त्र चलाना तथा घोड़ेपर चढ़ना सीखा और १३ वर्षकी उम्रमें दिल्लीका तख्त पाया। मुग़लोंका राज्य उस समय केवल दिल्ली और आगेरके आस पासही था. कुछ कालतक राजकाज बैरमखाँ खानखाँनाकी मददसे होता रहा पर उसके अन्यायसे लोग थोड़ेही दिनोंमें उकला उठे एवं स. ई. १५६० में अकबरने सब काम अपने काबूमें करालिया और अन्य मुसलमान बादशाहोंकी अपेक्षा हिन्दुओंके बृहत् वृंदकोभी अपने दर्बार तथा सेनामें अधिक उच्चपद दिये, राजपूतोंसे शादी व्यवहार किये, गोहिंसा बंदकी, तीर्थोंके कर माफ़ किये, सब राजपूत राजोंको महाराना चित्तौड़के सिवाय वशमें करके उनसे राजस्व लिया और हिन्दू मुसलमानोंको मिलाकर सहजहीमें पंजाब, कश्मीर, काबुल, कंधार, गुजरात, बंगाल, आसाम, उड़ीसा और खानदेश इत्यादि देश जीतकर अपने राज्यमें मिलाये फिर सब राज्यको सूबोंमें बांटा, माल, गुजारी वसुल करनेका तथा प्रजाकी रक्षाका सुप्रबंध किया और जागीरोंकी जगह फौजके सिपाहियोंको नक़द तनख्वाह देनेका नियम चलाया, बचपनकी शादी तथा सती होनेकी रसम बंद की प्रत्येक शहरमें हिंदू मुसलमानोंके लिये पृथक् २ मोहताजखाने खोले, आगेरेको अकबराबाद नाम से बसाकर अपनी राजधानी बनाया और प्रयाग तथा आगेरेमें लाल पत्थरके किले बनवाये। अकबर साधु, संतोंसे मिलता था, सब मतोंके तत्त्वविज्ञानी तथा ब्रह्मज्ञानी पंडितोंके शास्त्रार्थ सुनता था, किसी मत का विरोधी न था, हिंदू मुसलमान सबही प्रसन्न थे, राजकाज न्याय और नीतिसे होता था, देखनेमें बड़ा स्वरूपवान्, गौरांग हृष्टपुष्ट, दयालू, मिलनसार, दृढचित्त और तीव्रबुद्धि पुरुषथा, स्वभाव परिश्रमी था, दिनमें ३०।४० मील पैदल चल सकता था और शिकार खूब करता था। वर्षमें ३मास पर्य्यंत मांस नहीं खाता था, रात दिनमें केवल ३ घंटे सोता था,

मंत्री सेनापति आदिकोंसे मित्रता भाव रखता था, जो उससे मिलता था यही जानता था कि बादशाह मुझको सबसे अधिक चाहता है। बीरबल, टोडरमल, राजामानसिंह, अब्बुलफज़्ल, फ़ैजी, अब्बुलरहीम ख़ानख़ाना, मिर्ज़ा गोकलताश, तानसेन और सूरदास दर्बारके नवरत्न थे । अकबर सन् ई. १६०५ में मरा, मरतेवक्त सबसे हाथ जोडकर बोला "मेरा अपराध क्षमा करना और मेल मिलापसे रहना" । मालगुजारी उसके वक्तमें १७॥ करोड़की थी। पिताकी अन्तिम दशा देख शाहज़ादा सलीम जो पहिले बाग़ी होगया था पैरोंपर गिरपड़ा और विकलहो फूट २ रोया । अकबरने उसे उठा छातीसे लगाया और कहा "बेटा पुराने नौकरोंकी प्रतिष्ठा करना और बेगमोंकी तनख्वाह जारी रखना"। अकबरकी क़बर आगरेकेपास सिकंदरेके रोज़ेमें है जो लाल पत्थरका बनाहुआ है.

अगस्त्यऋषि–ऋग्वेदमें लिखा है कि, ऋषि मित्रावरुणके वीर्य्यसे जो उर्वशी अप्सराको देखकर गिरा अगस्त्य तथा वसिष्ठऋषि पैदाहुये–ये विन्ध्याचल पर्वतके समीप विन्ध्याननवनमें गोदावरीतट रहतेथे–महाभारतमें लिखा है कि राजा नहुष इन्हींके शापसे साँपहुये–रामचंद्रजी वनवासके समय इनके आश्रममें पधारेथे–द्रवण देशवासियोंको इन्होंने अनेक प्रकारकी विद्या पढाई थी–इनका पुत्र शतानंद निमिकुलका पुरोहितथा– अगहतसराय नामक एक खेड़ा जिलाएटामें है, लोग कहते हैं कि अगस्त्यमुनिने वहां बहुतकालतक तपस्या की थी–अगहत अपभ्रंश अगस्त्यका है–स. ई. १६८५ में अफग़ानोंने वहां एक सराय बनवाई तबसे अगहतसराय कहलाया–विदर्भ (बरार) के राजाकी कन्याओंसे अगस्त्यऋषिने शादी की थी–रावण लङ्केश इनके वंशमें था–ऋषि पुलस्त्य इनके दादा थे–दक्षिण देशस्थ सब राक्षस इनकी आज्ञा मानते थे–समुद्रको तीन चुल्लू करके पीजाने और उसको मूत्रद्वारा निकालकर खारी करदेनेकी पुराणोक्त कथा इन्हींके विषयमें है.

अग्निमित्र (मगधदेशकाराजा)–इसका बाप पुष्पमित्र मगधके मौर्यवंशी राजा बृहद्रथका सेनापतिथा–बृहद्रथको वधकरके पुष्पमित्र मगधका राजा बना, पुष्पमित्रके मरनेपर अग्निमित्र उसका बेटा ईसासे १७० वर्ष पूर्व राजसिंहासन पर बैठा–कवि कालिदासने इसी अग्निमित्र और मालविकाकाप्रेम "मालविकाग्निमित्र" नाम नाटकमें वर्णन कियाहै–मालविका विदर्भ की रानाकी सहेली परमसुंदरी सङ्गीत शास्त्रकी पूर्ण ज्ञाता थी.

अजातशत्रू–ये अपने बाप बिम्बसार मगध नरेशको मारकर ईसासे ४८५ वर्ष पूर्व गद्दीपरबैठा. ३२ वर्ष राज्यकरके आपभी चलबसा. राजग्रह इसकी राजधानी थी. गौतम बुद्धने इसको अपना मतग्रहण कराया था. इसके गद्दीपर बैठनेसे ८ वर्ष पीछे महात्मा बुद्धका परलोक हुआ.

अजीतसिंह राठौर (जोधपुरनरेश). इनके पिता महाराज यशवंतसिंहसे औरङ्गजेब मनमें शत्रुता रखता था एवं औरंगज़ेबने तख्तपर बैठकर उनको काबुलकी सुबेदारीपर भेजदिया था. काबुलहीमें वीरपिताके अंशसे वीर पुत्र अजीतसिंहने गर्भ धारण किया पर इनको पेटहीमें छोड़कर यशवंतसिंहजीका देहांत होगया. जब ये जन्मे तो औरंगजेबने पिताका बदला उसके बालक पुत्रसे लेना चाहा निदान जोधपुरकी रियासत जब्तकरली और अजीतसिंहको क़ैद करनेका ठहराव किया. यह देख यशवंतसिंहके साथियोंने अजीतसिंहको आबू पर्वतपर जा छिपाया और यशवंतसिंहकी रानियोंने प्रतिष्ठा बचानेकेलिये जान खोदी. बड़ेहोकर अजीतसिंहने उदयपुरकी एक राजकुमारीसे शादी की और धीरे २ अपने राज्यपर अधिकार जमाया. इतिहास साक्षी देताहै कि, पराक्रमी अजीतसिंहने औरंगजेबका मान मर्दन करके एक समय दिल्लीमें ७ दिनतक राज्य किया था। स. ई. १७०६ में अजीतसिंह और औरंगजेबमें संधि होगई जिससे अजीतसिंहने बादशाहका आधिपत्य स्वीकार किया. थोड़ेही दिनोंबाद अवसर पाकर औरङ्गज़ेबने अजीतसिंहको उनके पुत्र बख्तसिंहके हाथसे मरवाडाला और इसके बदलेमें बख्तसिंहको ईडरका राज्य दिया. अजीतसिंहकी ६४ रानियें पतिके मृतक शरीरके साथ सती होगईं. अजीतसिंहका महिल और छतुरी जोधपुरमें देखने योग्य हैं.

अङ्गदजी (सिक्खोंके द्वितीय गुरु)–इनके बाप फीरूमलखत्री फीरोजपुरके हाकिमके कार्य्य कर्ता थे। माताका नाम सुभराईजी था। स. ई. १५१९ में इनका विवाह हुआ जिससे २ पुत्र और २ पुत्री हुईं। स. ई. १५३१ में गुरु नान्हकके चेले होगये। गुरु इनकी भक्तिसे ऐसे प्रसन्न हुये कि मरती समय निज पुत्रोंकी अपेक्षा इन्हींको अपनी गद्दीका उत्तराधिकारी नियत किया। ये बड़े सत्य वादी और दानीथे जो कुछ चेलोंसे मिलता धर्मार्थ खर्चकर दिया जाता था। पहुँचे हुये साधू थे अनेक सिद्धताकी बातें इनके विषयमें प्रसिद्ध हैं। समाधी इनकी अभीतक खंडौर नामक ग्राममें विद्यमान है जिसके खर्चके लिये १४५८ रु० वार्षिक आयकी भूसम्पत्ति सरकार अङ्गरेज़ीकी तर्फ़से माफ है । स. ई. १५०४ में जन्मे। स. ई १५५२ में मरे.

अङ्गिराऋषि–१० प्रजापतियों तथा सप्तऋषियोंमें इनकी गणना है। बृहस्पति, मार्कण्डेय इत्यादि इनके पुत्र थे. ऋग्वेदका नवाँ मण्डल इन्होंने प्रकट किया और एक धर्मशास्त्र स्मृति तथा एक ज्योतिष सिद्धांत बनाया.

ये वर्णके ब्राह्मण थे पर इनके वंशधारियोंका स्वभाव क्षत्रियोंकासा था सन्तति इनकी अनेक पीढियोंतक अङ्गिरानामसे पुकारीजातीरही.

अदीसुर—बंगालेका राजा स. ई. ९९४ में विद्यमान था (देखो वीरसेन).

अनङ्गपाल—पंजाबके राजा जयपालका पुत्र वर्णका ब्राह्मण था। स. ई. के ११ वें शतकमें जयपालने सुलतान. महिमूद गज़नवीसे हारकर राजपाट निजपुत्र अनङ्गपाल को सौंपदिया और अपना देह अग्निमें हवन करदिया। महिमूदने अनङ्गपालपरभी चढाईकी और बहुतसा माल लूटकर लेगया। कुछसमय पीछे महिमूदने अनङ्गपालपर फिर चढाई की इससमय यद्यपि राजाका कोष खाली था पर क्षत्रियोंने अपनी जान लड़ादी और क्षत्रानियोंने निज पतिपुत्रोंकी जो राजाकी फौजमें थे 'जेवर बेंचकर और सूत कातकर रणभूमिमें सहायता की। अनङ्गपालके मरनेपर महिमूदने उसके पुत्रजयपाल द्वितीयको परास्त करके स. ई. १०२२ में लाहौरका राज्य छीनलिया.

अनङ्गभीमदेव (उड़ीसाकाराजा)-इस गंगावंशी राजाने स. ई. ११७५ से १२०२ तक राज्य किया और पुरीमें जगन्नाथका मंदिर बनवाया.

अनन्तदैवज्ञ (ज्योतिषकार). विदर्भ प्रदेशान्तर्गत धर्मपुर निवासी चिन्तामणि दैवज्ञके पुत्रथे- नीलकण्ठी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता पं० नीलकण्ठ दैवज्ञ तथा मुहूर्तचिंतामणि ग्रंथके कर्ता पं० राम दैवज्ञ इनके पुत्रथे- ये वरारसे काशीमें आ बसे थे- जातकपद्धति 'और कामधेनुगणितटीक इनके रचेग्रंथ हैं- अनन्तसुधारसाख्यसारिणी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता अनन्तदैवज्ञ दूसरे थे-स. ई. के १६ वें शतकमें हुये.

अनन्यदास (भाषाकवि). अनन्ययोगप्रकाश नाम ग्रंथ इन्हींका रचाहुआ है-ये जातिके कायस्थ किले बीकानेरमें पैदा हुयेथे और अपने घरमें बैठे भगवद्भजन किया करतेथे- उस समय बीकानेरमें राजा रायसिंहका राज्य था जिनकेभाई पृथ्वीराज बड़ेकवि, भगवद्भक्त और अकबर बादशाहके कृपा पात्रथे-इन्हीं पृथ्वीराजजीको एक समय वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने घरबार 'त्यागनेकी तैय्यारी की-कुटुम्बी तथा मित्रादिकोंने घबराकर उनको अनन्यदासजीसे मिलाया-अनन्यजीके उपदेशसे तत्वज्ञानको प्राप्त होकर पृथ्वीराज पहिलेकी तरह सब कामकाज करनेलगे-अनन्यजीने जो उपदेश पृथ्वीराजको कियाथा वही "अनन्ययोगप्रकाश" में लिखा है.

अनुभूतस्वरूपाचार्य (वैयाकरण)-सारस्वतचंद्रिका नामक व्याकरण ग्रंथके कर्ता-पंजाबके रहनेवाले सारस्वत ब्राह्मणथे.

अप्पयदीक्षित (धर्म प्रवर्तक) द्रवणदेश वासी रङ्गराज मखीके पुत्रथे-इनका जन्म विक्रमकी १६ वीं शताब्दीमें हुआ, ये शैवथे-श्रीकण्ठ नामक मत इनका चलाया हुआ है-विद्वानोंकी दृष्टिमें इनकी प्रतिष्ठा शंकरस्वामीके

समान है-इनके अनेक वंशधरोंने अग्निष्टोम, वाजपेय इत्यादि यज्ञकरके भी दीक्षित, वाजपेई इत्यादिकी पदवी प्राप्तकी थी-प्रायः सब शास्त्रोंपर इनके रचे ग्रंथ मिलते हैं:-वेदांतमें परिमल आदि, मीमांसामें विधिरसायनादि, साहित्यमें वृत्तिवार्तिक, चित्रमीमांसा, कुवलयानंद इत्यादि और शैवदर्शनमें शिवादित्य मणिदीपिका-अनेक काव्य तथा स्तोत्रभी इन्होंने रचे थे और स्वरचित अनेक ग्रंथोंपर तिलकभी बनायेथे-इनके रचे सब ग्रंथ मिलाकर १०१ प्रतीत होते हैं.

अफलातून हकीम (Plato). यूनानमें एक बड़े फ़िलासोफ़र (ब्रह्मज्ञानी) होगये हैं। स. ई. ४२९ में अरिष्टनकेघर ऐथेन्समें उत्पन्न हुये. प्राचीन कालमें इनके पूर्वज यूनानके राजाथे एवं इनका वंश प्रतिष्ठित था. इन्होंने उच्चश्रेणीकी शिक्षा पाई थी और कविता बचपनहीसे करते थे. २० वर्षकी उम्रमें सुक़रातके शिष्यहो फ़िलासोफ़ी पढना शुरू किया और स्वरचित कविताकी पुस्तकोंको जलादिया. बुद्धि इनकी अत्यंत तीव्र थी एवं थोड़ेही कालमें योग्य फ़िलासोफर होगये. सुक़रातके मरनेपर देशाटनको निकले और १० वर्षतक मिश्रमें रहकर पढते रहे. बादको इटेली जाकर फ़ीसा गोरसकी फ़िलासोफी पढी. ४० वर्षकी उम्रमें अपनी जन्मभूमिको लौट आये और वहाँ एक पाठशाला स्थापनकरके विद्यार्थियोंको पढाने लगे. उम्रभर विवाहनहीं किया. ८२ वर्षकी उम्रमें मरे बहुतसी पुस्तकें इनकी बनाई हुई हैं जिनमेंसे "फ़ेडो" अत्यंत प्रसिद्ध है. सुक़रातके अनेक उपदेश इन्होंने निजरचित ग्रंथोंमें सम्मिलित किये हैं.

अब्दुलरहिमानखां (सर अबदुर्रहमानखाँ, जी. सी. एस. आई. अमीर अफग़ानिस्तान). अमीर शेर अलीके पुत्र थे। स. ई. १८८० में ब्रिटिशगवर्नमेंटकी मददसे काबुलकी गद्दीपरबैठे । अमीर काबुलको बृटिशगवर्नमेंटकी तरफसे कितनेही लाख रुपया सालाना इसलिये दियाजाताहै कि वह हिंदोस्तानकी सरहदपर अमन चैन क़ायम रक्खें और रूससे न मिलें । अमीरके राज्यका विस्तार २७००० वर्गमीलहै, आबादी प्रायः ४९ लाख मनुष्योंकी है, फ़ौजमें २० हज़ार सवार, ४० हज़ार पैदल और २१० तोपें हैं । अफगानिस्तानकी प्रजा स्वभावसेही लडाकू, हठीली, रक्तकी प्यासी, उपद्रवी और स्वदेश भक्तहै । अमीर काबुल या किसी विदेशी शत्रुके ख़िलाफ जहादका झंडा खडे होतेही पेशा-जीवका छोड स्वधर्म स्वदेशकी रक्षा के लिये हाथियार लेकर निकल पडते हैं । मनुष्य वध करना और गाजर मूली काटना उनके नजदीक बराबर है इसी लिये अमीर काबुलको उन लोगोंके साथ सख्त वर्ताव करनेकी जरूरत है । अमीर अब्दुर्रहमानके पूर्वजोंके समयमें वहां सदैव मारकाट लूट खसोट, खून खराबी होती रहती थी, मुल्ला सर्दार तथा जाति-

योंके मुखिया मनमानी करते थे और अमीर काबुल के आधीन होते हुये भी स्वाधीनही रहतेथे। राज कुटुम्बमें द्वेषकी आग सदैव धधकती रहती थी। ऐसी कट्टर प्रजाको अब्दुलरहिमाखाँने गद्दीपर बैठकर खूब ही ढीला किया। छोटे २ अपराधों पर उपद्रवियोंको फांसी देने, तोपसे उडादेने, हाथ पैर नाक कान काटने, पत्थरोंकी मारसे मारडालने, जीतादीवारमें चुनवादेने आदिके कडे दंड दिये। ऐसी कड़ी सजायें देनेसे उनका आतङ्क ऐसा जमगया था कि कट्टरसे कट्टर लोगभी उनका नाम सुनतेही पेशाब कर देते थे। निज आतङ्क बैठनेके साथही वे खूब जानतेथे कि प्रजाकी शक्ति नष्ट करना किसी अंशमें भी राज्यके लिये अच्छा नहीं है क्योंकि अफगानिस्थानका छोटासा राज्य अंग्रेजों तथा रूसियोंके बृहत् राज्योंके बीचमें है और वक्त पड़नेपर यही उपद्रवी प्रजा उसको बचासक्ती है। इसी लिये उन्होंने व्यापारकी उन्नतिके साथही निज प्रजाको नवीन नियमोंके अनुसार सैनिक शिक्षा दिलवाई, नये ढंगके हेनरी मार्टिनी रैफल, गिफर्ड गन आदि भयानक शस्त्रोंके बनानेके लिये कारखाने खोले और थोड़ेही कालमें अपनी पराक्रमी प्रजाको युद्ध शिक्षा और उत्तम शस्त्रोंसे सुसज्जित करादिया। उनकी राजनीति ऐसी विलक्षण थी कि स्वराज्यको भलेप्रकार दृढ करते हुये और निज प्रजाका भलीभाँति उत्साह बढाते हुये भी कभी अंग्रेजों व रूसियोंसे बिगाड़की नौबत नहीं पहुँचनेदी। उन्होंने अपने हालातकी एक पुस्तक लिखी है जो शिक्षाजनक और रोचक है। स. ई. १९०१ में ५८ वर्षकी उम्रमें मरे और उनके पुत्र हबी बुल्लाखाँ गद्दी पर बैठे.

अब्दुलरहीम खानखाना (दर्बार अकबरीके नवरत्न) वैरमखाँ खानखानाके पुत्र स. ई. १५५६ में लाहौरमें पैदा हुये, युवावस्थाहीमें अकबरने इनकी अपूर्व योग्यता देख मिर्जाखानकी उपाधि दी और शाहिज़ादे सलीमका शिक्षक इनको नियत किया.

पश्चात् मुज़फ्फरशाह सूबेदारके परास्त करनेके लिये इनको भेजा. उक्त सूबेदारको इन्होंने बड़ी शूरवीरतासे परास्त किया, जिसके पुरस्कारमें अकबरने प्रसन्न होकर इनको पञ्च हज़ारीका मनसब और खान बाबाका खिताब दिया और थोड़ेही दिन पीछे "वकीले सलतनत" के पदपर नियुक्त किया. इसके बाद ये क्रमशः जौनपुर, मुलतान और सिंधकी सूबेदारीपर रहे और दक्षिणकी लड़ाईमें बड़ी वीरतासे लड़े. अर्बी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और भाषाके बड़े विद्वान् थे और विद्वानों तथा गुणीजनोंका सत्कार करते थे. सभा इनकी विद्वानोंसे भरीपुरी रहती थी. इनके रचे संस्कृत श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषामें ९ रसके कवित्त तथा दोहे अत्यंत ललित हैं. नीति सम्बंधी सामयिक कविताभी अपूर्वही की है और रहिमन

या रहीम नामसे पदपूर्ति की है. भाषा पद्यमें "मदनाष्टक" ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआ है. फारसी दीवानभी इनका बनाया उत्तम है. दरबार अकबरीके नवरत्नोंमें इनकी गणना है. अकबरके बाद जहांगीरके समयमें २१ वर्ष जीवन धारणकरके ७० वर्षकी अवस्थामें दिल्लीमें मरे. एकदिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया "तारायन शशिरैन प्रति सूर होहिंशशिगैन." दूसरा चरण रोज रात्रिको सोचा करते पर नहीं बनता था. दिल्लीकी एक क्षत्रानी ने दूसरा चरण इसप्रकार बनाय बहुतसा इनाम पाया"तदपि अँधेरो है सखी पीउ न देखे नैन." खानखानाका कुछ वृत्तांत गोस्वामीतुलसीदासके.भी सम्बंधमें हुआ है (देखो तुलसीदास.)

अब्बुलफ़ज्ल (अकबरका प्रधान मंत्री.) स. ई. १५५१ में शेख मुबारिक नागोरीके घर आगरेमें पैदाहुआ. १५ वर्षके होनेतक सब विद्या भले प्रकार सीख ली थी. बुद्धि ऐसी तीव्र थी कि जो इबारत एकदफे देखी याद होगई. ये बड़ा तत्त्वविज्ञानी था एवं और विद्वानोंकी अपेक्षा इसकी सम्मति अधिक गौरव पाती थी. अकबरने इसको सर्वगुणसम्पन्न देख अपना वज़ीर बनाया ये अकबरके बेटोंको आगरेमें अधिक नहीं ठहरने देता था दूर २ सूबोंकी गवर्नरीपर भेजता रहता था इसीलिये वे सब इससे जलते थे. शाहिज़ादा सलीम जहांगीरनामेंमें लिखता है कि "अब्बुलफज्ल बादशाह सलामतके प्रेमको हमारी तरफसे गदला करता रहता था इसीलिये नरसिंहदेव उड़छा नरेशके हाथसे मैंने इसको मरवाडाला." अब्बुलफज्लका अधिकार राज्यकार्य्योंमें अधिक बढा हुआ था इसीलिये उसके बहुतसे शत्रु थे। स.ई. १६०२ में जब अब्बुलफज्ल दक्षिणकी लड़ाईपरसे केवल६ सिपाहियोंसहित लौटा आरहा था तब नरसिंहदेवने १० हजार सेनासहित उसे आ घेरा और वह बड़ी वीरतासे लड़कर कट मरा.अकबरने अपने प्यार मंत्रीके वध होनेकी खबर सुन बड़ा शोक किया साधारण मनुष्योंकी तरह घंटों बराबर हिचकी भर २ रोया और नरसिंहदेवको सपरिवार नष्ट करनेके लिये फौज भेजी. अबुलफ़ज्ल बड़ाभारी विद्वान था. अकबर नामा, अब्बुलफ़ज्ल इत्यादि फारसीके ग्रंथ उसके बनाये हैं. प्रसिद्ध विद्वान् फैजी उसका ज्येष्ठ भ्राता था. अबुलफ़ज्ल नास्तिक था.

अबुलफ़ैजफ़ैजी—(प्रसिद्ध विद्वान्•).शेख मुबारिक नागौरीका बेटा तथा अब्बुल फज्लका बड़ा भाई था। १४ वर्षकी अवस्थामें अर्बी फारसी तुर्की भले प्रकार पढकर संस्कृत पढने बनारस गया। जब पढकर पूर्ण विद्वान् हुआ तब ब्राह्मण गुरुने निज पुत्री इसको विवाहनी चाही, तब फ़ैजीने उससे सच्चा हाल कहा कि मैं मुसल्मान हूं। गुरु यह सुन शोकितहो फ़ैजीसे बोला "जिस ग्रंथका चाहो अनुवाद करना, पर वेदोंका अनुवाद न करना"। अकबरने गद्दी पर बैठनेसे १२ वर्ष पीछे फ़ैजीको अपने दर्बारमें उच्च पद दिया। पश्चात् फ़ैजीने

अबुलफज्ल अपने कनिष्ठ सहोदरको दर्बारमें पहुँचाया। फैज़ीकी समान तत्व तथा ब्रह्मविद्याका ज्ञाता कोई दूसरा दर्बारमें न था। उससे अकबर तथा दर्बारके और सर्व लोग प्रसन्न थे. अकबरने उसको राजकविके पदपर नियुक्त किया था. बेतुकतकुरान सुलैमान बिल्कीस, हफ्तकिश्वर हफ्तपैकर, मसनवी नलदमन इत्यादि फारसी ग्रंथ और बादशाह अकबरकी आज्ञानुसार रामायण, महाभारत, राजतरंगिणी, लीलावती, बीजगणित इत्यादि संस्कृत पुस्तकोंका फारसी अनुवाद फैजीने किया था और अथर्वण वेदमें अल्लोपनिषद बनाकर मिलाया था। फैजीकी तनख्वाहका अधिक भाग पुस्तकें खरीदने में खर्च होता था। स. ई. १५९९ में फैजीका देहांत हुआ। ४६०० पुस्तकें उसके कुतुबखानेमें निकलीं। भाषामें उसके बनाये दोहरे अनेक मिलते हैं। ऐसा तीव्र बुद्धि पुरुषथा कि जो पुस्तक एक दफे पढली याद होगई.

अभिनव गुप्त आचार्य (संस्कृत कवि) विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें कश्मीर में हुआ। ये संस्कृत का बड़ा विद्वान् था। निम्नस्थवृत्तांत इसीके बनाये एक ग्रंथसे विदित हुआ है:-अभिनव गुप्तजी वाराह-गुप्तके पौत्र और चुखल गुप्तके पुत्र थे, इनके कनिष्ठभ्राताका नाम मनोरथ था। निम्न-लिखित ग्रंथ इसके रचे हैं:-अनुत्तराष्टिका, क्रमस्तोत्र, घटकर्पर, कुलक वृत्ति, तंत्रवटधानिका, परमार्थसार, मालिनीविजयवार्तिक, भगवद्गीता तिलक-भरत नाट्य शास्त्रटीका.

अम्बरीष-सूर्य्यवंशी राजा, बड़ा धार्मिक, दृढ प्रतिज्ञ और प्रजापालक था। ऋषिदुर्वासाने उसकी परीक्षा की और दृढचित्त पाया-अंतसमय राजपाट छोड़ वनको चलागया और ईश्वरोपासनामें तत्पर हुआ.

अमरदास (सिक्खोंके तृतीय गुरु.) जिला अमृतसरमें तेजभानु खत्रीके घर सुलखनीजीके उदरसे उत्पन्न हुये- २० वर्षकी उम्रमें शादी की जिससे २ बेटे और १ बेटी हुई-बचपनसेही इनकी रुचि साधु सेवा और ईश्व-रोपासनामें लगी रहतीथी-स्. ई. १५४० में इन्होंने गुरु अङ्गदजीके शिष्य होकर १२ वर्षतक उनकी टहल निज देहके समान की- स. ई. १५५२ में गुरु अङ्गद-जीके परमधामको सिधारनेपर गुरुवाईकी गद्दीपर बैठे-खालसापंथकी इनके समयमें बड़ी उन्नति हुई-अनेक पहाड़ी राजाओंको इन्होंने अपने मतका अनुगामी बनाया-ये खड़े होकर रातदिन ईश्वरोपासना करतेथे और बड़े सत्य-वादी तथा जितेन्द्रियथे-भूखे मुहताजोंको सदा व्रत जारी रखतेथे और पहुँचे हुये साधू थे-बादशाह अकबरको इनका निश्चय था- १०० वर्षकी अवस्थामें इनका देहांत हुआ और इनके जामातृ रामदासजी इनकी गद्दीके उत्तराधिकारी हुये.

ग्राम गोयंदवालमुल्क पंजाबमें इनकी बनवाई हुई एक बावड़ी है और इसी ग्राम में इनके वंशके बहुत लोग रहते हैं.

स. ई. १४७८ में जन्में

स. ई. १५७९ में सिधारे.

अमरसिंह (कोषकार). ये बौद्ध थे-बुद्ध गयाके मंदिरके एक शिलालेखसे प्रतीत होता है कि उसको अमरसिंहजीने विक्रमी संवत्की छठीं शताब्दीमें बनवाया था-ये विक्रमादित्य हर्ष महाराजा उज्जैनके दर्बारके नवरत्न नामक प्रसिद्ध पंडितोंमेंसे थे-इन्हींको अमरसिंह सेवड़ा कहते हैं-इनके बनाये बहुतसे ग्रंथ थे जिनमें से अमरकोषके सिवाय और सबको ब्राह्मणोंने नष्ट कर दिया.

अमीरखां-(रियासतटोंकका संस्थापक)-टोंकके नव्वाब इसीके वंशमें हैं ये पहिले जसवंतराव हुलकरके यहां सेनापति था. जसवंतरावके सिड़ी होजानेपर ये अपनी मातहित सेनासहित पिंढारियोंसे मिलगया और सब पिंढारी दलका मुख्य नायक बनगया. इस भयानक दलकी मददसे इसने अनेक राजाओंको आपसमें लड़ाकर ढीलाकर दिया कभी किसी राजासे मिलजाता और कभी किसीसे. अंतमें बृटिशगवर्नमेंटने वह सब मुल्क जो इसको रियासत इन्दौरकी तरफसे मिला हुआ था इसको देकर अपना आधिपत्य स्वीकार कराया और इसके पास जितना तोपखाना था सब लेलिया और इसके भयानक लुटेरे दलसे हथियार रखवा लिये. इस लुटेरे दलने राजपुताना तथा मालवामें दो वर्षतक बहुतसे निर्दईपनेके ऐसे काम किये थे जिनके सुननेसे शरीरके रूंगटे खड़े होजाते हैं। स. ई. १८३४ में मरा.

अर्जुन(सिक्खोंके पंचमगुरु.) गुरुरामदासजीके कनिष्ठ पुत्र थे. ग्रामगोयंदवालमुल्क पंजाबमें पैदा हुये. इनके दो विवाह हुये. दूसरे विवाहसे गुरुहरगोविंद पैदा हुये. अर्जुनगुरुके समयमें गुरुकी भेंट पूजाकी प्रणाली चली. इन्होंने अमृतसरके निकट " संतोषसर "-नामक तालाब खुदवाया था. शहर अमृतसरकी आबादी इनके समयमें बहुत बढगई थी। कुष्ठी, अंधे इत्यादि अनेक असाध्य रोगियोंको इन्होंने आराम किया था. सिक्खोंकी धर्म पुस्तक " ग्रंथसाहिब " को पहिले पहिल इन्होंने संग्रह किया था. ये बड़े चतुर और दृढचित्त पुरुष थे. खालसा पंथकी जड इनके समयमें खुब जमगई थी. चंडूलाल दीवानने इनको मरवाडाला. इनकी समाधि लाहौरमें है जिसके खर्चके लिये ९०० रु. सालकी माफी है.

स. ई. १५६३ में जन्में.

स. ई. १६०६ में मरे.

अर्जुन—(पांडव)—चंद्रवंशी महाराज पांडुके तृतीय पुत्र रानी कुंतीके उदरसे थे. धनुर्विद्या तथा कलाकौशलादिमें अद्वितीय थे. पंजाबके राजा द्रुपदकी कन्या द्रौपदीसे इनका विवाह स्वयंवर विधिसे हुआ था. श्रीकृष्णजीकी बहिन सुभद्रा तथा मणिपुरकी राजकुमारी चित्रांग्दासेभी इनकी शादी हुई थी. महाभारतके युद्धमें अर्जुनने बड़े २ वीरता और साहसके काम किये. भीष्म पितामह तथा करण इन्हींके हाथसे मारेगये. इस लड़ाईमें श्रीकृष्ण इनके सारथीबने थे और भगवद्गीताका उपदेश इनको किया था. ये ऐसे बाणधारी थे कि एकही दफेम ५ । ५ सौ बाण छोड़कर हाथी, घोड़ा और शूरवीरोंकी सेनाको परास्त करदेते थे. राज्यासिंहानपर बैठकर जब महाराज युधिष्ठिरने अश्वमेध यज्ञ किया तब ये यज्ञके घोड़ेकी रक्षाके लिये सिंध, मणीपुर, गुजरात, दक्षिण इत्यादि देशोंमें गये और जहां कहीं किसी राजाने सामना किया उसको परास्त किया. अंतमें जब यादवोंमें आपसमें झगड़ा फैला तब श्रीकृष्णजीने इनको द्वारिका बुलाया और वहां इन्होंने श्रीकृष्णके परमधाम सिधारनेपर उनकी अंत्येष्टिक्रिया की. पश्चात् हस्तिनापुर आये. महाराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजीके अंतर्धान होनेकी खबर सुन इनके पौत्र परीक्षितको राजपाट सौंपदिया और पांचों पांडवोंने द्रौपदीसहित हिमालयपर जाकर देह त्याग दी.

अरस्तू कीम (Aristotle). हकीम निकोमेकसके पुत्र स्टेगिरा (यूनान) में पैदा हुये. माता पिता इनको बालक छोड मरगयेथे. किसी अन्य धनाढ्य पुरुषने इनका पालन पोषण किया और पढाया था. १७ वर्षकी अवस्थामें स्टेगिरासे ऐथेंस आए और अफलातूनसे विशेष विद्या पढी. अफलातूनके मरनेपर किसी राजकुमारीसे इनका विवाह होगया. स. ई. से ३४२ वर्ष पूर्व बादशाह फिलिपने निज पुत्र अलेग्जेंडरका शिक्षक इनको नियत किया और इनके कामसे बहुत प्रसन्न रहा. अलेग्जेंडरने गद्दीपर बैठकर जब देश विदेश चढाई की तब अरस्तू उसके साथ नहीं गये पर ऐथेंसमें रहकर छात्रोंको पढाते रहे और पुस्तकें रचते रहे. इन्होंने काव्य, राजनीति चिकित्सा, गणित, न्याय, जीव तथा विज्ञान विटपकी १२० पुस्तकें यूनानी भाषामें बनाई थीं जिनमेंसे अनेक अबभी मिलती हैं. अंतमें अलेग्जेंडर (सिकंदर) के मरनेके बाद सुकरातकी तरह नास्तिक होनेका अभिशाप इनको भी लगाया गया निदान ऐथेंस छोड इनको दूसरी जगह भाग जाना पड़ा. इनकी समान चतुर पुरुष आजतक मुल्क फरंगमें दूसरा नहीं हुआ.

स. ई. से ३२२ वर्ष पूर्व जन्में
स. ई. से ३८४ वर्ष पूर्व मरे.

अरिस्टोटल—देखोअरस्तू.

अलवरुनी—जिस्को अबूरैहाँ भी कहते हैं स. ई. ९७३ में खीवामें पैदा हुआ. जब महिमूद ग़ज़नवीने स. ई. १०१७ में खीवा विजय किया तो वह अलवरुनीकोभी और लोगोंके साथ कैद करके अपनी राजधानी ग़ज़नीमें लेगया. ग़ज़नी पहुँच अलवरुनीने अनेक भारतवासियोंको जिनको महिमूद यहांसे पकड़कर लेगया था देखा. हिंदोस्तानके वृत्तांतमें अलवरुनीने फ़ारसीमें एक ग्रंथ रचा है जिससे इस देशकी प्राचीन गौरवता स्पष्ट मालूम होती है इस किताबमें भारतवर्षकी उससमयकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक व्यवस्था अच्छीतरह दर्शाई गई है और इस देशकी विद्या, धर्म-वर्णव्यवस्था, खानपान, रहिनसहिन, खेतीवाड़ी, वणिज व्यापार, राजनीति, फलफूल, इत्यादिकाभी सविस्तर वृत्तांत लिखा गया है, वराहमिहिरज्योतिषीकी भी प्रशंसा की है और लिखाहै कि, भारतवासियोंने और देशोंकी अपेक्षा गणित शास्त्रमें अधिक उन्नति की थी. यहभी लिखा है कि भारतवासी विद्वान् केवल सर्व शक्तिमान् परमेश्वरको मानतेथे जैसा कि वेदों और उपनिषदोंमें लिखा है और कुपढलोग अनेक मूर्तियोंकी पूजा करते थे. अलवरुनीने बहुतसे और ग्रंथ भी बनाये थे. ४० वर्ष इसने हिंदोस्थान इत्यादि अनेक देशोंमें भ्रमण करनेमें बिताये. ये बड़ा ज्योतिषी, इतिहासका ज्ञाता और नैयायिक पंडित था भविष्यवाणी इसकी सही होती थी, मूक प्रश्न खूब बताता था—स. ई. १०५९ में मरा.

अलाउद्दीन खि़लजी (दिल्लीका बादशाह). जब इसका चचा जलालुद्दीन खि़लजी हिंदोस्तानमें बादशाही करता था तब यह प्रयाग प्रदेशान्तर्गत कड़ाका हाकिम था और उसी समय इसने विन्ध्याचलपर्वतके पार जाकर शहर भिलसाको लूटाथा। इसके बाद बुँदेलखण्ड तथा मालवाके हिंदू राजाओंको परास्त करके दक्षिण देशान्तर्गत महाराष्ट्र राज्यकी राजधानी देवगिरिपर चढाई की और बहुतसा माल अस्बाब लूटकर प्रयागको आया और अपने चचाको मारकर दिल्लीकी गद्दीपर बैठा और स. ई. १२९५ से १३१५ तक राज्य किया। स.ई. १२९७ में गुजरात, १३०० में रणथम्भोर और १३०३ में चितौड़ विजय किया, अनेक दफे मुँग़लोंको परास्त किया और अपने भतीजोंको जिन्होंने इसके समयमें उपद्रव किया आँखें निकलवाकर मरवाडाला। फिर स. ई. १३०३ से १३०६ तक दक्षिण देशपर अपना अधिकार बढानेमें लगारहा। चितौड़ विजय करनेके अवसरपर वहांकी महारानी पद्मिनी १३००० क्षत्रानियों सहित प्रतिष्ठा बचानेके लिये अग्निमें जलकर मरगई और क्षत्री लोग कटते काटते ऐरावली पहाड़की ओर भागगये। दिल्लीके खि़लजी वंशोत्पन्न बाद-

शाहोंमें ये सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ और मुसल्मान बादशाहोंमें प्रथम इसी-ने दक्षिणदेश विजय किया-स. ई. १३१५ में इसके सेनापति मलिककाफूरने विष खिलाकर इसे मारडाला.

अलावर्दीखाँ (बङ्गालका अन्तिम नव्वाब)-स. ई. १७४० में गद्दीपर बैठा. मुर्शिदाबाद इसकी राजधानी थी-अत्यंत क्रोधीथा पर राजकाज सावधानीसे करताथा-इसके समयमें मरहठा सवारोंने बङ्गालको लूटना आरंभ किया यह देख नव्वाबने स. ई. १७४२ में कलकत्तेके गिर्द एक खाई खुदवाई जो आजतक "मरहठोंकी खाई" के नामसे प्रसिद्ध है-स. ई. १७५६ में इसके मरनेपर इसका पौत्र सिराजुद्दौला नव्वाब हुआ जो एकही वर्ष पीछे पलासीकी लड़ाईमें अपना मुल्क अङ्गरेजोंको दे बैठा.

अलेग्जेंडर दी ग्रेट महाराजा यूनान (Alexander the great Emperor of greece). बादशाह फिलिपके घर स. ई. से ३५६ वर्ष पूर्व पैदा हुआ। इसको अपनी मातासे बड़ा प्रेमथा, यहांतक कि एकदफे माताकी ओरहो पितासे अप्रसन्न होगया था।. हकीम अरस्तूने इसको अनेक प्रकारकी विद्या पढाई थी, कवि होमरकी रची "इलियड" नामक पुस्तक बहुधा पढा करता था। बाल्यावस्थासेही बड़ा पराक्रमी. साहसी, शूरवीर और होनहार मालूम देता था, जब इसका बाप कोई देश विजय करता था तब यह कहता था कि यदि पिता सब देश विजयकर लेंगे तो मैं क्या करूंगा। २० वर्षकी उम्रमें पिताके देहांत होनेपर राज्यसिंहासनपर बैठा और निज पिताके शत्रुओंको परास्त करके थोड़ेही दिनोंमें सब यूनानदेशपर अधिकार जमा लिया। २ वर्ष पीछे पिताके पुराने शत्रु दाराशाह यूनानपर ३५ हजार सेना लेकर चढगया, दाराने ५ लाख फौजसे सामना किया, ३ दफे लड़ाई हुई जिसमें दाराही हारा और तीसरी दफे अपनेही साथियोंके हाथसे मारागया. सिकंदरने दाराके मृतक शरीरपर जाकर शोक किया, मारनेवाले नमकहरामोंको सजादी, मुल्क और मालपर अधिकार कर लिया, उसकी बेटी रौशनकसे विवाहकर लिया, उसकी बेगमोंके रुतबे बहाल रक्खे, तमाम मुल्कको अपने न्याय और सुप्रबंधसे खुशकिया और प्रजाके धर्ममें किसी प्रकारकी बाधा न की। पश्चात् मुल्कशामके दमिश्क आदि अनेक शहर विजय किये. फिर मिश्रदेश जीतकर "अलेग्जेंडरिया" नामक शहर बसाया और तुर्किस्तानके सूबे बुखारा तथा रूम और अरब इत्यादि देशोंको विजय किया। स. ई. से ३२७ वर्ष पहिले हिंदोस्तानपर चढाई की और पंजाबके राजा पोरसको परास्त किया पर

उसकी चातुरी और वीरतासे प्रसन्न होकर उसका मुल्क उसीको देदिया इसकेबाद अलेग्जेंडर ईरानकी तरफ लौटा, रास्तेमें अनेक कठिनाई झेलीं, फौजमें बीमारी फैल गई, केवल चौथियाई फौज जीती ईरान पहुँची। अंतमें सिकंदरने शहिर बाबुलकी तरफ धावा किया पर रास्तेहीमें ३२ वर्षकी उम्रमें ज्वरसे पीड़ित हो परलोकगामी हुआ. मृतक शरीर सोनेके तावूतमें बंदकरके यूनान भेजागया। इटेली, मिश्र, साइबीरिया, आइबीरिया, कार्थेज, सिदालिया इत्यादिके राजदूत साथ थे। अभागिनी माताके शोकका जिससे सिकंदरको इतना प्रेम था कुछ हाल न पूछो। सिकंदरने थोड़ीसी उम्रमें घरसे निकलकर इतने देश जीते और जगत् विजयी कहलाया, जिसने सीस झुकाया उसे निहालकर दिया, जिसने सीस उठाया उसे खाकमें मिला दिया, जिस देशको विजय किया वहांके धर्मकी प्रतिष्ठा की, प्रजाको सुख चैन दिया और विद्वानोंका सत्कार किया। कहि मराथा कि "मेरे हाथ तावूतसे बाहिर निकाल देना ताकि लोग जानें कि नकुछ लाया था नकुछ लेगया"। उसके सेनापतियों और रिश्तेदारोंने सब राज्य आपसमें बांटलिया क्यूंकि अपुत्र मराथा. सिकंदर आज़म तथा शकेंद्र इसीको कहते हैं.

अश्वत्थामा (द्रोणाचार्य्यका पुत्र) कौरवोंकी फौजका सेनापति था. इसने पंजाबके राजा द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नको महाभारतकी लड़ाईमें मारडाला क्योंकि धृष्टद्युम्नने इसके पिताको वध किया था. पश्चात् इसने द्रुपदके दूसरे पुत्र शिखण्डीको मारा और द्रौपदीके पांचों पुत्रोंका भी सिर काटा. जब पांडवोंको अपने पुत्रोंके मारेजानेकी खबर मिली तब उन्होंने अश्वत्थामासे वह अमोल मणि छीनली जो वह सदैव अपने पास रखता था. पश्चात् इस मणिको युधिष्ठिरने अपने ताजमें जड़वालिया. अश्वत्थामा उन १० मनुष्योंमेंसे था जो महाभारतकी लड़ाईके बाद जीते बचे थे. अनेकोंकी राय है कि यही अमोलमणि अब "कोहनूरहीरा" के नामसे प्रसिद्ध है और आज दिन महारानी अलेग्जेंड्राके मुकुटमें लगी है.

अश्वलायन (शौनकऋषिके शिष्य)–ऋग्वेदके श्रौत सूत्र १२ अध्यायमें इन्होंने रचे थे– श्रौत सूत्रोंमें अनेक प्रकारके यज्ञ करानेकी रीतियें लिखी हैं। ऋग्वेदके गृह्यसूत्रभी इन्होंने बनाए थे और इन्होंने तथा इनके गुरुने मिलकर ऐतरेय आरण्यकके २ अन्तिम अध्याय भी लिखे थे.

अस्फंदियार (पहिलवान). ये ईरानकेबादशाह गुस्तास्पका बेटा तथा कैसरे रूमका दौहित्र बड़ा पहिलवान था. इसने रुस्तम पहिलवानको मल्ल युद्धमें पछाड़ा था परंतु रुस्तमने इसे चालाकीसे परास्त करके मारडाला. अंतसमय इसने रुस्तमसे अपने पुत्र बहिमनको शिक्षा देनेकी प्रार्थनाकी एवं रुस्तमने बहिमनको सैनिकविद्या भलेप्रकार सिखाई. गुस्तास्पके मरनेके बाद बहिमन

ईरानकी गद्दीपर बैठा और अपने बापका बदला रुस्तमके बेटे फरामुर्जको सूली देकर लिया. साधारण मतसे अस्फंदियार स. ई. से ३ हजार वर्ष पहिले हुआ पर फिरङ्गी विद्वान केवल ५२५ वर्ष पूर्व सन ईस्वी इसका होना सिद्ध करते हैं. इसने जरदश्तका मत सर्वत्र ईरानियोंकी सलतनतमें फैलाया. ईरानियोंकी सलतनत काबुलसे यूनानतक थी और उसमें अरब तथा तुर्किस्तान भी शामिल थे.

अशोक (हिंदोस्थानका बौद्ध महाराजा) पटनामें राज्यसिंहासनपर बैठा. ये पहिले वैदिकमतको मानता था पश्चात् बौद्धमत ग्रहण करलिया–स. ई. से २४४ वर्ष पूर्व इसने, पटनामें तृतीय बौद्ध सभाकरके धर्म संबंधी नियम बनाये और हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी पर्य्यंत सब देशोंमें तथा शाम, मिश्र, मैसेडन इत्यादि प्रदेशोंमें उपदेशक भेजे. प्रत्येक नगरमें स्तूप (बौद्धमंदिर) औषधालय, अनाथालय, धर्मशाला, आतिथ्यालय, पाठशाला इत्यादि जारीकी, और ४८००० पत्थरके खम्भोंपर तथा पहाडोंकी चटानों पर बौद्ध धर्मके १४ उपदेश हिन्दूस्थान के सब प्रान्तोंमें अङ्कित कराये. अपने भाई महेंद्रादित्यको स. ई. से २४२ वर्ष पूर्व लंकामें भेजकर बौद्धधर्मका प्रचार कराया. अशोककी मित्रता एन्टियोकस, तालमी इत्यादि यूनानके ५ राजाओंसे थी. इसके समयमें बौद्धमतकी अत्यंत उन्नति हुई इसके पिता बुन्दसारके १६ रानियोंसे १०१ पुत्र थे अशोकने गद्दीपर बैठकर अपने सहोदर निशी नामकको छोड़कर सब भाईयोंको मरवाडाला–३६वर्ष राज्यकरके परमधामको सिधारा ये हिन्दुस्थानका चक्रवर्त्ती राजा था.

अहिमदशाह अब्दाली (काबुल कंधारकी सलतनतका मूल रोपण कर्ता). अफ़गानोंकी क़ौम अब्दाली या दुर्रानीका सर्दार था–पहिले कुछदिनतक नादिरशाहका कोषाध्यक्ष रहा और दिल्लीकी लूटके समय उसके साथ था– नादिरशाहके मरनेपर इसने काबुल कंधारके सूबोंको निजअधिकारमें करके बादशाहका खिताब धारण किया पश्चात छःदफे हिंदुस्तानपर चढाईकी–पहिले हमलेमें इसको परास्त होकर लौटना पडा. एकही वर्ष बाद स. ई. १७४८ में दूसरी दफे चढाईकी और दिल्लीके बादशाह अहिमदशाह मुग़लको परास्त करके पंजाब छीन लिया–स. ई. १७५७ में दिल्लीके बादशाह आलमगीर द्वितीयने जब पंजाबपर हाथ फेंकने शुरू किये तब इसने फिर चढाईकी, दिल्लीको लूटा और पंजाबको पुनः विजयकरके कंधार को लौटगया– स. ई. १७६१ में जब रघुनाथराव पेशवाने पंजाबपर चढाईकी तब अब्दालीको फिर हिंदुस्तान आना पड़ा, पानीपतके मैदानमें मरहठोंका पराजय हुआ–अंतमें सिक्खोंसे कईदफे लड़ाई हुई जिसमें सदैव अब्दालीही जीता– इसका राज्य पूर्वमें-पंजाबसे पश्चिममें हिराततक और दक्षिणमें अरबकी खाड़ीसे उत्तरमें कश्मीरतक था– स. ई. १७२४ में उत्पन्न हुआ और १७७३ में मरा.

अहिल्याबाई (इन्दौरकी प्रसिद्ध महारानी). इन्दौर राज्यके मूल रोपण कर्ता मल्हाररावहुल्करकी पुत्रवधूथी. २० वर्षकी अवस्थामें विधवा होगई थी और सती होना चाहती थी पर ससुर इत्यादि वृद्धजनोंके बहुत समझानेपर रुकी- इसके १ बेटा और १ बेटी थी- स. ई. १७६६ में मल्हाररावके मरनेपर इसका पुत्र मालीराव गद्दीपर बैठा पर ९ ही महीने बाद मरगया- राज्यका उत्तराधिकारी न होनेके कारण अहिल्याको स्वयंराजकाज सम्हालना पड़ा राजपुरोहितने दत्तक पुत्र लेनेको बहुत समझाया पर महारानीने रोकर यह उत्तर दिया कि "एक राजाकी मैं रानी थी और दूसरेकी माता यदि ईश्वरको मल्हाररावका वंश चलानाही मंजूर होता तो मेरेपति और पुत्र क्यों नष्ट होजाते." इसपर स्वार्थी पुरोहितने आसपासके राजाओंको उकसाया पर किसीका दाव महारानीसे लड़नेका न पड़ा-पश्चात् महारानीने तुकोजीराव हुल्कर अपने एक नातेदारको सेनापति नियत करके अनेक काम सौंपे जो स्त्री होनेके कारण खुद नहीं करसकती थी-भरे दर्बारमें बैठकर प्रजाका न्याय करती थी, भूखोंको खाना और कपड़ा बँटवाती थी. चिड़ियोंके लिये खेत छुड़वादेती थी, नदियोंकी मछलियोंको चुगानेके लिये आदमी नौकरथे, चिकित्सिक लोग नियतथे जो घर २ गांव २ दौरा करते थे, प्रजागण उसको माताके समान समझतेथे, तुकोजी सेनापति उससे मातुःश्री कहकर बोलतेथे और ईश्वरको चीन्ह कर राजकाज करतेथे- विधवा होकर उसने रंगीन वस्त्र कभी नहीं पहिना न सिवाय एक मालाके कोई आभूषण धारण किया-गर्वका लेश मात्रभी उसमें न था और खुशामद पसंद न थी-कुछ अधिक सुंदरी न होने परभी चेहरा धर्मके तेजसे दीप्तथा- इन्दौरका नगर उसीका बसाया हुआ है-काशीमें विश्वेश्वर नाथका मंदिर उसने बनवायाथा. काशी, प्रयागपुरी, द्वारिका, सेतबंदरामेश्वर, केदारनाथ इत्यादि तीर्थ स्थलों में धर्मशाला बनवाईथीं और सदाव्रत बैठाये थे-कूप, तड़ाग, पुल, घाट इत्यादि भी अनेक बनवाये थे स. ई. १७९५ में ३० वर्ष धर्म राज्य करके ६० वर्षकी उम्रमें परलोकको सिधारी-भारत में इस सहस्राब्दीके बीच ऐसी सुप्रबंधकर्ता, धार्मिक और उदार हृदयस्त्री दूसरी नहीं हुई-उसका समय ईश्वराराधन राज्यप्रबंध और प्रजापालनके कामोंमें विभागित था-मैल्कम साहिब स्वरचित इतिहासमें अहिल्याके विषयमें लिखते हैं कि " निस्संदेह यह परम आश्चर्य है कि स्त्री होकर ऐसी गंभीर और सांसारिक विषय भोगोंसे ऐसी विरक्तहो अपने धर्म और मतकी ऐसी पक्कीहो और फिर अन्य मतवालेको तुच्छ न जानतीहो और किसीको अपने २ नीतिधर्मानुसार चलनेकी कुछ रोकटोक न करती हो, जिसके मत संबंधी विश्वास ऐसे अप्रमाणिक और तुच्छहों पर उसको जगत उपकार और दूसरों को संतोष दिलानेके अतिरिक्त और कुछ चिन्ता नहो, एक स्वतंत्र अध्यक्षहो और फिर उसमें ऐसी विनय और दीनताहो, ईश्वरका भय करके कामकरतीहो और दूसरोंके दोषोंको छिपाती हो इत्यादि."

आदम (Adam) महात्मा ईसासे ४ हजार वर्ष पूर्व हुये-इनसे और हव्वा (Eve) नाम स्त्रीसे ईसाई और मुसलमानी मतोंके अनुसार सृष्टि उत्पन्न हुई थी जो नूहके तूफान में ईसासे १६५६ वर्ष पूर्व डूबकर नष्ट होगई.

आनन्दघन (भाषाकवि.) जातिके कायस्थ मुहम्मदशाह बादशाह दिल्लीके दर्बारमें मुंशीथे-गानविद्या और कविता दोनों में अति कुशल थे-सच्चे प्रेमी थे और कविता इनकी सूर्य्यके समान भासमान है-अंत समय घरबार छोड श्री वृंदावन वास करते थे-कृष्णगढके राजा जसवंतसिंह उपनाम नागरीदासजीसे इनका बड़ा प्रेमथा-फारसी, अर्बी, संस्कृत इत्यादिके पूर्ण ज्ञाता थे और दिल्लीके रहने वाले थे-इनकी फुटकर काव्य बहुत मिलती है-नादिरशाहने जब स. ई. १७५७ में मथुरा लूटी तब उसी मारकेमें यह भी मारेगये.

आनन्दगिरि (प्रसिद्धवेदांती पंडित). सन ईस्वीकी दशवीं शताब्दी में हुये-स्वामी शंकराचार्य इनके गुरुथे-शंकर दिग्विजय नाम ग्रंथ तथा भगवद्गीतापर आनंदगिरि नाम तिलक इन्हीं का रचा हुआहै.

आनन्दवर्धनाचार्य (संस्कृत कवि). इन्होंने दो भागों में 'ध्वन्यालोक' ग्रंथ रचा है-कारिकारूप भागकानाम "ध्वनि" है और वृत्तिरूप भागका नाम "आलोक" है-राजतरङ्गिणीसे विदित होता है कि ये विक्रमकी १० वीं शताब्दीमें कश्मीरके राजा अवन्ति वर्म्माके दर्बारमें थे- निम्नस्थ ग्रंथ इन्हींके रचेहैं:- देवी शतक, विषम बाणलीला, प्राकृतअर्जुनचरित्र, और विनिश्चय टीका- राजशेखर कविने सूक्तमुक्तावलीके इस श्लोकमें आनन्दवर्धनाचार्यकी प्रशंसाकी है:-

श्लो०-ध्वनिनातिगभीरेण काव्यतत्त्वनिवेशिना ।
आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः ॥

आपस्तंब ऋषि-इन्होंने प्राचीन कालमें होकर कृष्ण यजुर्वेदके कल्पसूत्र जिनमें श्रौतसूत्र, धर्मसूत्र और गृह्यसूत्र शामिल है ३० अध्यायमें रचे- ३० वें अध्यायमें शुल्व सूत्र हैं जिनमें रेखागणितका वर्णन हुआ है-डॉक्टरथीबो (Dr. Thibaut) ने शुल्व सूत्रका अनुवाद अङ्गरेजीमें करके प्रकाश किया है कि सबसे प्रथम रेखागणितके मुख्य नियम इसी देशमें ऋषियोंने दर्याफ्त किये थे-फीसागोरस यूनानी हकीमने "शुल्वसूत्र" भारत वर्ष में आकर पढे और उनका प्रचार निज देशमें जाकर किया-पश्चात् युक्लिडने इन्हीं शुल्वसूत्रोंके आशयपर अपने नामकी पुस्तक रची-डॉक्टर बुल्हर साहिब (Dr. Bulher) के मतानुसार ये ऋषि स. ई. से प्रायः ८०० वर्ष पूर्व दक्षिण देशमें उस जगहके समीप रहतेथे जिसको अब अमरावती कहते हैं.

आर्करायट (Arkwright). स. ई. १७७४ में इङ्गलैंडमें जन्में। पहिले हजामत बनानेका पेशा करते थे पश्चात कलोंकी देखभालमें इन्होंने चित्त लगाया और अंतमें कपड़ा बुनेकी कल तैय्यारकी- वास्तवमें कल तौ एक औरही आदमीने तैय्यार की थी और उसने इसविचारसे नहीं चलाई थी कि, लोगोंके उद्यमको हानि होगी- आर्करायटने उसी कलको सुधारकर पूर्ण रीतिसे बनाया और लोगोंको उससे कपड़ा बुनकर दिखाया-

आर्यभट- (ज्योतिषी) बीज गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके अनेक सूक्ष्म विषयोंका अनुभव पहिले पहिले इन्हींको हुआ- इन्होंने गणित तथा ज्योतिष शास्त्रमें ऐसी २ बातें दरियाफ्त कीं जो अन्य देशवासियोंको स. ई. की १६ वीं शताब्दीसे पूर्व नहीं मालूम हुई. ये राजा युधिष्टिरके सम्वतसे ज्योतिष लगा तेथे निम्नस्थ वृत्तांत इन्हींके एक ग्रंथसे मिला है:- आर्य्यभट वि. सं. ५३३ में पैदा हुए और कुसुमपुर (पटना) में रहितेथे- नीचे लिखे ग्रंथ इनके बनाये हैं:- आर्य्यभटीय तंत्र (आर्य्यसिद्धांत) ४ अध्यायमें, बीज गणित, आर्य्य देश रीति सूत्र, आर्य्य अष्टशत, सूर्य्य सिद्धांतका टीका-

आलमगीर-देखो औरंगज़ेब.

आल्हा (प्रसिद्ध सावन्त). महोबा (बुंदेलखण्ड) वासी जगनायक कविने आल्हखण्डरचकर आल्हा और उसके भाई ऊदन का यशगाया है. ये बड़े योद्धा व्यूह रचनामें दक्षथे. इनका बाप यशराज महोबेके राजा परमाल (परमारादिदेव) की फौजका सावंत था- पिताका देहांत होजानेके कारण आल्हा ऊदल दोनों भाइयोंका पालनपोषण और शिक्षा राजा परमालके दर्बारमें हुई थी- प्रायः ६५ लड़ाईयोंमें इन्होंने परमालकी तरफसे लड़कर शत्रुओंको परास्त किया था-५२ गढ़ोंके राजे 'आल्हा ऊदलसे इस प्रकार थर्रा तेथे जैसे नेपोलियन बोना पार्टसे यूरुपीय राजे- इन दोनों भाइयोंने महाराज पृथ्वीराजको परास्तकरके उनकी बेटी बेलाका विवाह अपने स्वामी राजा परमालके पुत्र ब्रह्मा से कराया. अंतमें बेलाके गौनेकी बिदापर पृथ्वीराज और परमालमें घोर युद्ध हुआ जिसमें परमालका सर्वनाश होगया. केवल आल्हा जीता बचा पर विरक्त होकर सुंदरवनको चला गया.

स. ई. के १२ वें शतक में हुये-

आस्फुद्दौला (नवाब वजीर अवध)

निज पिता शुजा उद्दौलाके बाद स. ई. १७७५ में अवधकी गद्दी पर बैठे.

फैजाबादके बजाय लखनऊमें अपनी राजधानी कायम की-लखनऊमें इनका बनवाया इमामवाडा अबतक मौजूद है और देखने लायक है-यह इमामवाडा उसवक्त बनवाया गया था जब लखनऊमें बड़ा अकाल पड़ा था- ये बडे दयालू और दानी थे. लखनऊके दुकानदार अबतक इनका नाम लेकर दुकान खोलते हैं.सूबे अवधमें प्रसिद्ध है कि "जिसको न दे मौला उसको दे आस्फुद्दौला." इन्होंने गुणीजनोंका सत्कार किया. एक दीवान उर्दू तथा फार्सीमें बनाया-बहुत रूपया खर्चकर्के एक कुतुबखाना संग्रह किया। स. ई. १७९७ में मरे और अपने इमामवाड़ेमें दफन हुये. इनके कोई औलाद न थी. एवं ब्रिटिश गवर्नमेंटने इनके भाई सआदत अलीखांको लखनऊका नवाब बनाया-

औरङ्गजेब (मुगलबादशाह दिल्ली). निज पितर शाहजहांको कैद करके और अपने भाइयोंको वध करके स. ई. १६५९ में दिल्लीकी गद्दीपर बैठा. ये अपने बापको जो आगरेके किलेमें कैद था केवल एकही प्रकारका खाना और गरम पानी पीनेके लिये देता था. ये बडा कृतघ्नी था और सबर्की तरफसे शक रखता था. इसने हिंदुओंपर "जजिया" नामक कर लगाया. और मथुरा, अयोध्या, बनारस इत्यादिमें अनेक मंदिर तुड़वाये. वास्तवमें हिंदोस्तानसे देशका जहां अनेक जातियोंके लोग रहिते हैं, ये बादशाह होनेके योग्य न था इसके सेनापति २५ वर्षतक दक्षिणदेश जीतनेमें लगेरहे, पर कुछ करनेमे समर्थ न हुये, मरहटोंने इसे बड़ी तकलीफ दे रक्खीथी-शिवाजी मरहटावीरके मरनेपर औरंगज़ेबको ६५ वर्षकी उम्रमें दक्षिणविजय करनेके लिये खुद जानेका साहस हुआ और २५ वर्ष लड़कर उसने दक्षिणदेशवर्ती गोलकुंडा,बीजापुर,विदर, बरार और अहमदनगरकी रियासतोंको परास्त करके अपनी सलतनतमें मिलाया यदि बाप भाईयोंको मार डालने, सबकी तरफसे शंका रखने कृतघ्नी होने हिंदुओंसे द्वेष रखने और उनके मंदिर तुड़वानेका घोर कलङ्क इसके माथे न होता तो इसका चाल चलन दोषरहित समझा जाता, क्योंकि टोपियोंके सीने और किताबोंके लिखनेसे जो आमदनी होती थी वही इसके निजखर्चमें आती थी. इसका दूसरा नाम आलमगीर भी प्रसिद्ध है.

स. इ. १६१७ में. पैदा हुआ
स. इ. १७०७ में मरा.

औवटपंडित (यजुर्वेदभाष्यकार) कश्मीरदेशवासी जैय्यट उपाध्याय के पुत्र थे. इनके बडे भाई मम्मटने इनको विद्या पढाईथी-व्याकरण भाष्यकार कैय्यटभी इनके सहोदर थे. विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके अंतमें इनका जन्म हुआ।

इबराहीमअदहम-इनके बाप मसऊद गज़नीके अष्टम खलीफा (राजा) थे. बलख इनकी राजधानी थी. पिताके बाद कुछ दिनतक इनके भाई फर्रुखजाद

ने राज्य किया. बादको ये गद्दीपर बैठे. ये बडे न्यायकारी और ईश्वरभक्त थे. उन्होंने हिन्दोस्तानकी पश्चिमी सीमापर अनेकवार चढाई करके विजय प्राप्त की इसीकारण इनका नाम अदहम अर्थात् विजयीपडा. ४२ वर्ष राज्य किया और अनेक चिकित्सालय, और मसजिदें बनवाई । कई शहर बसाये. गुणी जनोंका सत्कार किया. कहितेहैं कि, स्वप्नमें इन्होंने एकआदमी छत्तपर चढेहुये कुछ ढूंढते देखा–पूछनेपर उसने कहा कि मेरा ऊंट खोगयाहै । इन्होंने कहा अरे मूर्ख! छत्तपर ऊंट कहां–इसके उत्तरमें उसने कहा "अरे मूर्ख! राज्य करते परमेश्वर कहां" उसीदिनसे इबराहीम राजपाट छोड फकीर होगये–प्रायः ५ वर्ष फकीर रहिकर स. ई. ८८०में जब इन की ११० वर्षकी उम्र थी परमधामको सिधारे.

इबराहीम लोदी (दिल्लीकाबादशाह) निज पिता सिकंदरलोदीके बाद स. ई. १५१५ में राज्य सिंहासनपर बैठा. इसके चित्तमें सबकी तरफसे शक रहताथा. सर्दार और सूबेदार इससे फिरे हुये थेऔर इसके वर्बाद करनेकी फिक्रमें थे. पहिले तो सूबेदारलोग उपद्रव उठाते रहे और परास्त होते रहे–अंतमें दौलत खां सूबेदार मुलतानने वागीहोकर बाबरको काबुलसे बुलाया–बाबर और इब्राहीमका पानीपतके मैदानमें स. ई. १५२६ में मुकाबलाहुआ और इबराहीम लड़कर मारागया.

इस्माईलयोगी–कामरूप(आसाम)का रहिनेवाला तंत्रविद्याका प्रसिद्ध सिद्ध हुआहै–स.ई.की १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें इसका होना सिद्ध है क्योंकि इसी समयमें होनेवाले सिक्खोंके अन्तिमगुरू गोविन्दसिंहजीसे इसके साथी लोनिया साधू (लोनाचमारी) की मुलाकात हुईथी. तंत्रविद्याके प्रयोगसे इसने एक विचित्र फूलबाग लगायाथा.

इक्ष्वाकु–अयोध्याके सूर्य्यवंशी राजा इन्हींके नामसे इक्ष्वाकुवंशी कहिलातेहैं–ये वैवस्वत मनुके पुत्र और सूर्यके पौत्र बडे प्रभावशाली और पराक्रमी थे–इनके १००पुत्र थे जिनमेंसे सबसे बड़का नाम विकुक्षी था–निमिभी इनका एक पुत्र था जिसके नामसे मिथेलाका राजवंश जिसमें महाराज जनक हुये प्रसिद्ध है. इक्ष्वाकुके दर्बारमें उरू ऋषिकी बडी प्रतिष्ठा थी–महाराज रामचंद्र इनकी ५७ वीं पीढीमें भारतके चक्रवर्ती राजा हुये. इक्ष्वाकुने अयोध्या नगरी बसाई थी.

ईश्वरचंद्र विद्यासागर सी. आई. ई. ये पंडितजी मेदनीपुर (बंगाल) के वीरसिंहनामक ग्राममें ठाकुरदास वंद्योपाध्याय एक साधारण ब्राह्मणके घर स. ई. १८२० में. पैदा हुये–बचपनहीसे इनका चित्त पठन पाठनमें खूब लगता था–स्वभाव अत्यंत दयालु और परिश्रमी था–स.ई.१८२९ में पिताने इनको संस्कृतकालिज कलकत्तामें पढनेकेलिये बिठलाया रातभर पढ़ाकरते थे केवल २ घंटे सोते थे, नींद आती तब सरसोंका तेल आंखोंमें लगाते थे–कईदफे सौ

सौ रुपयेका इनाम पायाथा-स्वाध्याइयों तथा अन्य मनुष्योंकी यथाशक्ति तन मन धनसे सहायता करतेथे एवं इनका नाम दयासागर पड़ गयाथा-

स. ई. १८४१में संस्कृतकालिजकी शिक्षा संपूर्ण करके विद्यासागरकी उपाधि पाई और फोर्ट.विलियम कालिज कलकत्तामें ५०) रु. मासिकपर नौकर हो गये. हिंदी तथा अङ्गरेजी भाषाभी अपने परिश्रमी स्वभावसे शीघ्रही सीखलीं-बढ़ते २ तनख्वाह ५००) रु. होगई और प्रायः ५००) रु. मासिककी आमदनी स्वरचित पुस्तकोंसेभी थी । विद्यासागर इस सब आमदनीको परोपकारमें लगा देतेथे-स. ई. १८६६ के अकालमें जैसा दान उन्होंने किया वैसा राजाओंकोभी दुर्लभ है,अनेक भद्रपुरुषोंकी विधवाबच्चोंका पालनपोषण करतेथे-अनेक सुपात्रोंके मकान हजारों रुपया ऋणका चुकाकर नीलाम होनेसे बचाये थे अनेक अनाथ रोगियोंको निजगृहमें लाकर टहिलकी और चंगा किया था बंगालमें उनके उद्योगसे सैकड़ों स्कूल और शफाखाने जारी हुयेथे-एक छापाखानाभी जारी कियाथा जिसमें प्राचीन ग्रंथ शोध २ कर छापेजातेथे हिंदूकालिज कलकत्ता उन्हींके उद्योगसे खुला और बहु काल तक उसका खर्च वेही बर्दाश्त करते रहे-

कुलीनब्राह्मणों और क्षत्रियोंमेंसे अधिक विवाह करनेकी कुरीति उन्हींके उद्योगसे मिटी. बालविधवाओंका दुःख देख विधवाविवाह शास्त्रोक्त सिद्ध करने तथा जारी करनेमें बड़ा उद्योग किया. गवर्नमेंटसे उक्त विषयपर कन्सेन्टबिल पास कराया. अनेक विधवाविवाह अपने सामने कराये, निजपुत्रका विवाहभी एक विधवासे करदिया,अनेक पुस्तकेंभी विधवाविवाह सिद्धकरणार्थ छापी-ऐसी २ सच्ची देशहितकारिणीपर समाज विरुद्ध बातें चलानेसे उनके सैकड़ों शत्रु होगये और प्रायः ५० हजार रुपयेका ऋण होगया. पर अंतसमयतक सब ऋणचुकादिया. वे जब लार्ड साहिबसे मिलनेको जाते तब देशी कपड़ेकी चादर ओढते और घेतला जूता पहिरतेथे. कलकत्ता यूनीवर्सिटी तथा सिविल सर्विस परीक्षाकी सेंट्रल कमीटीके मेम्बर थे, गवर्नमेंटको जब कोई कानून हिंदुओंके विषयमें बनाना होता था तब विद्यासागरकी राय अवश्यही पूछी जाती थी. स. ई. १८९१ में स्वर्गवासी हुये. जिनलोगोंकी सहायता जीतेजी करतेथे उनके लिये अपने पीछेभी उत्तम प्रबंध दानपत्रद्वारा करगये हैं-दानपत्रमें १ हजार रुपया प्रतिमास बांटनेकी व्यवस्था है.

विद्यासागरके नामको अबतक बंगाली स्त्रियां शोकमय गीतोंमें गाती हैं.

बङ्गलामें उनकी रची पुस्तकें ये हैं-वासुदेवचरित्र. शकुन्तला नाटक. वर्ण परिचय, कथामाला, बोधोदय, चरितावली, आख्यानमञ्जरी, जीवनचरित्र इत्यादि संस्कृतमें व्याकरणकी उपक्रमणिका और ऋजु पाठ ३ भागोंमें उनहींका बनाया हुआ है.

ईसप–(Aesop) ये अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, परमचतुर और प्रहसनयुक्त स्वभावका था. एसियाई रूममें पैदा हुआ, और बादको यूनानमें जाबसा था–देखनेमें कुरूप कुबड़ा. और पस्तकद था. प्रथम किसीके यहां गुलाम था पश्चात् निज योग्यताके कारण बादशाहके,दर्बारमें पहुँच प्रतिष्ठाका भागी हुआ था. स. ई. से प्रायः १००० पूर्व इसका समय है. इसका और पृर्व्वप्रसिद्ध हकीम लुक्मानका वृत्तांत बहुत कुछ मिलता है. सम्भवतः ये दोनों एकहीहों–ये उसशिक्षाका आचार्य गिनाजाताहै जिसका व्यवहार किस्सा कहानियों द्वारा कियागया है, पशु, पक्षी, वनस्पति, धातु इत्यादिको बोलनेवाला फ़र्ज करके उनकी जबानसे अपना मतलब अदा किया है. ईसपकी शिक्षाका अभिप्राय यह था कि, मनुष्यको ईश्वरकी सृष्टिकी सब छोटी बड़ी चीजोंको ग़ौरसे देखकर उपदेश लेना चाहिये, क्योंकि पशुओंके अनेक स्वभाव मनुष्यको बुराई भलाईमें भेद बतलाते हैं, जैसे कुत्तेकी स्वामिभक्ति, शेरकी वीरता, लोमडीकी मक्कारी, और ऊंटकी सहनशीलता इत्यादि. ईसपकी रची कहानियोंमें लालित्य नहीं है पर वे शिक्षासम्बंधी उपदेशसे भरपूर हैं. इन कहानियोंके पढ़नेसे मनुष्यको अनेक अमूल्य उपदेश मिलते हैं और बच्चोंको इनका पढाना परम लाभकारी है और इसी कारण इनका व्यवहार सब मुल्कों और कौमोंमें पाया जाता है. अफलातूनने लिखा है कि, सुकरातने इन्हीं कहानियोंकी पद्यरचना की थी–

ईसामसीह (Lord Jesus Christ) भूमंडलके धर्म प्रचारकोंमें गौतम बुद्धके बाद आपहीका दर्जा है. यरूप और अमरीकाके रहिनेवाले आपके मतानुगामी हैं और एशिया, आफरिका इत्यादिमें भी आपके मत पर चलनेवाले करोड़ों हैं. प्रायः अबसे १९.०० वर्ष पहिले आप एशियाई रूमके सूबे ज्यूडामें हज़रत दाऊदके वंशमें बीबी मिरियमके पेटसे पैदा हुये, उस समय भूमंडलके पश्चिम विभागके रहिनेवाले मूसाके मतानुगामी यहूदी थे. जुरूसलम में यहूदियोंका एक बड़ा मंदिर था,जहां साल भरमें एक दफे बड़ा मेला होताथा मसीहने १२ वर्षकी उम्रमें मेलेके बीच इस मंदिरके पुजारियोंको परास्त किया, पश्चात् मसीहने निजधर्मका उपदेश किया थोडेही दिनोंमें १२ शिष्य होगये जिनको चारों तरफ उपदेशकरणार्थ भेजा–मसीहने अनेक आश्चर्यजनक बातें कीं. अंधोंको नेत्र दिये, मुर्दोंको जिन्दा किया कुष्ठियों को चंगा किया५ हजार आदमियोंकी दावत एक खुराकसे की,समुद्रके तूफानको रोका पानी पर पैदल कई कोसतक चले, सूर्य्यकीसी चमक दिखलाई । ३३ वर्षकी अवस्थामें मसीह एक दिन शिष्योंसहित जुरूसलम गये, वहांके यहूदी पुजारीने, जो इनसे द्वेष रखताथा. इनको पकड़वाकर मुकद्दमा कायम करादिया और सूली दिलवादी. जुरूसलममें इनकी क़बर है और ईसाइयोंकी धर्म पुस्तक बाइबिलमें इनके अनेक उपदेश हैं

उकलैदस (Euclid). मिश्रदेशांतरगत अस्कंदरिया नामक शहरमें सं. ई. से ३०० वर्ष पूर्व जन्मा और निजनामका एक गणितग्रंथ रचकर जगत्प्रसिद्ध हुआ. इसग्रंथमें वे सब साध्यभी शामिल हैं जिनको फीसागोरिस आदि विद्वानों- ने इससे पहिलें होकर प्रकट किया था. ये अस्कंदरियाके महाविद्यालयमें अध्यापक था और अस्कंदरिया इसके समयमें गणितशास्त्रका देश विद्यालय गिनाजाताथा. स. ई. १७१८ में पंडितजगन्नाथने जयपुरके राजा जयसिंहसवा- ईके हुक्मसे उकलैदसके १५ अध्यायका अनुवाद हिंदीभाषामें करके उसका नाम रेखागणित रक्खा- अस्कंदरियावासी प्रसिद्ध गणकटालमी उकलैदसका शिष्य था. डाक्टर थीबो साहिब (Dr Thibaut) ने आपस्तंबराचितस- ल्वसूत्रोंका अनुवाद अंगरेजीमें करके प्रकट कियाहै कि, यूनानीहकीम फीसा गोरिसने भारतमें आकर इनसूत्रोंको पढ़ा और फिर मिश्र तथा यूनानमें जाकर अनेकोंको इनकी शिक्षा दी-पश्चात् उकलैदसने इन्हीं सल्वसूत्रोंके आशय पर निजनामकी पुस्तक रची।

उदयनाथकवींद्र (भाषाकवि). ग्राम वनपुरा (अंतरवेद) के रहिनेवाले थे. भषाकवि कालीदास त्रिवेदी इनके बाप थे कवि दूलह इनके पुत्रथे-प्रथम बहु- तादिनोंतक राजा हिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठीनरेशके यहां रहकर कविता करतेरहे उससमय कवितामें अपना नाम उदयनाथ लिखतेथे पश्चात् उक्त राजा के नामसे "रसचंद्रोदय" ग्रंथ रचकर "कवींद्र" उपाधि पाई और तबहीसे का- व्यमें अपना नाम कवींद्र लिखा. पश्चात् कवींद्रजी राजा गजसिंह जोधपुरनरेश के दरबारमें रहे और बादको रावबुद्धहाडाबूंदीनरेशके दर्बारमें आदर सत्कार सहित रहिकर काल व्यतीत किया।

वि. सं. १८०४ में विद्यमानथे.

वेतीग्राम जिला राय बरेली के रहिनेवाले कवींद्र त्रिवेदी दूसरे थे.

उदयसिंह (राना चित्तौड़) वि. सं. १५९८में चित्तोड़की गद्दीपर बैठे-यद्य- पि इनके बाप राना साङ्गाकी १० करोड़की छोड़ीहुई साहिबी घटते २ थोडीही रहगईथी, पर फिरभी इनका प्रताप इतनाथा कि जब वि. सं. १६१६ में इन्होंने हाजीखाँ पठान पर चढाई की थी तब मेवाडके सुनहिरी झंडेके साथ बूंदी, बीकानिर, ईडर, तोड़ा, मैड़ते, डूंगरपुर, वांसवाडा, देवलिया, रामपुर इत्यादिके अनेक रावराजे अपनी २ सेनासहित लडनेको गये थे- पर जोधपुरके राव मालदेवसे बिगाड था, एवं १५०० जंगीराठौरोंकी सेनाकी सहायता सहजहीमें हाजीखाँको मिलगई और रानाकी हार हुई. इस समय रानाकी अमलदारी भी अजमेरतक थी. परंतु जब वि. सं. १६२४ में अकबर

बादशाहने चितौड पर चढाई की तब उस समय रानाके पास बहुत थोडे परगने रहिगये थे. कई महीने किलेमें घिरेरहिनेके पीछे जब बचनेकी कोई आशा न रही तो राणा उदयसिंह तो पहाडोंपर चलेगये और उनके सेनाध्यक्ष जयमल्लने बडी सावधानीसे दुर्गकी रक्षा की जयमल्लके मारे जानेपर स्त्रियां तो चितापर जलकर मरगईं और पुरुष मात्र लडकर कट मरे उस युद्धमें जितने क्षत्री मारेगये थे उन सबके जनेऊ तौलमें ७४॥ऽ मन निकले इसीसे चिट्ठियोंपर ७४॥ऽ लिखते हैं

राना उदयसिंहका वि. सं. १६२९ में देहांत होगया और उनके पुत्र राना प्रतापसिंहने गद्दीपर बैठकर अपने पूर्वजनोंका गयाहुआ राज्य पुनः विजय कर लिया और अपने बापके नामसे उदयपुर बसाया जो अबतक मेवाड़राज्यकी राजधानी है–

एडवर्ड सप्तम कैसरे हिंद (Edward VII Emperor of India, स. ई. १८४१में श्रीमती महारानी विक्टोरियाके द्वितीय गर्भसे आपका जन्म हुआ जन्मोत्सवमें २० लाख रु. खर्च हुये और साथ ही युवराज तथा ड्यूकऑफसैक्त कोबर्गऐंडगोथाकी उपाधि आपको दीगई–ब्रिटिश राज्यकी ओरसे ६० हजार पौंड आपको वार्षिक व्ययके लिये नियत हुये–७ वें वर्षमें आपका विद्यारंभ हुआ–पढते समय साधारण व्यक्तिके समान आपसे वर्त्ताव किया जाता था और इंग्लैंडकी भविष्यति स्थितिके अनुकूल आपको शिक्षा दीजाती थी. स. ई १८६१ में आपने कैम्बृज यूनीवर्सिटीकी अंडरग्रेजुयेटकी परीक्षा उत्तीर्ण की स. ई. १८६८ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने डी. सी. यल. और एडिनबरो तथा डबलिनकी यूनीवर्सिटियोंने यल. यल. डी. की उपाधि सन्मानार्थ प्रदान की– १९. वर्षकी उम्रमें श्रीमतीने आपको सेनाका अवैतनिक कर्नेल नियत किया, पश्चात् एडिनबर्गमें रहिकर आपने इटाली, फरासीसी, और जर्मन भाषा पढी और इतिहास शिल्प, आईन तथा रसायनादि शास्त्रका विशेष अभ्यास किया स. ई. १८६३ में डेन्मार्ककी राजकुमारी प्रसिद्ध सुंदरी अलेग्जड्रीनासे शादी की–विवाहके पश्चात् पार्लियामेंटने आपकी तनख्वाहमें ४० हजार पौंड वार्षिक बढाया और १० हजार पौंड वार्षिक आबकी पत्नीको देनेका ठहिराव किया. स. ई. ६४ में आपके स्वर्गवासी प्रथम पुत्र ऐल्बर्टविक्टरका जन्म हुआ दूसरे ही वर्ष वर्त्तमान युवराज पैदा हुये. स. ई. १८७१ में आपको भयंकर ज्वरपीड़ा हुई, जीनेकी आशा कम रहिगई, ब्रिटिश राज्य भरमें आपकी आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थना कीगई–स. ई. १८७५ में हिन्दुस्थान देखनेके लिये लंडन से विदा हो पैरिस, ऐथेन्स, इटाली होते हुये बम्बई पधारे, आगरेमें आपके स्वागतमें बडा भारी दर्बार किया गया और प्रायः ५ लाख पौंडका माल

राजा महाराजाओंकी ओरसे आपको भेट किया गया, अफ़गानिस्थानकी सीमा पर जब रूसने प्रथमवार चढाई की थी तब प्रजाकी प्रार्थनासे माताकी आज्ञा पाकर आप पत्नीसहित सेंटपीटर्सबर्ग पधारे वहां पहुंच आपने रूसके सम्राट्को और आपकी पत्नीने सम्राज्ञी अपनी बहिनको समझाकर बखेडा शांत किया-स. ई. १९०१ में श्रीमती महारानी विक्टोरियाके स्वर्गवासी होनेपर इंग्लैंडके राज्यसिंहासनपर बैठे राज्यपर बैठते ही आपका स्वभाव बदला है, जिन मित्रोंके साथ रातदिन बैठक रहती थी अब आवश्यकता विना नहीं आने पाते आपको कहिनेकी अपेक्षा करकरके दिखलाना अधिक पसंद है-पार्लियामेंटने पौने छः लाख रुपया वार्षिक वेतन आपको देना स्वीकार किया है-पृथ्वीप्रसिद्ध कोहनूर हीरा जो आपकी माताके मुकुटमें था अब आपको मिला है-

एल्फिन्स्टन साहिब इतिहासकार (The Hon: Mount Stuart Elphinston) इनका पूरा नाम आनरेबिल मौंट स्टुवर्ट एल्फिन्स्टन था-१८ वर्ष की अवस्थामें इंग्लैंडसे बिदाहो हिन्दुस्थान आये और बंगाल सिविल सर्विसमें नियत हुये-बादको पेश्वाके दर्बारमें भेजे गये वहांसे कुछ काल पीछे भोंसलाके दरबारके रेज़ीडेंट नियत होकर नागपुर गये और फिर राजदूतबनकर काबुल गये- स. ई. १८२० में बम्बईके गवर्नर नियत हुये-७ वर्ष इस पदपर रहे और स. ई. १८२७ में पेन्शन लेकर इंग्लैंड चले गये-अंगरेजी विद्याका प्रचार बम्बई प्रांतमें इन्हींके समयमें हुआ. हिन्दुस्थानियोंने इनका स्मारक चिह्न स्थापनकरणार्थ बम्बईमें "एल्फिन्स्टन कालिज" खोला-इंग्लैंड पहुंचकर इन्होंने हिंदोस्थानका सविस्तर विश्वासयोग्य इतिहास लिखा जो परम मनोहर है-

स. ई. १७७८ में पैदा हुये.

स. ई. १८५९ में मरे

एलिजाबेद, इंग्लैंडकी रानी (Queen Elizabeth) इंग्लैंडके बादशाह हेनरी अष्टमकी बेटी निज पिताके बाद इंग्लैंडकी गद्दीपर बैठी, प्राटिस्टैंट मतकीथी, जब गद्दीपर बैठी थी उस समय इंग्लैंडकी प्रजामें धर्मसंबंधी घोर विप्लव उपस्थित हो रहाथा, आधी प्रजा प्राटिस्टैंटथी और आधी रोमन कैथलिक-रानी एलिजाबेद प्रजाप्रिय बनना चाहती थी, एवं उसने दोनों मतोंको समानतासे वर्त्ता और अंत समयतक अपना विवाह भी इसी कारण नहीं किया और न अपना उत्तराधिकारीही नियत किया. यदि वह किसी प्राटिस्टैंटसे शादी करलेती तो सब रोमनकैथलिक उसके खिलाफ होजाते और अगर किसी रोमन कैथलिकसे

शादी होती तो प्राटिस्टैंट लोग बिगड़ बैठते–पूर्वशासकोंकी अपेक्षा राज काज इसके समयमें अच्छा चला हरतरफ शांति रही, प्रजाको सुख चैन मिला और लोगोंकी स्थितिमें अनेक प्रकारकी उन्नति हुई, सर्दारलोग सब प्रसन्न रहे और शैक्सपिअर आदि अनेक प्रसिद्ध कवीश्वर इंग्लैंड तथा स्कॉटलैंडमें इसी समयमें हुये–

तिजारतको तरक्की हुई समुद्रमें अनेक रास्ते और टापू दरियाफ्त हुये–तम्बाकू और आलूके बीज सर वाल्टर राली साहिबने अमेरिकासे लाकर इग्लैंडमें रोपण कराये अब इन दोनों चीजोंका प्रचार भूमण्डल भरमें होगया है–

स. ई. १६०३ में ४५ वर्षकी उम्रमें मरी.

ऐडीसन (Josheph Addison) पूरा नाम इनका जोजेफ ऐडीसन था– स. ई. १६७२ में एक अंगरेजी पादरीके घर बिल्टशायरमें पैदाहुये-प्रथम शिक्षा चार्टर हौस लंडनमें पाई, यही स्टीलके साथ इनकी मैत्री होगई जो मरणपर्य्यंत निभी–बादको मैग्डालेन कालिज आक्स फोर्डसे इन्होंने एम. ए. पास किया और यूरूपके अनेक देशोंकी यात्रा की–यात्रासे लौटकर ब्लेनहेमकी लड़ाई पर कविता रचनेके बदलेमें कमिश्नर आफ अपीलकी पदवी पाई और स. ई. १७०६ में अंडरसेक्रीटरीआफस्टेटके पद पर नियुक्त किये गये–कुछ दिन बाद लार्ड लफ्टिनेंट वार्टनके सेक्रेटरी नियत होकर आयर्लेंड गये वहां रहिकर अनेकानेक मज़मून अपने मित्र स्टीलके जारी किए हुये पत्र "टेटलर" नामकको लिखे- स. ई. १७११ में "स्पेक्टेटर" नामक पत्र जारी हुआ और उसके लिये भी अनेक प्रबंध इन्होंने लिखे–पश्चात अनेक ग्रंथ रचे–स. ई. १७१६ में इन्होंने अपनी शादी की परंतु सुखदाई न हुई–स. ई. १७१७ मे सेक्रेटरीआफस्टेटके पद पर नियत हुये और थोडेही काल पीछे पेन्शनले घर बैठे–

स. ई. १७१९ में परमधामको सिधारे और वेस्टमिनिस्टरएबेमें दफन किये गये। डाक्टर जानसनकी राय है कि, ऐडीसनरचित ग्रंथोंको पढ़कर सुडौल, रसमी सुंदर, और सभ्य इबारत लिखना आजाती है– मकाले साहिबकी भी सम्मति है कि "अंगरेजी इबारत ऐसी सरल, सौंदर्यसे परिपूर्ण और उत्तम किसीने भी नहीं लिखी." पर इनकी इबारत प्रभाव उत्पन्न करनेवाली नहीं है, इन्होंने मौन साध लिया था–

ऐडीसन, प्रोफेसर (Professor Addison) अमेरिकावासी प्रसिद्ध विद्वान थे प्रायः स. ई. १८८० में इन्होंने बिजलीकी रोशनीका आविष्कार किया. इनकी योजनाके अनुसार गैस और तेलके बिना औषधियोंके योगसे बिजली उत्पन्न होकर प्रकाशका काम देती है– इन्हीं महाशयने एक युक्ति ऐसी निकाली

जिससे सूर्यका प्रकाश रात्रिके समय भी दीखपड़े. इस युक्तिमें एक कागज़का टुकड़ा कितनीही औषधियोंके योगमें डुबाकर सूर्यके प्रकाशमें रक्खा जाताहै. धूपमें रखनेसे वह टुकडा सूर्यकी किरणोंको चुरालेताहै. इसी टुकडेको रात्रिके समय यदि अंधकारमें रक्खाजावे तब उसमेंसे थोड़ी देरतक स्वतः प्रकाश होताहै फोनोग्राफका आविष्कारभी इन्हींके द्वारा हुआ. इस यंत्रके समीप जो बात कही जाती है या राग गाया जाताहै, वह इसमें भरजाताहै और उसे जब और जहां सुनना चाहैं सुना सकते हैं मनुष्यका स्वरभी इसमें अच्छीतरह पहिचाना जा सकता है

ऐपामीनान्डाजी (Epaminondas). थेबीज निवासी प्रसिद्ध सेनापति तथा सुप्रबंधकार वे ओटियाके राज्यवंशमें हुआ.निजशुभआचरणों तथा रणकुशल होनेके कारण प्रसिद्ध हुआ. उम्रभरमें कभी असत्य भाषण नहीं किया. स. ई.से ३७१वर्ष पूर्व स्पार्टावासियोंको ल्युक्टराकी लड़ाईमें परास्त करके अनेक जय प्राप्त करता हुआ ५० हज़ार सेनासहित स्पार्टाके राजा लैकडेमनके राज्यमें घुसगया. इसके बाद थेबीज़में लौटकर आया, वहांके लोगोंने उसपर यह दोष लगाया कि, उसने लड़नेमें नियमसे अधिक समय व्यतीत किया,इसदोषके बदलेमें उसको सूली दिये जानेका हुक्म दिया गया ऐपामीनान्डाजने यह हुक्म स्वीकार कर न्यायाधीशोंसे प्रार्थना की कि मेरी क़बरपर यह अङ्कित करा देना कि, स्वदेशको बर्बादीसे बचानेके बदलमें सूली दीगई.यह बात न्यायाधीशोंके हृदयमें असर कर गई,एवं उन्होंने अपराध क्षमा करके ऐपामीनान्डाज़को सर्व्वोच्च पदपर नियत किया ४८ वर्षकी उम्रमें किसी लड़ाईमें घायल होकर मरा, थेबीज़की प्रजाने बड़ा शोक किया क्योंकि, उन्होंने इसीके उद्योगसे स्वतंत्रता पाईथी और इसके मरनेसे १० ही वर्ष पीछे वह स्वतंत्रता जाती भी रही–

स. ई. से ४१४ पूर्व जन्मे.

स. ई. से ३६२ पूर्व मरे.

ऐल्फ्रेड आज़म (Alfred the great) पश्चिमी सैक्सन लोगोंके राजा एदिल बुल्फका पुत्र था. स. ई. ८५८ में इसके बापका देहांत हुआ और इसका ज्येष्ठ भ्राता राजगद्दीपर बैठा.. स. ई. ८६६ में भाईके मरनेपर राज्य इसके अधिकारमें आया. ऐश डौनकी लड़ाईमें इसने डेन्स लोगोंको परास्त किया पर थोड़ेही दिन पीछे डेन्स लोगोंसे हारकर इसे जंगलकी ओर भाग जाना पड़ा–

थोडे दिन जंगलमें रहकर इसने सेना एकत्र की और डेन्स लोगोंपर चढाई करके पुनः विजय पाई जल व थलमें ५६ युद्ध किये, कानून बनाये, पंचायतसे मुकद्दमें फैसल करनेके क़ायदे चलाये, पाठशालायें जारी कीं देश विदेशसे बुलाकर अध्यापक नियत किये,यूनीवर्सिटी कालिज़ आक्स फोर्डकी मूलरोपण-की-बहुतसी पुस्तकें रचीं और अनेक पुस्तकोंका अनुवाद लैटिनसे अंगरेज़ीमें

किया, चोरी होना इसके समयमें बंद होगईथी दिनमें ८ घंटे पूजा पाठ, ८ घंटे राज काज और ८ घंटे खाने, पीने, सोने इत्यादिमें बिताता था.

स. ई. ८४८ में जन्मे

स. ई. ९०१ में मरे.

ऐल्बर्ट राज कुमार सैक्सकोवर्ग और गोथा वाले (Priuće Albert of Saxe-coberg and gotha) भारतेश्वरी विक्टोरियाके पति थे स. ई. १८१९ में सैक्सको वर्गके ड्यूकके घर इनका जन्म हुआ: ये उन सैक्सन लोगोंके वंश धर थे जिन्होंने अपने देशकी स्वतंत्रताको जर्मनीवालोंके आक्रमणसे बड़ी वीरतासे बचायाथा.

इनके बड़े दो भाई थे-दुर्भाग्य वश इनके जन्मके पश्चात् इनके मातापिताने विवाहका बंधन तोड़ दिया था और इसलिये राजकुमारको माताका संग त्याग पिताके साथ रहिना पड़ा था. दादीने इनका पालन पोषण किया पर वह भी इनको १२ वर्षका छोड़कर मरगई राजनीति सायन्स साहित्य संगीत इत्यादि नाना शास्त्रोंकी शिक्षा पाकर इन्होंने देशाटन किया-हालैंड जर्मनी, आस्ट्रिया, ईंग्लैंड, इटाली, स्वीटज़रलैंडका अवलोकन किया इनकी दादी विक्टोरियाकी नानीथी-उसने इन दोनोंमें बचपनहीसे मेल झोल करादिया था. स. ई. १८४० में दोनोंका विवाह हुआ, और पार्लियामेंटने ३ लाख रुपया वार्षिक बेतन आपका नियत किया और ब्रिटिश सेनाके"फ़ीलडमारशेल"का पद तथा "हिज़रायलहाइनेस" की उपाधि दी और राज्यमें आपका दर्जा सब्वाश्च रहा पर महारानी विक्टोरियासे तले विवाहसे एकही वर्षबाद १ कन्या और दूसरीही वर्ष प्रिंसएलबर्ट एडवर्ड जो आजकल्ह एडवर्ड सप्तमके नामसे राज्य करतेहैं पैदा हुये-पतिपत्नीमें अत्यंत प्रेम था और प्रिंस ऐल्बर्ट अपनी पत्नी श्रीमती विक्टोरियाको राजकाजमें बड़ी सहायता देते थे.वे परमनीतिज्ञ विद्वान चतुर और संगीतविद्याके रसिक थे-स्वभाव शान्तियुक्त था देशोन्नतिके उद्योगी ,और स्वरूपवान् थे. स. ई. १८६१ में आपका स्वास्थ बिगड़ा, इलाज बहुत कुछ हुआ पर रोग दिन प्रति दिन बढताही गया-परिणाम यह हुआ कि, १४ वीं दिसंबरकी रातको आपका देहांत होगया-प्रसिद्ध राजनीतज्ञ सी. ग्रेविल साहिबने अपनी पुस्तकमें लिखाथा कि "प्रिंसऐलबर्ट मानो स्वयं राजा हो गये हैं, उन्हें काम करना बहुत पसंद है, रानी विक्टोरिया चाहे रानीकी उपाधि धारण करती हैं परंतु वास्तवमें शासन तो प्रिंस ऐलबर्टहीका है, सब प्रकारसे वही ईंग्लैंडके राजा हैं." ईंग्लैंडके प्राधान अमात्य लार्ड बीकन्स फ़ील्डने राजकुमारकी मृत्युके बाद स्पष्ट कहा था कि "प्रिंसऐलबर्टके साथ मानो हमने इंग्लैंडके राजाको दफ़न कर दिया." जिस समय प्रिंसऐलबर्ट का शरीर

भूमिसमर्पण किया गया तो प्रजावर्गने एक स्वरसे "सद्गुणी राजकुमार" के नामसे पुकारकर हृदयका दुःख हलका किया आपकी समाधि फ्राग्मोरके मैदानमें संगम मरकी बड़ी दर्शनीय बनीहै-समाधि पर लैटिन भाषामें यह लेख अंकित है-"वियोगिनी विधवा रानी विक्टोरियाने प्रियपति प्रिंसऐलबर्टके यावत् नश्यमान् पदार्थ यहां रखवाये ! यहीं पर वेभी अंतसमय पतिके साथ सुखकी विद्रा लेंगी."

कनफ्युशिअस (Confucius) चीनके रहनेवाले प्रसिद्ध तत्त्व-विज्ञानी और उपदेष्टा थे पिता इनको ३ वर्षका छोडकर मरगयेथे-दादेने इनके पालन पोषण और शिक्षाका प्रबंध कियाथा-१९ वर्षकी उम्रमें इन्होंने शादी की पर पठन पाठनमें बाधा पडते देख स्त्रीको त्याग दिया-राजेश्वर चीनने इनको सुयोग्यपाकर कृषिविभागका अफसर नियत किया और कुछ दिन बाद नाजकी मंडियों, भेडोंके गल्लों तथा चरागाहोंका इन्स्पेक्टर बनादिया-राजसेवा ये बडे परिश्रमसे करतेथे २३ वर्षकी उम्रमें माताके देहांत होने पर राजसेवा छोड़ ३ वर्ष पर्य्यंत शोकमें रहे और फिलासोफी पढतेरहे-पश्चात् राज्यसम्बन्धी कार्य्योंका विचार ठाना और लोगोंको उपदेश करना शुरू किया, अनेक मन्तव्य इनके समाजविरुद्धथे एवं जातिवालोंने इनको छोडदिया पर ये दृढतासहित उपदेश करतेही रहे, बादको ये देशाटन करने चले, अनेक सूबोंके हाकिमोंने इनको उपदेशक नियत किया-इसी समय इनको किसी सूबेकी सूबेदारी मिलगई और एकही वर्षमें उक्तसूबेकी इतनी उन्नति इन्होंने की कि अन्यसूबेदार इनसे ईर्षाद्वेष रखनेलगे-सबने मिलकर सम्राट् चीनसे इनकी शिकायत की जिससे उक्त सम्राटने इनको पदच्युत करदिया १३ वर्ष तक इधर उधर घूमकर उपदेश देतेरहे-अंतमें निज जन्मभूमिको लौटे और परलोकको सिधारे-इनके बहुतसे चेले होगये थे-चीन, कोचीन और कोरियावासी इनके रचेग्रंथोंको अबलों चातुर्यताकी मूल जानते हैं-इन्होंने कोई नया मत नहीं चलाया, पर राज्य प्रबंध, देशरीति, रहिन सहिन इत्यादिके सम्बंधमें बहुतसे उपयोगी सुधार किये,देशोन्नतिकी इनको ध्वनि थी,किसी मतपर नहीं चलतेथे पर नास्तिकनथे-चीनमें इनके वंशकी अबतक प्रतिष्ठाहै, प्रत्येक नगरमें इनके नामका मंदिर है जिसमें प्रति वर्ष राजा तथा प्रजा इनकी मूर्तिकी पूजा अबलौं करतेहैं-ये सदैव उपदेश करतेथे कि किसीको मत सताओ. सबका अदबकरो, परिश्रम करो और मेल मिलापसे रहो.

स. ई. से ५५१ वर्ष पूर्व हुये

स. ई. से ४७९ वर्ष पूर्व मरे.

कनिष्क इसका राज्य काबुल कंधारसे लेकर आगरा और गुजरात तक था चीन तकके बादशाह इसका हुकुम मानतेथे और ह्वेनथ सङ्गके लेखानुसार ये चीनापति कहिलाताथा. बौद्ध मतानुगामी थाऔर उत्तरीय बौद्धोंकी सभा इसाक समयमें हुई इसने बौद्ध मतके उपदेश करनेके लिये दूर२ उपदेशक भेजे. राजधानी इसकी काश्मीरमें थी और ये तूरानका रहिनेवाला यूचीकौमका था–स. ई. ७८ में ये कश्मीरके राज्यसिंहासन पर बैठा. इसने बौद्धमतकी धर्मपुस्तकोंका पुनर संस्कार कराया जिनका रिवाज अबतक तिब्बत, ततार, और चीन इत्यादिदेशोंमें है. इसके दादा हविष्कने जो काबुलमें राज्य करतथा, कश्मीर विजय किया.हविष्कके बाद हुष्क और हुष्कके बाद कनिष्कने राज्य किया–कनिष्कने निजपूर्वजोंका राज्य बहुत बढायाथा.

कपिलदेव मुनि (तत्त्वसमास सांख्यसूत्रोंके कर्ता). कर्दम ऋषिके घर देवहूतिके उदरसे जन्मे. कपिलके बडे होनेपर कर्दम ऋषि उस समयकी प्रणालीके अनुसार वनको चलेगये और थोड़ेही दिन पीछे मृत्युवश हुये. कपिलने तत्त्वसमास सांख्यसूत्रोंका उपदेश करके निजमाताको शोकरहित किया औरआप कलकत्तेके पास गंगासागरको चलेगये. वहां रहिकर योगाभ्यास करते रहे और शुकादिऋषियोंको सांख्ययोग पढ़ाते रहे. सांख्ययोगका मुख्य उद्देश्य यह है कि, आत्माको अविनाशी और शरीरको नाशवान् जानकर संसारी मायामें चित्त न लगाना चाहिये. कपिल दर्शनकारोंमें सबसे प्राचीन हैं. महाभारतसे पहिले हुये क्योंकि गीतामें सांख्यका निम्नस्थ उपदेश पाया जाताहै:– " एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगत्वमा श्रृणु " पुरातत्त्ववेत्ताओंकी सम्मति है कि कपिलदेवहीने गौतमबौद्धकी जन्मभूमि " कपिलवस्तू " नामक नगरको बसाया था. और इन्हींके सांख्यसूत्रोंके आशयपर बौद्धने अपना मत चलाया– छःअध्यायोंमें सांख्यसूत्रोंके बनानेवाले कपिल दूसरे थे और महाभारतके पीछे हुये. येही दूसरे कपिल फिरङ्गी विद्वानोंके मतानुसार स. ई. से. प्रायः ७०० वर्ष पूर्व हुये.

कवींद्र–देखो उदयनाथ भाषाकवि-

कबीर (कबीर पन्थ संस्थापक). वि. स. १५४५ में इनका विद्यमान होना सिद्ध है. ये वास्तवमें किसजातिके थे ठीक विदित नहीं केवल इतना मालूमहै कि एकदिन " नीमा " जुलाहिन निजपति नूरीके साथ किसी विवाहोत्सवमें गईथी रास्तेमें लहिरतारा झीलमें, जो काशीके पासहै, पानी पीने गई । वहां एक तुर्तका पैदाहुआ बच्चा पड़ा पाया, नीमा उसे उठा लाई और बड़े प्रेमसे पाला, और कबीर नाम रक्खा. बड़े होकर कबीर जुलहे

का पेशा कर अपना समय व्यतीत करने लगे, उनके हृदयमें भगवद्भक्ति तथा अतिथिसेवाका अंकुर जन्महीसे पाया जाताथा. "गुरुरूपी कर्णधार (खिवैया) के विना भवसागरमें इसदेहरूपी नौकाको कौन पार लगावेगा?" यह प्रश्न सदैवही उनके मनमें उदय हुआ करता था, और अकसर उनको व्याकुल करदेता था-पश्चात् कबीर गुरु रामानन्दके शिष्य होगये और निज योग्यताके कारण मुख्य शिष्योंमें गिने गये. गुरूने इनको शब्दयोगकी शिक्षा दी-सद्गुरुको प्राप्त हो कबीरसाहिब प्रकृत साधू और सिद्ध पुरुष हुये, और हिंदू मुसल्मानोंके तीर्थ व्रतादिपर तीव्र प्रतिवाद करनेमें प्रवृत्तहुये, दिल्लीके बादशाह सिकंदर लोदीके यहां कबीर साहिबके नाम मुसलमान धर्मकी निन्दा करनेका अभियोग उपस्थित हुआ, पर बादशाहने उनकी करामात देख उनसे मित्रता करली. कबीरपंथमें शब्दयोगका उपदेश किया जाताहै कबीरका कथन है कि "भगवान् शब्दरूपसे सबके घटमें विद्यमान है शब्दयोगी जन साधन बलसे अपने २ शरीरके भीतरही उस शब्दको सुनते और गुरुरूपी ईश्वरको देखते रहते हैं, मनुष्य भगवान्को इन्द्रियोंद्वारा किसी तरह ध्यानमें नहीं लासकता न देख सकता है, इसी कारण परमेश्वर जीवके उद्धारके लिये गुरुरूपसे अवतार लेकर दर्शन देते हैं, ऐसही गुरुको सद्गुरु कहिते हैं, सद्गुरुकी खोजमें प्रत्येक मनुष्यको रहिना चाहिये, सद्गुरुकी पहिचान ये है कि,उनके ईश्वरत्वका आभास बचपनहीसे अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा प्रगट होने लगताहै, सद्गुरुके अतरिक्त संसारमें प्रत्यक्ष ईश्वर और कोई नहीं है." कबीर साहिबने बहुतकालतक जीवन धारण करके बंगाल, पंजाब, आसाम इत्यादि देशोंमें निजमतका प्रचार किया-अंतमें एकदिन निजशिष्योंको उपदेश करते २ देह त्यागदी-हिंदू,मुसलमानोंमें मृतकशरीर पर झगड़ा हुआ, परंतु जब ऊपरसे चादर उठाकर देखा तब शवकी जगह फूलोंका ढेर पाया-कबीरकी कविता जगत् प्रसिद्ध है, साखी, बीजक इत्यादि उनके बनाये ग्रंथोंमेंसे मुख्य हैं-कबीरका पुत्र कमाल नामकभी बड़ा योग्य हुआ. कहिते हैं कि स. ई. ११४९ से १४४९ तक प्रायः ३०० वर्ष कबीरने जीवन धारण किया. कबीरका इकलौता बेटा कमाल था जिसने अपनी सब उम्र निजपिताकी वाणीके खण्डनमें पद रचने तथा दोहे बनानेमें बिताई-इसीलिये मशहूर है कि-

बूड़ा वंश कबीरका जो उपजे पूत कमाल ।

कमलाकरभट (ज्योतिषकार). इनके पिता शास्त्री नृसिंह दैवज्ञ, भास्कर कृत सिद्धांतशिरोमणि पर वासनावार्तिक नाम टीकाके बनानेवाले थे-अपने बड़े भाई दिवाकर दैवज्ञसे इन्होंने ज्योतिष पढा, प्रसिद्ध पं. रङ्गनाथ दैवज्ञ इनके छोटे भाईथे. सिद्धांतसिरोमणि पर मरीची नाम टीकाके कर्ता पं. मुनीश्वरजी किसीनातेसे इनके चचा लगतेथे. एकदफे मुनीश्वर और कमलाकर मकर स्नान के लिये प्रयाग गये-वहां पंडितोंके बीच शास्त्रार्थके समय दोनों विपक्ष होगये

जिससे दोनोंमें विरुद्ध होगया–पश्चात् कमलाकरने तत्त्वविवेक नाम एक ज्योतिष सिद्धांत रचा जिसमें अनेक उपपत्तियां और युक्तियां मुनीश्वरके मतके खण्डनार्थ लिखीहैं–वादको मुनीश्वरने ग्रहोंका स्पष्टस्थान जानने केलिये "भङ्गी" नाम एक क्षेत्रक्रिया रची–कमलाकरने उसके खण्डनके लिये अपने छोटे भाई रङ्गनाथसे "भङ्गीविभङ्गी" नामकग्रथ रचवाया. कमलाकरने भास्करीय बीजगणितके अनेक प्रकारोंकी उपपत्तियां अपने बुद्धिबलसे बहुतही उत्तम कीहैं–जिस अंकका वर्गमूल पूरा २ नहीं निकलता उसके मूलकाभी इन्हों कपरसे पूरा२विचार है–सूर्यसिद्धांतके भी अनेक प्रकारोंका समर्थन खूबही कियाहै और महामारी भूकम्प इत्यादिकाभी अपने ग्रंथमें भलीभांति निरूपण किया है–निर्णयसिन्धु धर्मशास्त्रका ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआहै–इनके पूर्वजोंका निवास स्थान गोदावरीतट गोल नामक ग्राममें था मर इनके पिता बालबच्चोंसहित काशीमें आ बसेथे.

जन्म इनका शाके. १५३८ में हुआ .

कमलावती रानी. ये राजपूत जातिका गौरव बढानेवाली जगतप्रसिद्ध सुंदरी गुन्नौरकी रानी थी. निम्नस्थ दोहा इसके विषयमें मशहूर है:–

दो०–ताल तो भूपाल ताल, और सब तलैयां।
रानी तो कमलावती, और सब बिलैयां।

इसका वृत्तांत भूपाल राज्यके संस्थापक सर्दार दोस्त मुहम्मदखांके सम्बन्धमें देखो.

कमाल–देखो कबीर

कर्ण (महादानी). सूर्यके वीर्यसे कुन्तीको गर्भ रहा जिससे कर्ण पैदा हुआ–कुन्तीका विवाह उस समय राजा पांडुके साथ नहीं हुआथा एवं उसने बच्चेको संदूकमें बंद करके जमुनानदीमें छोड़दिया. धृतराष्ट्रके रथवानको यह संदूक बहिता मिला. सन्दूकको पाकर उसने बच्चेको निकाल लिया और उसका पालन पोषण किया. जब कर्ण जवान हुआ तब दुर्योधनने उसको अङ्ग देशका राज्य दिया. महाभारतकी लड़ाईमें कौरवोंकी तरफसे लडा और अर्जुनके हाथसे मारागया प्रसिद्ध है कि, राजा कर्ण सवामन सोना रोज़ पुण्यकरता था–ये बड़ा वीर और धनुर्धारीथा–द्रौपदीके स्वयंवरमें पहिले इसीने बांस पर टँगी चक्रमें नाचतीहुई सोनेकी मछलीकी परछाई पृथ्वीपर रक्खे हुए तेलके कटोरेमें देखकर ऊपरको तीर चलाकर मछलीकी आंखमें निशान लगा याथा पर प्रतिष्ठित वंशावली न दिखला सकनेके कारण द्रौपदीको न विवाहसका.

कल्याणवर्म्मा (ज्योतिषकार) होरा शास्त्रमें सारावली नाम बहुत बडी पुस्तक इनकी रचीहै–ये रीवांके बघेलवंशी राजाओंके मूल पुरुष थे और हंटर साहिबके लेखानुसार स. ई. ६१५ में रीवां में राज्य करतेथे–इनके बापका नाम व्याघ्रदेव था–देवग्राममें इनकी राजधानी थी.

कल्हण पंडित (कश्मीर राजतरङ्गिणीके कर्त्ता) इनके पिता चम्पक कश्मीर दर्बारमें मंत्रीथे-इन्होंने पांडवोंके समकालीन आदिगोनर्दसे लेकर राजा जयसिंह तकका कश्मीरका इतिहास राजतरङ्गिणीमें लिखाहै-यह ग्रंथ इन्होंने स. ई. ११४८ में सम्पूर्ण किया-नीलमत नामक ग्रंथ भी इन्हींका बनाया हुआहै- कश्मीर राजतरङ्गिणीका दूसरा भाग जोनराजे बनाया और तीसरा भाग पं. श्रीवरने स. ई. १४७७ में सम्पूर्ण किया-चौथा भाग प्राज्ञभट्टने बादशाह अकबरके वक्तमें लिखा-कल्हणजीने राजतरङ्गिणीके लिखनेमें ११ प्राचीन इतिहास ग्रंथ तथा अनेक दानपत्र अनुशासनपत्र और शिवालय आदिकी लिपी भी देखीथीं-इनके रचे ग्रंथोंके देखनेसे प्रतीत होता है कि ये बड़े उद्धत और अभिमानी थे और गवेषणा इनकी अत्यंत गंभीरथी. इनके मतानुसार ३५० वर्ष कलियुग बीतने पर महाभारतका युद्ध हुआ था.

कश्यप-इनकी गणना सप्त ऋषियों तथा. १० प्रजापतियोंमें है-ऋग्वेदकी ऋचाओंमें इनका नाम आया है-एक ज्योतिष सिद्धांत इनका बनाया प्रसिद्ध है-कश्यपमेरु जिसका अपभ्रंश कश्मीर है इन्हींने बसाया. दक्ष प्रजापतिकी १३ कन्यायें इनको विवाही गई थीं जिनसे बहुत संतति उत्पन्नहुईथी इनका कथन है कि " क्षमा धर्म है, क्षमाही यज्ञ है क्षमाही तप है और क्षमाहीसे यह जगत स्थिर है".

कात्यायन वररुचि (पाणिनीय सूत्रोंके वार्तिककार). प्रोफेसर मैक्स मूलरके मतानुसार ये स. ई. से प्रायः ३५० वर्ष पूर्व मगधदेशाधिपति महाराज नन्दके दर्बारमें मंत्रीरहे-ये कतव ऋषिके वंशमें थे. निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं:-

ऋग्वेदकी अनुक्रमणी, ऋग्वेदीय श्रौत सूत्र २६ अध्यायमें, पाणिनीय वार्तिक, कर्मप्रदीप, कात्यायनस्मृति, सामवेदीय गृह्यसूत्र, अथर्वणकारिका, कात्यायनी तर्पण,

कात्यायन (धर्मसूत्रकार). इन्होंने सूत्ररचनाके अत्यंत प्राचीन समयमें कतक ऋषिके वंशमें उत्पन्न होकर धर्म सूत्र रचेथे.पश्चात् इन्हीं धर्म सूत्रोंके आशयपर कात्यायन वररुचिने कात्यायन स्मृति रची शुक्लयजुर्वेदकी माध्यंन्दनीशाखाका प्रातशाख्य भी जिसमें शब्दोच्चारणके नियम हैं इन्हींका बनाया हुआ है-

कार्नवालिस (मार्कुइस आफ कार्नवालिस) Marquis of Cornwallis) इंग्लैंड द्वीपवर्ती एटन और कैम्बृजके कालिजोंमें इन्होंने विद्या पढी-स. ई. १७५८ में अङ्गरेजी सेनामें कप्तानके पदपर नियत हुये. स. ई. १७६२ में लफटन्ट कर्नेलका ओहदा पाया। और निज पिताके मरनेपर अर्ल कार्नवालि

सकी पदवी प्राप्त की—स० ई० १७७० में कोटाधीश हुये और सात वर्ष बाद अमेरिकाके युद्धमें सेनापति नियत कर्के भेजे गये वहां इन्होंने बड़े २ वीरताके काम किये इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर स० ई० १७८६ में बृटिश गवर्नमेंटने इनको हिंदोस्तानका गवर्नरजेनरल तथा कमांडर-इन-चीफ नियत कर्के भेजा हिंदोस्तान आकर इन्होंने बङ्गलौर विजय किया और मैसोरके नवाब टीपूसुलतानको परास्त किया—इसके बाद इंग्लैंडको वापिस गये और मार्कुइसकी पदवी पाई—स०ई० १८०४ में दूसरी दफे गवर्नर जनरल नियत होकर हिंदोस्तान आये पर दूसरीही साल ६७ वर्षकी उम्रमें मर गये.

कालिदास—(कविकुलचक्रचूडामणि). लोकविदित है कि कालिदासकी कविता जगतसाहित्य में अनुपम सामग्री है—किसी महात्माने कहा है कि 'कालिदासकविता. नव वयः सम्भवन्तु मम जन्मजन्मनि" इन्होंने अपने कवित्व शक्ति और नाटकगत—चरित्र चित्रण तथा अन्यान्य सौंदर्य और कल्पनाकी सृष्टिद्वारा भूमंडलके समस्त कविकुल चक्रमें उच्चासनको पाया है—वैज्ञानिक, राजनैतिक तथा सामाजिक तत्त्वोंके दर्शानेमें कोई कवि इनकी बराबरी नहीं करसका-उपमाके विषयमें प्रसिद्ध ही है कि "उपमा कालिदासस्य" मानवचरित्रोंको तथा चित्तके सूक्ष्म भावोंको इन्होंने ऐसी स्पष्ट रीतिसे दरसायाहै कि मानों चरित्र खैंचकर प्रत्यक्ष दिखा दिया है—जो ग्रंथ कालिदास प्रणीत मिलते हैं वे कालिदास नामके ३ कवियोंने भिन्न २ समयमें होकर बनाये थे और उपरोक्त कथन उन तीनोंकी कवितापर घटता है—कालिदास नामके ३ कवियोंका होना विक्रमी संवतकी १२ वीं शताब्दीमें होनेवाले राजशेखर कविके निम्नस्थ श्लोकसे सिद्ध होता है:—श्लोक—"एकोपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्। शृंगारे ललितोद्गारे कालिदास त्रयी किमु." इनमेंसे प्रथम कालिदास तो विक्रमादित्य सकारीकी सभाके अलंकार थे और कश्मीरके रहिनेवाले किसी सामान्य ब्राह्मणके घर जन्मे थे. लड़कपनमें कुछपढ़ालिखा न था केवल एक राजकन्यासे विवाह हो जानेके कारण अमोल विद्याधन इनके हाथ लगा—कहते हैं कि राजा शरदानन्दकी कन्या विद्युत्तमाका प्रण था कि जो शास्त्रार्थमें मुझे हरादेगा उसी को मैं बरूंगी—दूर २ से बडे २ पंडित आये पर सब हारे—निदान लज्जित हो पंडितोंने एका किया और किसी निरक्षर मूर्खसे राजकुमारी की शादी करादेनेका विचार ठाना—यह ठान उन्होंने एक अत्यंत मूर्खको तलाश किया और उसको समझा दिया कि राजकुमारीके सामने कुछ बोलना नहीं, जो बातकरना हो सो संकेतद्वारा करना इस प्रकार समझाय वे उस मूर्खको सभामें लाये और राजकुमारीसे कहा कि ये हमारे गुरु आपसे शादी करने आये है, पर आज कल्ह मौनी साधे हुये हैं, इसलिये संकेतद्वारा शास्त्रार्थ करलीजिये. राजकुमारीने इस अभिप्रायसे कि, एक परमेश्वर है एक उंगली

बताई-मूर्खने समझा कि, मेरी एक आँख फोडनेको कहिती है एवं उसने २ उंग लिये इस विचारसे दिखलाई कि, मैं तेरी दोनों फोड़ देऊंगा. परंतु पंडितोंने इसमें ऐसे २ अर्थ निकाले कि राजकुमारीको हारमाननीपड़ी-दोनोंका विवाह होगया और राजभवनमें रहिने लगे-ये ग्रामीण मूर्ख बोलता नहीं था. और पशु समान रतिक्रीड़ा करता था बहुत दिनोंतकै राजकुमारी पर इसका कुछ भेद विदित नहीं हुआ एक दिन रातको सोतेपर ऊंटकी चिल्लाहट सुन राजकुमारी चौंक उठी और पूंछने लगी "क्या है?"मूर्ख जो किसीशब्दका भी ठीक उच्चारण नहीं करसकता था अपने मौनव्रतको भूल कहिने लगा उट ! उट ! ! उट ! ! ! तब तो पंडितोंका छल राजकुमारीको मालूम हुआ और उसने क्रोधमें आ मूर्खका बड़ा निरादर किया मूर्ख भी लज्जित हो आत्मघात करने लगा पर कुछ समझसोच विद्या पढने चल दिया-विद्या पढ पंडित हो घरको लौटा, जब मकानपर आया तौ किंवाड खोलनेके लिये अपनी स्त्रीको पुकारकर कहा "अनावृतकपाटं द्वारंदेहि" विद्वत्समाने पतिकी बोली पहिचान पूंछा "अस्तिकश्चिद्वाग्विशेषः" अर्थात् क्या अब कुछ बोलनासीख आये. कालिदासजीने निजपत्नीका प्रश्न सुन उसका एक २ पद ग्रहण करके कुमारसम्भव, मेघदूत और रघुवंश नाम काव्य बनाये. पश्चात्, कालिदासजी उज्जैनके राजा विक्रमादित्य सकारिके दर्बारमें आये और बड़ी प्रतिष्ठाके भागी हुये.काश्मीरके राजा प्रवरसेन के निमित्त इन्होंने महाराज विक्रमकी आज्ञासे "सेतुबंधु" नामक काव्य बनाया.

कालिदासद्वितीय-(अभिज्ञानशाकुन्तल आदि नाटकों के कर्त्ता).इनके निम्नस्थ श्लोकसे विदित होता है कि ये नाटकोंके कर्त्ता कालिदास और भवभूति कवीश्वर एकही समयमें हुये।श्लोक-"नाटिके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेववा। उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते ॥" भवभूति कवीश्वरका वि० सं० की छठी व सातवीं शताब्दीमें होना इतिहासोंसे सिद्ध है, इसी समय उज्जैनकी गद्दीपर महाराज विक्रमादित्य हर्ष राज्य करते थे जिससे प्रतीत होता है कि ये द्वितीय कालिदास महाराज विक्रमादित्य हर्षकी सभाके अलंकार थे-निम्नस्थ नाटकग्रंथ इनके रचे हुये हैं:-शकुन्तला, विक्रमोर्वशी, मालविकाग्निमित्र, नलोदय, हास्यार्णव और ऋतुसंहार अभिज्ञानशाकुन्तल सब नाटक ग्रंथोंमें सर्वोत्तम है, उसके नाटकत्वकी रचनाकी तुलनामें कालिदास भूमंडलमें एकही हुये इनके नाटकोंमें ग्रीक देशीय नाटकोंका आकारगत सौंदर्य, जर्मन देशीयनाटकोंकी प्रणालीगत आध्यात्मिकता और फरासीसी तथा इंग्लैंडदेशीय नाटकोंका कार्यगतजीवन्तभाव पूर्णतया पाया जाता है, इनके नाटक पात्र सब कर्तव्यपरायण, धीर,* स्थिर और नीतिनिपुण हैं-विक्रमादित्य हर्षके दर्बारमें

नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडित थे जिनमें से कालिदासजी सर्वोत्तम गिने जाते थे, विक्रमने कालिदासको अध्यक्ष नियतकर्के सब प्राचीन ग्रंथोंको ढुंढवाकर शुद्ध श्रेणीबद्ध कराया था–

कालिदास तृतीय–महाराज भोजके दर्बारमें थे, भोजने उज्जैनकी गद्दी पर वि० स० की १० वीं शताब्दीमें राज्य किया, भोजकी सभामें जो कोई नया श्लोक बनाकर लाता था १लक्ष मुद्रा इनाम पाता था, परंतु श्लोक का नया ठहिराना कठिन था, क्यों कि दर्बारके पंडित कहिदेते थे कि इस श्लोकको तौ हम जानते हैं. यह देख कालिदासने २ नये श्लोक बनाय राजाकी भेंट किये, उनका आशय यह था, कि महाराज आपके पिताने जो रत्न मुझसे कर्ज़ लिये थे वह दीजिये नहीं तौ इन श्लोकोंको नया ठहिराकर मुद्रादानदीजिये. राजाने श्लोक सुन दर्बारके पंडितोंसे पूंछा कि कालिदासको क्या उत्तर देना चाहिये. एक पंडितने कहा कि "महाराज, आपके पिताके हस्तलिखित एक ग्रंथमें यह लेख है कि हमने हमारी नदीके तीर उतरते आषाढ दुपहरके वक्त बगीचेके मध्य ताल वृक्षपर अनेक रत्न रक्खे हैं सो हमारे पुत्रको बड़े होनेपर मिलेंगे, सो आप कालिदाससे कहदीजिये कि पेंड़पर रक्खे हुये स्वर्गवासी महाराजके रत्न ले लेवें" भोज यह सुन प्रसन्न हुआ और निज पिता का लेख कालिदासको देकर कहा "जाओ यह रत्नलेलो." कालिदास उस कविताका आशय समझ चलदिये और वृक्षकी जड़मेंसे २ कलस २ कोटिरत्नोंसे भरे खोदलाये. भोजने पूंछा कि कवितामें तौ "वृक्षके ऊपर रत्न रक्खे हैं" यह लेख है, आपने जड़ कैसे खोदी कालिदासने उत्तर दिया कि, मध्याह्नके समय चोटीका साया जड़पर पड़ता है इसलिये जड़को खोदा, भोजने प्रसन्न हो वे सब रत्न कालिदासको देदिये, पश्चात् भोजने कालिदासको अपने दर्बारके मुख्य पंडितोंमें नियत किया और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की, इनका स्वभाव प्रहसनयुक्त था जिसके अनेक उदाहरण मिलते हैं. निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हैं:– श्यामलादंडक, शृंगारतिलक, श्रुतबोध, असज्जनवर्जन और प्रश्नोत्तरमाला.

कालिदास त्रिवेदी–(भाषाकवि) ग्राम बनपुरा (अन्तरवेद) के रहनेवाले थे. हरिद्वार और प्रयाग के बीचका मुल्क अन्तरवेद कहलाता है. पहिले पहिल बादशाह औरंगजेबके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणी देशोंमें बहुत दिनोंतक रहे, पश्चात् जोगजीतसिंह जम्बूनरेशके दर्बारमें गये और "वधूविनोद" नाम अद्भुत ग्रंथ बनाकर उनकी भेंट किया. "कालिदासका हज़ारा" नामक ग्रंथभी इन्हींका संग्रहीत है, एक और ग्रंथ जंजीराबंद इनका बनाया हुआमिलता है, इनके पुत्र कवींद्र उदयनाथ और पौत्र कवि दूलहभी भाषाके सुकवि हुये ह जन्म इनका वि० स० १७४९ में हुआ.

कालिदास-(ज्योतिषी). "ज्योतिर्विदाभरण" नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्त्ता वि, सं० की १४वीं शताब्दीमें हुये, ज्योतिर्विदाभरणहीके एक श्लोकमें विक्रमके दर्बारके नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडितोंके निम्नस्थ नाम लिखेहैं:-कालिदास-क्षपणक, धन्वन्तरि, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहर और वररुचि-

कालीप्रसाद मुंशी--(कायस्थ पाठशाला प्रयागके संस्थापक). इनके बाप शहिजादपुर जिला इलाहाबादके रहिने वाले जौनपुरमें नौकर थे-कालीप्रसादका जन्म स० ई० १८४० में जौनपुरमें हुआ बच्चपनहीसे बुद्धितीव्र थी और बड़े होनहार माळूम होते थे, १२ वर्षकी उम्रमें फारसीकी शिक्षा सम्पूर्ण करके फजीलतकी पगड़ी पाई, इसके बाद कई वर्षतक संस्कृत पढ़ी और बनारसमें रह पश्चात अव्वलदर्जेकी वकालतका इम्तिहान पास किया और लखनऊमें रहिकर वकालत करने लगे स० ई० १८८६ में बीमार होकर दिल्ली गये,इलाज बहुत हुआ पर वक्त आ पहुँचा था। इनके उद्योगसे कायस्थ जातिमें निज सुधारकी उत्तेजना उत्पन्न हुई, कायस्थ सभायें स्थापित हुईं. स० ई० १८७३ में "कायस्थसमाचार" नामक कौमी पत्र इन्होंने जारी किया और "कायस्थपाठशाला" नामक स्कूल प्रयागमें खोला,"कायस्थ ट्रेडिङ्ग कम्पनी" लखनऊमें स्थापितकी और कायस्थोंको क्षत्री सिद्ध करणार्थ "कायस्थ एथनोलोजी" नामक ग्रंथ रचा अंतमे उम्रभरकी कमाई प्रायः ६ लाख रुपये कायस्थसमाचार तथा कायस्थपाठशालाकी भेंटकर दिये जिससे यह सदैव स्थिर रहेंगे.

काशीनाथत्र्यम्बकतैलङ्ग--(भारतवर्षीय प्रसिद्ध राजनीतिविशारद). ये महाराष्ट्र शेणवी ब्राह्मण स० ई०१८५० में पैदा हुये १७वर्षकी उम्रमें बी. ए. पास किया और बादको शीघ्रही एम्. ए. तथा. एल. यल. बी. की परीक्षा उत्तीर्णकी-स० ई० १८८२ में एडवोकेटका इम्तिहान पासकिया और वकालतशुरू की संस्कृतके पूर्णविद्वान और धर्मशास्त्रके प्रसिद्धज्ञाता थे-स० ई० १८८९ में बम्बई हाईकोर्टके जजकेपदपर नियुक्त कियेगये बम्बई यूनीवर्सिटी के फेलो थे सुप्रीमकौंसल कलकत्ताके मेम्बर होजाते पर पसंद नकिया. उपदेशदेने और उनको छपवानेका इनको बड़ा शौक था. इनकी वक्तृताकी धूम यूरूपतक मचगईथी. इन्होंने भगवद्गीता, भर्तरीशतक, और मुद्राराक्षसनाटक इत्यादि संस्कृत ग्रंथोंका अनुवाद अङ्गरेजीमें किया. अनेक सभाओंके मेम्बर, सेक्रेटरी तथा प्रेसीडेन्ट रहे--शिक्षासंम्बधी कमीशनके मेम्बर रहने के कारण स० ई० १८८३ में सी. आई. ई. की उपाधि पाई--सनातनधर्म पर आरूढरहे और युवावस्थाही में परलोकगामी हुये--इन्हींका छोटा नाम के. टी. तैलङ्ग है.

कुतुबुद्दीन ऐबक (दिल्लीका पहिला मुसल्मानबादशाह) शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीका गुलाम था और हिंदोस्तानमें उसके राज्यका नायब था.गोरीके मर-

ने पर इसने दिल्लीमें अपनी राजधानी नियत की और हिंदोस्तानका सुलतान बनबैठा सब सर्दार तथा सिपाही सिंधसे लेकर बंगालतक इसका हुक्म मानतेथे और इससे प्रसन्न रहितेथे ये बड़ा बहादुर, चतुर सेनापति था, स० ई० १२१२ में मरा, दिल्लीमें कुतब मसजिद तथा कुतुबकी लाट इसीकी बनाई हुई हैं. कुतुब मसजिदके खम्भोंपर अनेक देवताओंके चित्र खुदे हुये हैं और उसके दर्वाजेपर अंकित है कि २७ मंदिरोंको तोड़ उन्हींके मसालेसे यह मसजिद बनाई गई थी. कुतुबकी लाट दिल्लीसे ११ मीलकी दूरीपर है, पृथ्वीकी सब लाटोंमें ऊंची है. प्रथम इस लाटको पृथ्वीराजने बनवाना आरंभ किया था, परतु मुसल्मानोंकी चढाईके कारण वह पूरी नहोसकी कुतबुद्दीनने निज स्वामी शहाबुद्दीनगोरीकी विजयका स्मारक चिन्ह स्थापनकरणार्थ इस लाटको ऊँचाकराके उसपर अपने स्वामीका नाम खुदवा दिया.

कुंभनदास–(भाषाकवि, अष्टछाप). गोवर्धनके पास जमुनावते गांवके रहिनेवाले ब्राह्मण थे. श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे. और ऐसे सुकवि थे कि, अष्ट छापमें गिनेगये. इनके ७ बेटे थे जिनमेंसे चतुर्भुजदासजी अच्छे कवि थे और अष्टछापमें गिने गये थे. वल्लभाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधराकर कुंभनदासको कीर्तनियां नियत किया था. ये अत्यंत दरिद्री और त्यागी थे. जयपुरनरेश मानसिंहने इन्हे बहुत कुछ देना चाहा था परंतु इन्होंने कुछ भी ग्रहण नही किया था. एक समय इनके गानेकी प्रशंसा सुन बादशाह अकबरने इनको फतेपुरी सीकरी बुलाया, वहा जाय इन्होंने निम्नस्थ पद गाया थाः–

भक्तनको कहा सीकरी सों काम ।
आवत जात पनहियां टूटी बिसरगयो हरिनाम ।
जिनको मुख देखत दुख उपजत तिनको करनी पड़ी सलाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर बिनु और सबै बे काम ॥

कुंभनदासजी बहुत वृद्ध होकर मरे थे ॥

कुमारिलभट्ट–(मीमांसादर्शनके आचार्य) इनका समय वि० स० ६४७ से ७०७ तक प्रतीत होता है. विहारके रहिने वाले ब्राह्मण थे. जैन तथा बौद्ध मतवादियोंको इन्होंने अनेक दफे शास्त्रार्थमें परास्त करके उनके मतकी मूल उखाड़दी और वैदिक मतका पुनः संस्कार किया. इस महत्कार्यके बदले सब लोगोंने एक मत होकर इनको ' भट्टपाद ' उपाधि दी एकदफे भट्टपाद और बौद्ध पंडितोंमें शास्त्रार्थ ठहिरा और एक बड़े ऊंचे महिलपर शास्त्रार्थ करनेको बैठे. भट्टने अपनी तीव्रबुद्धिसे प्रतिवादियोंके युक्ति जालको छिन्न भिन्न करदिया निदान बौद्धोंने भट्टको परास्त करना असम्भव जान छतपरसे नीचे ढकेल दिया पर वे जीते और वैदिक धर्मकी धूम मची. इन्होंने मीमांसा

दर्शनपर वार्तिक भाष्य किया है. श्लोकरूपवार्तिक " श्लोकवार्तिक (भट्टवार्तिक)" कहिलाता है और गद्यरचनायुक्त वार्तिक "तंत्रवार्तिक" कहाता है. पुरी, द्वारका, सेतुबंधरामेश्वर इत्यादि तीर्थोंमे भी इन्होंने भ्रमण किया था. प्रभाकर तथा मुरारि मिश्र मीमांसादर्शनके विद्वान् इनके शिष्य थे भट्टपाद अंतमें अग्निमें प्रवेश करके मरे थे.

कुम्भकरणसिंह-(महाराना चित्तौड़) निज पिता राना मोकलदेवके रणशाई होनेपर स० ई० १४१९. में चित्तौड़की गद्दीपर बैठे. उस समय मालवा तथा गुजरातके राजे बड़े प्रबल थे. दोनोंने मिलकर राना पर चढ़ाईकी, रानाने दोनोंको हराया और गुजरातके मुसल्मान राजा महिमूदको कैद कर लिया परंतु थोडेही दिनों बाद बहुत कुछ धन देकर छोड़ दिया और निज उदारताका परिचय दिया-मेवाड़में कुम्भमेरुका किला तथा ३१ और केले बनवाये और आबू पहाड़की चोटीपर ८ लाख रुपयेके खर्चसे ऋषभदेवजीका मंदिर बनवाया. चित्तौड़में भी इनका बनवाया एक बहुत बडा मंदिर अब तक है जिसमें इनकी अष्टधातुकी मूर्ति रक्खी हुई है, ये भाषाके सुकवि थे. गीत गोविंदका तिलक भाषा पद्यमें इनका बनाया ललित है-संक्षिप्त ये बड़े धीर वीर, पराक्रमी विद्वान् और अनुभवशील पुरुष थे, इन्होंने अपने देशके शत्रुओंको परास्तकरके अपने राज्यको पुष्ट किया-स० ई० १४६९. में इनका पुत्र ऊदासिंह इनको मारकर गद्दीपर बैठा.

कुरु--(चंद्रवंशी राजा). धृतराष्ट्र तथा पांडू इन्हीके वंशमें हुये-धृतराष्ट्र के १०० पुत्र इन्हीके नामसे कौरव कहिलाये.

कुश--महाराज रामचंद्रजीके ज्येष्ठ पुत्र थे-कुशावतीका राज्य इनको मिला था-इनके वंशोत्पन्न क्षत्री कछवाह कहिलाते हैं और जयपुर तथा अलवरमें अबतक राज्य करते हैं-

कूर्मदेवी--पट्टनकी राजकुमारी चित्तौड़के राजा समरसिंह (समर्सी) को व्याही थी-राना समर्सीकेगरके संग्राममें जो स. ई. ११९२ में शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज दिल्लीनरेशके बीच हुआ, मारागया-पृथ्वीराजकी बहिन पृथा बाई भी समर्सीको व्यवाहीथी-कूर्मदेवी पतिके साथ सती होना चाहती थी परंतु पुत्रके बालक होनेके कारण न होसकी. पुत्रकी बाल्यावस्थामें राजकाज बड़ी सावधानीसे सम्हाला और जयपूरके समीप कुतबुद्दीन शाहको घायल किया-

केशव (ज्योतिषकार). वि. सं. की १६ वीं शताब्दीमें हुये-इनके पिता कमलाकरजी पश्चिमसमुद्रतीरवर्ती नन्दीग्रामके रहिनेवाले थे-वैद्यनाथ ज्योतिषी इनके गुरु थे और प्रसिद्ध पं. गणेशदैवज्ञ इनके पुत्र थे-निम्नस्थ ग्रंथ इनके

बनाये हैं:--ग्रहकौतुक, वर्षग्रहसिद्धि, जातकपद्धति. ताजकपद्धति, सिद्धांत-वासनापाठ, मुहूर्ततत्त्व, कायस्थादिधर्मपद्धति, कुण्डाष्टकलक्षणम्, गणित-दीपिका और तिथिसिद्धि.

केशवचंद्रसेन (ब्रह्मोधर्मप्रवर्तक) स. ई. १८३८ में प्यारी मोहन सर्कारके घर कलकत्तेमें जन्मे. बचपनहीसे दयालू थे हिन्दूकालिज कलकत्तामें प्रथम श्रेणीतक शिक्षापाई थी. स्वभावके गंभीर थे, बोलते कम थे, इनकी वक्तृताकी बड़े २ लोग प्रशंसा करते थे, २० वर्षकी उम्रमें इन्होंने ब्रह्मोसमाजमें नाम लिखाया और एक वर्ष पश्चात् ब्रह्मो समाजके मंत्रीके साथ सङ्गलद्वीपिको गये–पश्चात् इन्होंने अपना तन मन पूर्णरीतिसे ब्रह्मोसमाजकी उन्नति करनेमें लगाया-स. ई. १८६२ में भारतवर्षीय ब्रह्मोसमाजोंके प्रधान आचार्य्यके पद पर नियत किये गये फिर तो पंजाब, बम्बई, मदरास, बङ्गाल प्रांतोंमें भ्रमण करके इन्होंने हज़ारों व्याख्यान दिये जिससे ब्रह्मोधर्मका बहुत कुछ प्रचार हुआ. स. ई. १८७० में इग्लैंड गये और सामाजिक नियमोंपर उपदेश दिये वहां सब लोगोंने इनकी प्रतिष्ठाकीमहारानी विक्टोरियासेभी मुलाकात हुई. महाराजा कूचबिहारके साथ इनकी बडी लडकीका विवाह हुआथा.स.इ. १८८४ में परलोकगामी हुये.

केशवदास (भाषाकवि). इनके दादे मिश्रकृष्णदत्त तथा इनके बाप काशीनाथ, टेहरी (बुंदेलखंड) के रहिनेवाले सनाढ्यब्राह्मण थे और उड़छानरेशके दर्बारमे उनका आदर होता था. केशवजी स० ई० १५६७ में पैदा हुये, और बड़े होकर मधुकर शाह उड़छानरेशके दर्बारमें आये. मधुकरशाहके बाद इंद्रजीतसिंहने गद्दीपर बैठकर इनको २१ गाव संकल्प करके दिये, तबसे ये कुटुम्बसहित उड़छामें आवसे. भाषाकाव्यके दशोअङ्ग पहिले पहिल इन्होंने "कविप्रिया" नामक ग्रंथमें वर्णन कियेथे–इनके रचे ग्रंथोंको देखनेसे ज्ञात होताहै कि ये अलंकार, लक्षणा, व्यञ्जना, कोष इत्यादि काव्यके अङ्गोंमें विज्ञ थे. उड़छानरेश इन्द्रजीतके पास 'प्रवीणराय' नामक पातर बडी सुंदरी तथा कविता करनेमें परमचतुर थी. अकबर बादशाहने इसकी प्रशंसा सुन अपने दर्बारमें तलब किया परंतु वह दर्बारमें हाजिर न हुई इसपर क्रुद्ध हो अकबरने इन्द्रजीतपर १ करोड़ रुपया जुर्माना किया. इस अवसरपर केशवदासजीने अकबरके मंत्री राजा बीरबलको निम्नस्थ सवैया सुनाकर जुर्माना माफ करा दिया, पर प्रवीणरायको दर्बारमें हाजिर होना पड़ाः–

सवैया–पावक,पक्षि, पशू, नग, नाग, नदी, नद, लोक रच्यो दश चारी ।
केशवदेव अदेवरच्यो नरदेवरच्यो रसना न निवारी ।

कैनरनाह बली बरवीर भयो कृतकृत्य महाव्रतधारी ।
दैकर्तार पन आपन ताहि दियो कर्तार दो ऊकरतारी ।

केशवदासजीके बनाये ग्रंथोंका आशय कठिन है और वे यह हैं-कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचंद्रिका, विज्ञानगीता और रामालंकृतिमंजरी.

केशवदासकी कविता अर्थगांभीर्यके लिये प्रसिद्ध है.

दो०-उत्तम पद कवि गगको, उपमाको बलवीर ।
केशव अर्थ गंभीरको, सूर तीन गुणधीर ॥

दो०-सूर सूर्य तुलसी शशिन, उड़गन केशवदास ।
अबके कविखद्योत सम, जहं तहं करत प्रकाश ॥

प्राचीनलोगोंका कथन है कि, "रसिकप्रिया" के किसी कवित्तके एकचरण "मखतूलके झूल झुलावत केशव भानु मनौं शनि अंकलिये" में केशवजीने असम्भव उपमा लिखी है, जिसके कारण राधिकाजीने इनसे स्वप्नमें एकदिन कहा कि, तुम्हारी प्रेतोंकीसी बुद्धि है, इसके बाद केशवजीने उड़छेमें प्रेतयज्ञ किया और कुछ काल पीछे मरकर प्रेतहुये. बिहारीलाल भाषाकाव्य सतसईके कर्ता इनके पुत्र थे.

केशवार्क-(ज्योतिषी) भारद्वाज गोत्री अवदान्य ब्राह्मण जनार्दनजीके प्रपौत्र थे. श्रियादित्य इनके दादा नर्मदातटके वासी थे. इनके पिताका नाम राणग था. "विवाहवृंदावन" तथा "कर्णकंठी" नाम ज्योतिषग्रंथ इनके रचे हुये हैं. स. ई. १२४२ में जन्मे थे.

कैकेयीरानी-अवधनरेश दशरथजीकी सबसे छोटी रानी, राजा अश्वपति केकयाधीशकी राजकुमारी थी. भरतजीका जन्म इसके उदरसे हुआ. ये जैसी रूपलावण्यमें सुंदर थी वैसीही बुद्धिमती थी. अन्यरानियोंकी अपेक्षा राजाकी इसपर कुछ विशेष कृपा थी. एकसमय रणभूमिमें रथका पहिया निकलनेसे रोककर इसने निजपतिकी प्राणरक्षा की थी. जिस पुरस्कारमें दशरथजीने इसको कोईसे २ बचन मांगनेकी आज्ञा दीथी और इसने कहदिया था किसी और अवसरपर देखा जायगा. पूर्वोक्त जब दशरथजीने रामचंद्रजीको युवराज नियत करना चाहा तब इसने मंथरादासीके बहकानेसे आकर राजासे उपरोक्त दोनों बचन इसतरह पूरे करनेकी हठकी कि भरतको युवराज और रामचंद्रको वनोवास दियाजाय राजाने केकेयीको, जो इससे पहिले कौशल्यादि रानियोंमें कुछ भेद नहीं मानती थी, बहुत समझाया पर उसने एक न माना. दासीकी सिखावनका ऐसा प्रभाव उसके चित्तपर पड़ा था कि उसने साक्षात कठोरताका रूप धारण कर लिया और स्त्रियोंके सहज स्वभावपर आगई. राजा सत्यप्रतिज्ञ था एवं उस

रामवियोगमें प्राणत्यागना स्वीकार किया पर बचन न तोड़ा कैकेई भी अंतमें अपने कर्तव्य पर बहुत पछिताई परंतु कलङ्क का टीका उसके माथे अमरहो चुका था. भरतजीने निजमाताको उसके कर्तव्यपर अनेक कुवाक्यकहे और जीतेजी उससे कभी बात नहीं की यथा तु० कृ० रामायणे गीतावली–

"कैकेई जबलौं जिअतरही–भरत भूल मुख सन्मुख कुछ कबहू,न कही".

कैकेईके चारित्रसे यही नीति निकलती है कि कुसंगतिमें पड़कर सज्जन भी दुराचरण करने लगते हैं–

कुसंगतिका सर्वथा त्याग करना उचित है.

कैनिङ्ग (लार्डजौर्ज कैनिंग Lord George Canning) स. ई. १८१२ में इंग्लैंडमें पैदा हुये–१८३७ मे माताका देहांत होनेपर नायट कौंट" की पदवी पाई. स. ई. १८४७ में विदेशी मामलातके सीक्रेटरी–आफ–स्टेटके पद पर नियुक्त किये गये पश्चात जंगलोंके कमिश्नर तथा पोस्टमास्टर जेनरल रहे–स. ई. १८५६ में लार्डडलहौसीके पश्चात् हिंदोस्तानमें गवर्नर जेनरल होकर आये–सन ५७ का गदर इन्हींके शासनकालमें हुआ स. ई. १७५८ में इंग्लेंडको लौटगये और "अर्ल" की पदवी पाई–गदरकी चिन्ता के कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था एवं४वर्ष और जीकर स.ई.१८६२ में परम धामको सिधारे. बड़े न्याई थे, गदरके बाद सब अंगरेज यही पुकारते थे कि हिंदोस्तानियोंको जबर्दस्ती ईसाई करलेना चाहिये अधिकांशको प्राणदंड देना चाहिये पर इनके न्यायके प्रभावसे हिंदोस्तानियोंके धर्ममें कुछ हस्ताक्षेप नहीं किया गया और केवल उन्हींको मौतकी सजा मिली जो अंगरेजोंके वधकरनेमें शरीक थे.

कैय्यट पंडित (भाष्यप्रदीपके कर्ता) कश्मीरवासी जैय्यट उपाध्यायके पुत्र थे, विद्या इन्होंने अपने बड़े भाई मम्मटसे पढ़ीथी–यजुर्वेदभाष्यकार·प०औवट भी इनके सहोदर थे–वि०सं०की ११ वीं शताब्दीके अंतमें तथा १२ वीं शताब्दीके आरंभमें हुये–व्याकरण महाभाष्यपर भाष्यप्रदीप नामक व्याख्या इनकी बनाई हुई है.

कौण्डभट्ट (संस्कृत वैयाकरणी). महाराष्ट्र ब्राह्मण काशीवासी थे. इनका समय भट्टोजीदीक्षितके पीछे है क्योंकि इन्होंने भट्टोजी दीक्षितकृतकारिका "वैय्याकरणभूषण सार"नाम ग्रन्थपर टीका रचा है -२० और ग्रंथ भी इनके बनाये हैं जो कोण्डविंशति कहिलाते है। न्यायशास्त्रपर भी एक बृहत ग्रंथ "पदार्थ-दीपिका" इन्हींका बनाया हुआ मिलता है.

कोपरनी कस (Copernicus) प्रुशिया वासी एक ज्योतिषी हुये हैं इनका चर्चा विशप था. प्रथम कोपरनीकसने डाक्टरी सीखी और फिर गणित विद्या सीखने की ओर विशेष ध्यान दिया. तदुपरांत कुछ काल रोम (इटेली) में गणिताध्यापक रहे अंतमें अपनी जन्मभूमिको लौट आये और ग्रहोंकी चालके विषयमें एक बहुत बड़ी पुस्तक रची. इस पुस्तकके छपनेसे २ घंटे बाद मरगये.

स. ई. १४७३ में जन्मे

स. ई. १५४३ में मरे

कोलम्बस (Christopher Columbus). चारसौ वर्ष पहिले पृथ्वीके पूर्वीगोलार्द्ध अर्थात् एशिया, यूरुप और अफरीकाके रहिनेवाले यह नहीं जानते थे कि अटलांटिक महासागरके दूसरी ओर भी दुनियां है इस वस्तीको सबसे पहिले कोलम्बसने ढुंढा और इसीसे इसको नई दुनियां कहिते हैं-कोलम्बस इटेली देशके जेनोआ नगरका रहिनेवाला था, इस्का बाप कंगाल था इसलिये लड़कपनमें इसको ठीक शिक्षा नहीं मिली. कुछ तरुण होकर कोलम्बस पैरिसमें आया और वहां उसने लैटिन भाषा, गणित तथा भूगोल और खगोल विद्या सीखी-पढना छोडनेके बाद मल्लाहीका काम सीखा और धीरे २ एक जहाजका मालिक होगया.स० ई० १४७० में पुर्तगालकी राजधानी लिसबनमें आया और अपना विवाह इटेलीनिवासी एक जहाजके कमांडरकी लडकीसे किया-उनदिनों यूरूपके लोगोंको हिंदोस्तानका ठीक पता नहीं मालूम था केवल अनुमान करते थे कि हिंदोस्थान अटलांटिक महासागर से पश्चिम में है. निदान कोलम्बसने कई बादशाहोंसे प्रार्थनाकी कि मुझे अपनी ओर से हिंदोस्तानका पता लगानेकेलिये भेजिये स्पेनके बादशाह फर्डीनेन्डने यह बात स्वीकारकी और ३जहाज कोलम्बसको देकर प्रतिज्ञाकी कि जितने देश तुम ढूंढ कर शासनमें लाओगे उनके तुमही वायसराय नियत किये जाओगे और उनकी आमदनी का दशांश तुमको मिलेगा-स० ई० १४९२ में बादशाहकी प्रतिज्ञा लेकर कोलम्बस जहाजका लंगड़ उठा पश्चिमकी ओर चलताहुआ चलते २ दो महीने होगये पर कोई टापू नहीं मिला तब तो मल्लाह बहुत बिगडे और कोलम्बसके मारडालनेकी चेष्टा करने लगे-कोलम्बसभी जैसी हवा देखता वैसी ही पीठ देता था, समय २ पर उनको समझाता बुझाता और धमकाता था-इसके थोडेहीदिन पीछे कोलम्बसने टापुओंके झुंडके झुंड पाये जिनमें से क्युवा तथा हेटी नामके टापू मुख्य हैं इन टापुओंसे छः मनुष्योंको साथ लेकर कोलम्बस स०ई० १४९३ में स्पेनको लौटा और बादशाहने उसका बडा आदर किया-इसप्रकार

कोलम्बसने २ दफे यात्रा और की और बहुतसे टापू ढुंढे स० ई०१४९८ में तीसरी बार गया और एक टापूमें पहुंचा जहां लोग ट्रडभिड रहेथे–कोलम्बसने उनमें मेल मिलापकराया, परंतु वहांके कुछ लोगोंने बादशाह स्पेनके पास निवेदन पत्र भेजा जिसमें कोलम्बसकी अत्यंत निन्दाकी और उसपर अनेक दोष झूंठे लगाये–इसको पढ बादशाहने क्रोधमें आकर कोलम्बसको पदहीन किया और उसकी जगह दूसरा आदमी भेजकर हुक्म दिया कि कोलम्बसके पैरोंमें बेडी डालकर हमारे पास भेजदो–यद्यपि बादशाहने कोलम्बसका मुख देखतेही उसे छुड़वादिया और बहुत कुछ इनाम दिया, पर कोलम्बसने उन बेडियोंको सावधानीसे अपने पास रख लिया और मरनेसे पहिले आज्ञादी कि इनको मेरे साथ गाड़ देना–स० ई० १५०४ में चौथी बार यात्रा की और स०ई० १५०६ में परलोकको सिधारा–कोल. म्बसके ढुंढे द्वीप अब वेस्टइन्डीज और दक्षिणी अमेरिका कहिलातेहैं कोलम्बस इन देशोंको हिंदोस्तानका भाग समझता था और इसके समयतक कोई दुसराभी नहीं जानताथा कि वे हिंदोस्तानके भाग नहीं हैं–

कौपर (विलियमकौपर. William Cowper). प्रसिद्ध अंगरेजी कवीश्वर व पत्रलेखक था. हर्ट फोर्डशायर अंतर्गत बर्खम्स्टेड नामक ग्राममें एक पादरीके घर स. ई. १७३१ में पैदाहुआ इसके दादा प्रसिद्ध जजस्पेन्सर कौपरथे–माताइसको ६ वर्षका छोड़के मरगई थी. वेस्ट मिनिस्टर स्कूलमें लैटिन ग्रीक और अंग्रेजीके प्राचीन ग्रंथ पढे और दुनियांका थोड़ासा हाल जो इसको मालूम था वह यहींकी शिक्षाका प्रभाव था. स. ई. १७५४ में कानून का इम्तिहान पास किया लेकिन वकालतका पेशा नहीं किया. स्वभाव डरपोक और वहिमी था. एकदफे किसी नातेदारकी सिफारिशसे हौस-आफ-लार्डसके क्लार्कका ओहदा पाया पर ओहदेका कठिण काम चलानेकी फिक्रसे पागल होगया. आराम होकर स. ई. १७६५ में "हनटिङ्गडन" नामक स्थानमें जा बसा. वहां रहिकर इसकी मित्रता अनविनके घरानेसे होगई. अनविन साहिबके मरजानेपर कौपर और अनविन साहिबकी मेम ओलनी नामक स्थानको उठगये. ओलनीमें रहिकर अनेक और स्त्रियांसे भी मित्रता होगई. इन्हीं दिनों ये दुबारा पागलहुआ मेम अनविनने वीमारी की हालतमें इसकी पुत्रवत रक्षाकी. आराम होनेपर मेम अनविन तथा अन्य स्त्रीमित्रोंने इसका चित्त स्थिर करनें और किसी काममें लगानेके लिये पदरचना की ओर इसको उकसाया. एवं "टास्क" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तथा छोटे २ अनेक और ग्रंथ इसने वेसुरीतानमें रचडाले–स. ई. १७८६ में ओलनीसे वेस्टनअंडरवुड नामक एक पासके गांवको उठगये और तीसरीदफे पागलहुये. यहीं स. ई. १७९६ में इसकी परम मित्र मेम अनविनका देहांत हुआ जिससे इसको बड़ा खेद हुहा. निदान ४ वर्ष शोकग्रसित जीकर स. ई. १८००

में इसने भी देहत्यागदी. ६ वर्षकी उम्रसे अर्थात जबसे इसकी माता मरी इसको सदैव किसी न किसी आपत्तिमें रहिनापडा. कभी कोई रिश्तेदार मरा कभी नौकरी छोडनापडी, कभी पागलहुआ और कभी किसी मित्रसे वियोग हुआ. बचपनहीसे इसका हाल विलक्षण था, कभी तो बिलकुल पस्त हिम्मत होजाता जिससे चित्तमें अशांति और भय फैला रहिता था और कभी इस दर्जे साहस बढ जाताथा कि सोंचने लगता था कि मौतभी मेरा कुछ नही करसकती इसके लिखे पत्रोंसे ज्ञातहोताहै कि ये साफ दिल था और बनावटका लेशमात्र भी इसमें न था. तुच्छ बातोंको जोश भरी इबारतमें लिखनेकी इसकी शक्ति असाधारण थी. इसके खतोंकी इबारत सरल सादी और मुहाबरेदार है. बहुधा स्त्रियों से इसकी मित्रता होनेके कारण लोग इसको जनानाबतातेहैं, परस्त्रियां जनानेको हिकारत करती है और मित्रता करती है तो मर्दोंसे इसलिये इसका जनाना होना सिद्ध नहीं.

कौलादेवी-गुजरातके राजा रायकरणकी परमसुंदरी रानी थी. स. ई. १२९७ मे अलाउद्दीन खिलजीने गुजरात विजय किया. इसी मारकेमें कौलादेवी उसके हाथ पडी जिसको उसने अपनी औरत बना लिया. देवलदेवी इसीकी प्रसिद्ध सुंदरी बेटी थी जो स. ई. १३०६ में गुजरातसे पकडकर आइ और अलाउद्दीनके गुलाम मलिक काफरको विवाही गइ.

कौसल्या-(महाराज रामचंद्रकी परम पूज्यमाता). इनके चरित्रोंमें धर्म और धीरजका पालन जो राम सरीखे पुत्रको वनजाते समय इन्होंने किया प्रधान है ये उत्तर कौशलके राजा रविमंतकी पुत्री थी. रविमतने अपना राज्य दशरथजीको दहेजमें दियाथा. राम चंद्रजीसे सबलोग अत्यंत प्रसन्नथे और यदि इशारा भी पाते तो तुरंत बिगडबैठते और घोर उपद्रव होजाता. पर कौशल्याजीके धर्म और धीरजके प्रभावसे कोइ उपद्रव न होने पाया क्योंकि उस नीतिनिपुण माताने यही बिचारा कि "राखौ सुतहि करौ अनुरोधू-धर्मजाय और बंधुविरोधू." कौशल्याजीमें उस सहज वैरका जो सौतोंमें आकरताहै आभामात्रभी नथी, वरन ऐसा स्नेह था कि स्त्री मात्रमें होना दुर्लभहै जैसाकि रामजीके प्रति वनोवासके अवसरपर कौशल्याजीके इस वचनसे स्पष्ट प्रतीत होताहै.

" जो केवल पितु आयसु ताता. तौ किनजाहु जानिबडि माता "
"जो पितुमातुकहेउ वन जाना. तौ काननशत अवधसमाना"

अब इस नीतिपर ध्यान दीजिये कि कौशल्याजीने निजपुत्र रामको "पितुर्दशगुणा माता गौरवेणातिरिच्यते । मातुर्दशगुणा मान्या विमाता धर्मभीरुणा" अर्थात् पितासे माताका दशगुणा गौरव और मातासे सौतेली माताका दशगुण अधिक गौरव रखनेको कितना उत्तेजित कियाहै. धन्यहै कौशल्याजीके धीरज और

नीतिनिपुणताको कि उन्होंने सीता माता सरीखी पुत्रवधूको, इतना प्रेम होतेभी कि "जीवन मूरिजिमि जुगवतरहहूं. दीपवातनहिं टारनकहहूं॥" मोहत्याग पतिव्रतधर्म निर्वाह करनेके लिये रामजीके साथ भेजादिया. कौशल्याजीका वैर की जगह सौतोंसे अत्यंत प्रेम रखना इस बातसेभी सिद्धहै कि जब सुमित्राजीने रामवनवासकी खबरसुनी तब उन्होने विकलहो निजपुत्रलक्ष्मणसे कहाकि

"तात तुह्मारि रामवैदेहीं. पिताराम सबभांति सनेही",
"जो पै सियरामवनजाहीं. अवध तुह्मारि काजकछुनाहीं"

रामके वनको बिदा होते समयकी कौशल्या महारानीकी दशा पाषाणोंके हृदयको भी टुक २ करदेनेवाली है. जब रामजी वनको जाने लगे तब कौसल्या महारानी यथा तु० कृ० रामायणे "बहु विधि विलपचरण लपाटनी-परम अभागिनि अपुहीजानी। दारुण दुसह दाह उरव्यापा-वरणि न जाइ विलाप कलापा। फिरहिदशा विधि बहुरि किमोरी-देखिहौं नयन मनोहर जोरी। सुदिन सुघटि तात कब होई जननी जिअत वदन विधुजोई.

कृष्ण (अवतार) यदुवंशी वसुदेवके घर मथुरामें भा०कृ० ८ को देवकीके उदरसे अबसे ५ हजार पहिले अवतरेथे-बाबा नन्द तथा यशोदा रानीने आपका पालन पोषण गोकुलमें रहिकर किया जिसकी कथा लोकविदित है-आपके ईश्वरत्वका आभास अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा बचपनहीसे प्रगट होने लगा था जिसका वृत्तांत भागवतादि पुराणोंमें वर्णित है-बचपनके खेलोंमें आपने अनेक ऐसे कार्य किये जो बड़े२शूर वीरोंसेभी होना असम्भव हैं. बड़े होकर आपने अपने मामु मथुराके अन्याई राजा कंसको बध किया और अपने नाना उग्रसेन को गद्दीपर बैठाया-मगधके राजा जरासन्धने अपने जामात कंसका बदला लेनेके लिये श्रीकृष्णजीपर मथुरामें चढाईकी पर परास्त होकर भागगया-एक समय अत्यंत वृष्टि हुई जिससे सब मकान बहिगये तब आपने गोवर्धन पर्वत एक उंगलीपर उठाकर उसके तले बृजवासियोंको शरण देकर उनके प्राणोंकी रक्षा की और गिरिधरधारीनाम पाया-कौरवों तथा पांडवोंसे आपकी रिश्तेदारी थी-महाभारतकी लडाई में आपने पांडवोंकी सहायता की और आपहीकी राजनीतिके प्रभावसे पांडवलोग कौरवोंकी वीर सेनासे जीतनेमें समर्थ हुये. भगवद्गीताका उपदेश इसी युद्धके अवसर पर आपनेअर्जुनके प्रति किया था-पश्चात् आप द्वारिकाको चलेगये और वहीं बस रहे-आपके १६०० रानी और ८ पटरानी थीं जिससे बहुत सन्तति उत्पन्न हुईथी और "यादव"काहिलातीथी-यादवोंमें अंतमें फुट पडगई जिससे वे सब आपसमें कट मरे-जब आप द्वारिकामें रहते थे तब सुदामा नामक १ दीन ब्राह्मण जो बाल्यावस्थामें आपका सपाठी वहथा दरिद्रतासे दुःखी हो आपके

पास पहुँचा, उसको आपने निहाल कर दिया-अंतसमय श्रीकृष्ण भगवानके पैरमें एक शिकारीका तीर लगा और परम धामको सिधारे अर्जुनने अंतेष्टी क्रिया की.

कृष्णा कुमारी-राना भीमसिंहदेव उदयपुराधीशकी कन्या स० ई० १७९२ में पैदाहुई अत्यंत रूपवती और सुलक्षिणी थी-उसका मंदगमन, मृदुभाषण ऐसा मनोहर था कि बहुधा लोग उसे 'राजिस्थानका कमल' कहिते थे-प्रथम कृष्णाकुमारीका विवाह जोधपुरके राजाके साथ ठहिराथा, परंतु विवाह होनेसे पहिलेही राजाका देहांत होगया निदान जयपुरके महाराजने उसके साथ विवाहके संदेसे भेजे तिलक चढनेकी तैय्यारी थी कि महाराज मानसिंहने जोधपुरकी गद्दीपर बैठकर रानासे कहिलाभेजा कि कृष्णाकुमारी पहिले हमारे भाईको ठहिरीथी, अब हम उनकी जगह हैं, एवं उसकी शादी हमसे होनी चाहिये. इसप्रकार जयपुर तथा जोधपुरके राजे विवाह करनेके लिये उपस्थित होगये और रानाको धमकाने लगे कि यदि कन्या दान न दोगे तौ तुम्हारा राज्य विध्वंस करडालेंगे. रानावंश पदवीमें और सबराजोंसे बड़ा मानाजाताथा पर समयके हेर फेरसे उसवक्त इनके सामना करनेका बल पौरुष नहीं रखताथा-दोनों राजाओंने अपनी सेना तथा पिंडारी इत्यादि अनेक लुटेरोंसहित रानाके राज्यमें जाकर लूट मार मचादीथी. राना बडी दुविधामें था कि किसतरह पति बचे. इस अवसर पर पिंडारियोंके सर्दार निर्दई अमीरखॉने रानाको प्रचंड अग्निके शांति करनेका यह उपाय बताया कि कृष्णकुमारीको नष्ट करके सब झगडा मिटादिया जाय. भावी बलवान राना उस म्लेच्छके मतमें आकर, अपनी कन्याकी घोर हत्या करनेको उद्यत होगया. जब कन्याके मारनेके लिये किसीका हाथ न उठा तब विष देनेका विचार हुआ. कईदफे विषका प्याला पीनेके बाद वह निरापराधिनी कन्या सदैवके लिये सोगई. उसने निजजननीको विकलहोते देख कहा था "माता ! क्यों दुखी होती हो, उचितही है कि मेरे एकके मारे जानेसे पिताका राज्य बचे और प्रजाका भय दूरहो, पिताकी अत्यंत कृपाथी कि उन्होंनें अभीतक जीतारक्खा, क्योंकि राजपूत तो अपनी लड़कियोंको जन्मतेही मारडालतेहैं." कृष्णाकुमारीकी माता निजकन्याके शोकमें रोते २ पागल होगई और थोड़ेही दिनों बाद चलबसी.

कृष्णचन्द्रसिंह [नदिया (बंगाल) के राजा] निज पिता रघुरामके बाद गद्दीपर बैठे और बादशाह दिल्लीके हुक्मसे महाराजका खिताब पाया-इन्होंने काशीसे पंडितोंको बुलाकर २२ लाखके खर्चसे अग्निहोत्र और बाजपेई यज्ञ किये, यज्ञके अंतमें पंडितोंने "अग्निहोत्री बाजपेई श्रीमान् महाराज राजेंद्र कृष्ण-

चन्द्रराय" की पदवी इनको दी–ये उन सब छात्रोंको,जो दूर२से नदिया शान्तिपुरमें न्यायदर्शन पढनेको आतेथे वजीफा देते थे और इसीकारण न दिया इनके समयमें न्यायदर्शनका देश विद्यालय गिना जाता था–इनके दर्बारमें बहुत पंडित विद्वान रहते थे, हजारों जागीर तथा मिलके इन्होंने विद्वान लोगोंको दे रक्खींथीं–प्रसिद्ध पंडित कृष्णानन्द सार्वभौम के प्रचौरकतथा(आगमवगीश,)बंगालमें "काली-पूजा "तंत्रसार" नाम पुस्तकके कर्ता इन्हींके दर्बारमें राहिते थे–महाराजकृष्णचंद्र सङ्गीततथा शिल्प विद्याकेभी अनुरागीथे, काशीमें ज्ञानवापीकूपके भीतर जानेके लिये सीढियां इन्होंने बनवाई थीं,स० ई० १७५७ में पलासीकी लड़ाईके अवसरपर सरकार अंग्रेजबहादुरकी मदद की थी जिसके बदलेमें "राजेंद्रबहादुर" की पदवी और १२ तोपें मिली थीं जो अबतक नादिया राज्यवंशमें मौजूद हैं. ७० वर्षकी उम्रमें परमधामको सिधारे और आपके पुत्र शिवचन्द्रसिंह गद्दीपर बैठे.

कृष्णदास (भाषाकवि–अष्टछाप) श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे व्रजके ८ सुप्रसिद्ध भाषाकवियोंमें इनकी गणना है–चौरासी वैष्णवोंकी वार्ताके लेखानुसार ये वर्णके शूद्रथे–वल्लभाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधराकर वहांका प्रधान अधिकारी इन्हींको नियुक्त कियाथा–इनमें और गंगाबाई खत्रानीमें जो कवितामें अपनी छाप विठ्ठल गिर्धरिन रखतीथी स्नेह था, इसपर वल्लभाचार्यजीके पुत्र गो०विठ्ठलनाथजीने कुछ असन्तोष प्रकाश किया, कृष्णदासने इस बात पर चिढकर गोशाईजीकी श्रीजीद्वारमें ड्युढी बंद करदी,एवं गोशाई जी६ महीनेतक गोबर्धनके तले परसोली ग्राममें पडे रहे–राजा बीरबलने यह समाचार सुन कृष्णदासको कैद कर दिया–गोसांईजीने यह खबर पातेही अन्न जल छोड दिया और हाय २ कर कहिने लगे कि "पिताके शिष्यको यह कष्ट"बीरबलको जब यह मालूम हुआ तब उन्होंने कृष्णदासको कैदसे छुड़ा गोशांईजीके पास भेजदिया–गोशाईजी उनको आता सुन आगे बढकर मिले, कृष्णदासजी चरणों पर गिरपड़े गोशाईजीने फिर उनको श्रीनाथजीके मंदिरका प्रधान अधिकारी नियत किया–अंतमें कृष्णदासजी एक कूपमें गिरकर मरे– ये बडे भक्त थे. भक्तिभावकी इनकी अनेक कथानकें भक्तमालादि ग्रंथोंमें हैं निम्नस्थ ग्रंथ इन्हींके रचे हैं:–गुरुधनचरित्र, पञ्चाध्याई, रुक्मिणीमंगल और प्रेमरसराज ! वह कृष्णदास साधू दुसरे थे जिनका वृत्तांत रीवानरेश महाराजा रघुराजसिंहकृत "रामरसिकावली" ग्रंथमें इस तरह लिखाहै कि उन्होने महाराज रघुराजसिंहके सामने अबसे ५० वर्ष पूर्व एक वैश्यके मृतक शरीरपर खडे होकर सितारके साथ सूरदासजीका निम्नस्थ पद गाकर मृतकको जिला दियाथा:–

पद–हमारे प्रभु अवगुण चित्त न धरचो
समदर्शी प्रभुनाम तुह्मारो वैसेही पार करचो
एक लोहा पूजामें रहितो एक तो जाय वधिक घर परचो
सो दुविधा पारसनहिं जानत कंचन करत खरचो
एक नदिया एक नार कहावत मैलंही नीर भरचो
सो जब जाय मिलत गंगामें सुरसरि नाम परचो
एक माया एक जीव कहावत सूर श्याम झिगरो
कीयाको निर्वाह करो प्रभु नाही तो है प्रणजात टरचो

कृष्णदैवज्ञ (ज्योतिषकार) ये काशीवासी बल्लालजीके पुत्र दक्षिणी ब्राह्मण थे और दिल्लीके बादशाह जहांगीरके दर्बारके प्रधान पंडित थे–निम्नस्थ ज्योतिष ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं:–भास्करीय बीजगणित टीका, नवांकुरा, श्रीपति पद्धति टीका और छादकनिर्णय एक दफे जहांगीरने इनसे राज्यके अहिमकोकी सूची बनानेको कहा, तलाशकरके ५० अहिमकोंके नाम इन्होने लिखे–जब बादशाहके साम्हने सूची पेशकरनेको चले तो सुना कि बादशाहने कुछ दिन हुये अजनवी सौदागरोंको एक लाख रुपया घोडोंके वास्ते दिया है. बस सूची निकाल पहिले नाम बादशाहका लिख लिया–बादशाहने देख कारण पूछा, पंडितजीने उत्तर दिया कि उससे ज्यादह कौन अहिमक होगा जो अनजान मुसाफिरोंको लाखों रूपये घोडोंके वास्ते दे दे बादशाहने कहा कि यदिवे घोड़े ले आये? पंडितजीने कहा कि तौभी अहिमकोंकी तादाद ५१ ही रहेगी क्युकि आपका नाम काटकर उनका नाम लिख दिया जायगा.

कृष्णानन्दव्यासदेव (राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुमके संग्रहकार) बंगालके रहिनेवाले बडे महात्मा ब्राह्मण कवीश्वर थे इन्होंने रागसागरोद्भवमें सूरदास तुलशीदास, कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाई, हितहरवंश विठ्ठलनाथ, कुम्भनदास इत्यादि प्रायः दोसो वैष्णव कवियोंके पदसंग्रहकिये हैं– यह ग्रंथ कभी कलकत्तेमें छपा था और१०० रु.में बिकता था, अब नहीं मिलता– वि० सं० १९०० में यह ग्रंथ संपूर्ण हुआ डा०राजेंद्र लालमित्र लिखते हैं कि कृष्णानन्दव्यासगीत विद्यामें निपुण होकर हरवक्त मंदस्वरसे गाते रहते थे लेकिन गानेवजानेका पेशा नहीं करते'

क्रामवेल (आलीवर क्रामवेल–Oliver Cromwell) सर हेनरी क्रामवेलके घर स० ई० १५८८ में इंग्लैंड द्वीपांतर्गत हंटिङ्गडन नामक नगरमें पैदा हुये–इनके माता पिता दोनोंहीका वंश प्रतिष्ठित था स० ई० १६२८ में इङ्गलिस्तानकी पार्लियामेंटके मेम्बर किये गये–स०ई०१८३६में मामूके मरनेपर ५०० पौंड वार्षिक आयकी भूसम्पति इनको मिली–जब स० इ० १६४२ में इंग्लैंडके

बादशाह चार्लस प्रथम और पार्लियामेंटमें झगड़ा हुआ तब ये पार्लियामेंटकी तरफ होकर बादशाही फौजसे लड़े और बादशाह चार्लसका शिर काटनेमें समर्थ हुये–तदुपरांत प्रजागणने इंग्लैंडका राज्य पञ्चायती ठहिराया, और क्रामवेलको उस पञ्चायती राज्यका सरपञ्च नियत किया–ये बड़े सुप्रबंधकर्ता साहसी और वीरपुरुष थे–स० ई० १६५८ में ज्वरसे पीड़ित होकर मरे–

क्लायव (लार्ड राबर्ट क्लायव–Lord Robert Clive) इन्होंने हिंदोस्तानमें अङ्गरेजी राज्यकी स्थापनाकी बचपनमें पिताने इनको पढानेका अत्यंत उद्योग किया पर इन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया निदान इनकी उद्दंडतासे थककर पिताने ईस्ट इन्डिया कम्पनीके दफ्तरमें ६०) रु० मासिकपर लेखककी नौकरी कराके इनको हिंदोस्तान भेजादिया–स०ई०१७४७में ये फौजमें भरती हो गये और तंजोरके राजाका किला विजय करके ' कमीसेरीजेनरल" के पदपर तरक्की पाई पश्चात इन्होंने शहर अर्काटको बडी वीरतासे लडकर फरान्सीसोंके चुंगलसे बचाया–स० ई० १७५३ में जलवायु बदलनेके लिये इंग्लैंड गये वर्ष पीछे मदरासके गवर्नर नियत होकर हिंदोस्तानमें वापिस आये–स० ई० १७५७ में थोडेसे सिपाही लेकर पलासीके मैदानमें सिराजुद्दौला नव्वाब बंगालाकी विकराल सेनाको परास्तकिया.जिससे अंग्रेजोंका बल पराक्रम सर्वदेशमें विदित होगया–इसीसमयसे हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमलदारी की बुनियाद पडी क्योंकि इससे पहिले अंग्रेजलोग केवल व्यापारियोंकी तरह रहते थे और केवल थोडेसे सिपाही अपनी हिफाजतके लिये रखते थे–स० ई० १७५९ क्लायवने "डच" लोगोंको परास्तकिया और एकवर्ष बादही जलवायु बदलनेके लिये फिर इंग्लैंडगये–स० ई० १७६४ में गवर्नर जेनरल हिंद नियत होकर तीसरी दफे [illegible] थे और ३ वर्ष इस पदपर रहिकर अन्तिम दफे इंग्लैंडको गये और पार्लियामेन्टमें हाउस–आफ–कामन्सके मेम्बर होगये–७० हजार पौंड इन्होंने फौजके बीमारोंको दानकिया– स० ई० १७७३ में हौस–आफ– कामन्सने इनको यह दोष लगाया कि इन्होंने ईस्टइंडिया कम्पनीकी चाकरीमें अपने अधिकारका अनुचित व्यवहार किया–इसीबातके रंजमें इन्होंने स० ई० १७७४ में आत्मघात किया.

खट्वाङ्गदलीप–अयोध्याके सूर्यवंशी राजा भागीरथका पुत्र था, इसने पिता देव और दानवोंकी लड़ाईमें इसने देवताओंकी सहायता की देवताओंने इसकी वीरतासे प्रसन्न होकर कहा "वरमांग" इसने कहा कि मुझे यह मालूम होजाय कि मेरी आयु कितनी है यह सुन देवताओंने तपोबलसे विचारकर कहा "तेरी अवस्थामें एकदिन शेष है" राजाने तुरंत एकाग्रचित्तहोकर तपस्या करना आरंभ किया और मोक्षपाई.

खड्गसिंह-पंजाबकेशरी महाराजा रणजीतसिंहका ज्येष्ठपुत्र स० ई० १८३९ में निजपिताके देहांत होनेपर पंजाबकी गद्दीपर बैठा-इसने अपने पिताकी रानियोंको बड़ी २ जागीरें देनेका वायदा कर्के सतीहोनेसे बहुत रोका पर उन्होंने एक न माना सतीहोनेसे पेश्तर रानीकुंदनने ध्यानसिंह वजीरका हाथ मृतक महाराज रणजीतसिंहकी छातीपर रखवाकर यह कसम ली कि खड्गसिंहके साथ कभी दगा नहीं करूंगा और इसीतरह खड्गसिंहसे ध्यानसिंहके साथ दगा न करनेके लिये कसम ली परंतु खड्गसिंहका मन ध्यानसिंहकी तरफसे अनेक कारणोंसे महाराज रणजीतसिंहके जीतेजीही बिगडगया था, एवं उसने गद्दीपर बैठतेही ध्यानसिंहका महिलोंके अंदर जाना बंद करदिया-इस बातसे नाराज होकर ध्यानसिंहने सिक्खोंमें यह झूठा अफवाह उडा दिया कि, खड्गसिंह अङ्ग्रेजोंको पंजाबमें लाकर दसन्नी, छः अन्नी मुकर्रर किया चाहता है इस बातको सुनकर सब सिक्खलोग खड्गसिंहकी तरफसे फिर गये-पश्चात् ध्यानसिंहने छिपे २ खड्गसिंहके पुत्र कुँवर नौनिहालसिंहको पेशावरसे बुलाया और उसको ऐसा सिखाया पढाया कि, उसने अपने बाप खड्गसिंहको कैद करलिया और राजकाज खुद करने लगा-इसी असेंमें खड्गसिंह बीमारपड़ा और विरुद्ध दवा मिलनेसे जल्द मरगया-कहते हैं कि वजीर ध्यानसिंहने बाप बेटेके दिल इस कदर तोड दिये थे कि नौनिहालसिंह मरते वक्त भी अपने बापके पास नहीं गया लेकिन् खड्गसिंहकी लाश जलनेसे पेश्तरही नौनिहालसिंहपर एक दरवाजा टूटकर गिरा जिससे वहभी मरगयाके सत्य है स्वजनोंसे विरोधकरके गैरोंसे मिलनेवालोंकी यही दशा होती है.

खफीखाँ (इतिहासकार). मुगलराज्यके उत्तरार्द्धकी एक विश्वासयोग्य तवारीख इसने फारसीमें लिखी है-बादशाह औरङ्गजेबका हुक्म था कि, मेरे समयकी कोई तवारीख न लिखी जावे पर मीरमुहम्मदने औरंगजेबके समयके अंतमें स० ई० १७०० के लगभग छिपे २ एक तवारीख लिखी और इसीलिये "खफीखाँ" लकब पाया.

खानखानाँ-देखो अबदुलरहीम खानखानाँ, बैरमखाँखानखाँना

खुमान (भाषाकवि) ये चरखारी बुन्देलखण्डके वासी भाट जन्मांधहोनेके कारण कुछ लिखे पढेनथे-दैवयोगसे इनके घर कोई महापुरुष सन्यासी आये और ४ महीनेतक ठहिरे चलते समय अनेकलोग उनको बिदाकरनेके लिये कुछ २ दूर जाय लौट आये,पर खुमान साथही चलेगये और सन्यासीके समझानेपरभी नलौटे और कहिने लगे कि "महाराज हम अंधे अपढ, निकम्मे घरके किसी कामके नहीं हैं इसलिये आपहीकी सेवामें रहेंगे." सन्यासीने यह सुन खुमानकी जिह्वापर सरस्वतीमंत्र लिख दिया और कहा कि, हमारे कमंडलुकी प्रशंसामें कवित्त बनाओ खुमानने शीघ्रही २५ कवित्त कमंडलु पर बनाये और सन्यासीके चरण छूकर घर

आये और संस्कृत तथा भाषा कविता करने लगे-पश्चात् महाराजा सेंधियाके दरबारमें ग्वालियर गये, सेंधियाने रातभरमें एक संस्कृतग्रंथ बनानेकी आज्ञादी, एवं इन्होंने रात्रिभरमें ७०० श्लोक बनाये-लक्ष्मणशतक और हनुमन नखशिख इनके रचे ग्रंथ हैं सं० वि०१७४०में विद्यमानथे-अमरकोषका भाषा छन्दोंमें उल्था करनेवाले खुमान कोई दूसरे थे.

गणेश (ज्योतिषकार) भारद्वाजगोत्री गुर्जरब्राह्मण गोपालके पुत्र थे-इन के दादे कान्हजी गुजरातके राजाकी सभामें कवीश्वर थे-इन्होंने ३५ वर्षकी अवस्थामें "जातकालङ्कार" नाम जोतिषग्रंथ बनाया-जन्म इनका शाके १५०० में हुआ.

गणेशदैवज्ञ (ज्योतिषकार). वि० सं० की १६ वीं शताब्दीमें हुये. पश्चिम समुद्रतीरवर्ती नन्दीग्रामनिवासी पं० केशवके पुत्र थे माताका नाम लक्ष्मी था-निम्न स्थ ग्रंथ इनके बनाये हैं:-ग्रहलाघव (१४ वर्षकी उम्रमें बनाया), लघुतिथिचिन्तामणि, वृहत्तिथिचिन्तामणि. सिद्धांतशिरोमणिटीका, विवाहवृंदावनटीका, महूर्ततत्त्वटीका, श्राद्धनिर्णय, सुधीरञ्जनतर्जनीयंत्र, कृष्णाष्टमीनिर्णय, होलिकानिर्णय, लीलावतीटीका और छन्दोर्णवटीका-गणेशदैवज्ञको इस देशके लोग गणेशजीका अवतार मानते थे.

गदाधर (नैयायिक पंडित).वि०सं० की १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें वङ्ग देशमें हुये-रघुनाथ शिरोमणि रचित "दीधित" ग्रंथपर इन्होंने गदाधरी, व्युत्पत्तिवाद, शक्तिवाद इत्यादि ६४ वाद ग्रंथ रचे हैं-रसकुसुमाञ्जलि और बौद्धाधिकार की व्याख्या तथा अनेक और ग्रंथभी इनके बनाये मिलते हैं-इनकी विलक्षण बुद्धिको वेही जानसकते हैं जिन्होंने इनके गदाधरी आदि पूर्वोक्त ग्रंथोंको देखा है-

गफ् (सर ह्यु गफ़-Sir Hugh Gough) इंग्लैंडके रहिनेवाले वीरपुरुष स० ई० १७९४ में अंगरेजी फौजमें भरती हुये-एकवर्ष बाद केप गुड होप विजय करनेके लिये भेजे गये-बादको पश्चिमी हिंदके अनेक द्वीपोंमें ब्रिटिशसेनाके अफसर रहे और तालवेड़ाकी प्रसिद्ध लड़ाईमें घायल हुये-इसीतरह अनेक साहस पूर्ण काम करनेसे बढतेर स०ई०१८३० में मेजर जेनरलके पदपर पहुँचे-स०ई० १८३७ में इनकी बदली हिंदोस्तानको हुई पर थोड़ेही दिन बाद सेनापति नियत करके चीन भेजेगये-वहां कैन्टनके धावेमें जो बहादुरी इनसे हुई उसके बदलेमें जी० सी० बी० की पदवी पाई-स० ई० १८४० में कमान्डर-इन-चीफ नियत होकर पुनः हिंदोस्तानको आये-महाराजपुर,मुदकी, फ़ीरोजशाह और सुबराउनकी लड़ाइयां जिन्में ईस्टइन्डिया-कम्पनीकी विजय हुई इन्होंकी मौजूदगीमें हुई थी स० ई० १८४८ में पेन्शन लेकर इंग्लैंड गये-

स० ई० १७७९ में जन्मे-
स० ई० १८६९ में मरे-

गर्गपुरोहित-वास्तवमें क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे परंतु अपने शुभ आचरणोंके कारण ब्राह्मण होगये-इनके वंशज गार्गेय कहिलाये और उनकी गणना ब्राह्मणोंमें हुई. इनके पिताका नाम रितथ था-गर्गसंहिता नाम ग्रथ इनका बनाया हुआ है-ये श्रीकृष्ण आदि यदुवंशियोंके पुरोहित थे.

गलीलियो-(Galileo). इटेली निवासी एक अनुभवशील ज्योतिषी हुये है-दूरदर्शक यंत्र, सूक्ष्मदर्शकयंत्र, तथा थर्मामिटर (गर्मी नापनेका यंत्र) पहिले पहिल इन्हीने बनाया-२५ वर्षके उम्रमें गलीलियो शहिर पिसाके कालिजमें गणित अध्यापक हुये पश्चात नौकरी छोड घर आये-खगोल तथा ज्योतिषविद्यामें इनका बड़ी रुचि थी. रातभर नक्षत्रोंको निर्खा करते थे. स० ई० १६१४ में इन्होंने बृहस्पतिग्रहको पहिचाना और यहभी प्रकट किया कि पृथ्वी सूर्यके चारोंतरफ घूमती है-निजकृत दूरदर्शक यंत्रके सहारेसे इन्होंने बृहस्पतिके आस पास४ चन्द्रमा देखे और यह भी जाना कि चन्द्रमाकी तरह शुक्रभी रूप बदलता है औरकि आकाशगंगामें बहुत छोटे २ नक्षत्र है-अपने इन सब सिद्धांतोंको गलीलियोने पुस्तकाकार करके छपवाया, पादरियोंने पृथ्वीके घूमनेको अपने धर्मके विपरीत समझकर, मिथ्यामत फैलानेका इनको दोषी ठहिराया और ७० वर्षकी उम्रमें इनको कैद करादिया परंतु १ वर्ष पीछे टस्कनीके राजाके कहिनेसे छोडदिये गये-इसी मानहानिके शोचमें ७८ वर्षकी उम्रमें अंधे होकर मरगये ज्यों २ विद्या और कलोंका प्रचार बढता गया विचारशील विद्वानोंने इनके अनुभवों और सिद्धांतोंको जो इनके समयमें झूटे और धर्म विरुद्ध समझे जाते थे सच्चा पाया.

स० ई. १५६४ में पैदा हुए.
स० ई. १६४२ में मरे.

गांधारी-(कौरवोंकी माता). कंधारके राजा सुबलकी पुत्री थी. विवाह इसका चंद्रवंशी महाराज धृतराष्ट्रके साथ हुआ था. इसके पेटसे १ कन्या और १०० पुत्र जो कौरव कहिलाते थे, पैदा हुये-यह बड़ी पतिव्रता थी, अपनी आँखोंमें सदैव पट्टी बांधे रहिती थी, क्योंकि पति अंधा था और यह पतिसे बढकर किसी बातमें भी नहीं होना चाहती थी. महाभारतकी लड़ाईके बाद जिसमें इसके सब पुत्र मारेगये तपस्या करनेके लिये पतिके साथ वनको चलीगई और वहां आग लगनेसे पतिसहित जलकर मरगई.

गिरिधर कविराय-जयपुरनरेश जयसिंहसवाईकी सभामें थे. जातिके भाट थे महाराज जयसिंहने इनकी बुद्धिकी चमत्कारी देख कविरायकी उपाधि दी थी. इनकी नीति सामयिक कुंडलियें विख्यात हैं. प्राचीनमनुष्योंका कथन है कि, जिसको इनकी १०० कुंडालियें याद हों उसको मंत्रीसे उपदेश

लेनेकी आवश्यकता नहीं रहिती इन्होंने कुंडलियोंका एक ग्रंथ लिखना आरंभ किया था पर समाप्तिसे पूर्वही इनका देहांत होगया, बादको इनकी स्त्रीने उस ग्रंथको पूरा किया. जिन कुंडलियोंमें साईं शब्द पडा है, वे इनकी स्त्रीकी कही हुई हैं

स० ई. १७१३ में विद्यमान थे.

गिरिधरबनारसी-देखो गोपालचंद्र कवि.

गुणाढ्य-इन्होंने पिशाची भाषामें बृहत्कथा नाम ग्रंथ लिखकर दक्षिणदेश वर्ती प्रतिष्ठानपुरके राजा सत्यवाहनको भेंट किया था, बृहत्कथाका संक्षेप सोमदेवने संस्कृतमें प्रायः स०ई.११२५ में किया और "कथासरित्सागर" नाम रक्खा.

गुमानमिश्र-(भाषाकवि). भाषा साहित्यमें महानिपुण और संस्कृतविद्यामें परम प्रवीण थे-काव्य इन्होंने मिश्र सर्वसुखसे पढा था, प्रथम दिल्लीमें बादशाह मुहम्मदशाहके दर्बारमें (स. ई. १७१९-४८) राजा जुगलकिशोर भट्टके पास रहे, पश्चात मुहम्मदीनरेश राजा अलीअकबरखांके पास गये और उनकी आज्ञासे श्रीहर्ष कृत नैषध काव्यको श्लोक प्रति भाषा छन्दबद्ध करके "काव्यकलानिधि" नाम ग्रंथ रचा, और पण्डितोंको भी जो नैषधकाव्यमें कठिन स्थल है सलिल करदिया-इस ग्रंथके देखनेसे गुमानमिश्रका पांडित्य विदित होताहै-"कृष्णचन्द्रिका" नाम ग्रंथ भी इन्होंने वि० सं० १७८८ में बनाया-जि०हरदोईके किसी गाँवके रहिनेवाले थे

गुरुदत्त-(पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम्.ए.). इनके पिता मु० रामकृष्ण, पंजाबके रहिनेवाले मिडिल स्कूल झंगमें ६०) मासिकपर शिक्षक थे. गुरुदत्तने गवर्नमेंट कालिज लाहौरसे स० ई० १८८७ में एम्. ए. का इम्तिहान पास किया, बी ए. और एफ. ए. के इम्तिहानोंमें युनीवर्सिटी भरमें अव्वल आये थे-थोडे दिनके लिये इन्होंने गवर्नमेंट कालिज लाहौरमें विज्ञानके असिस्टेन्ट प्रोफेसर तथा प्रोफेसरके पदपर काम किया पर यह नौकरियां चंदरोजह थी. फिर इन्होंने "वैदिक मैगजिन" नामक एक पत्रिका निकाली जिसको सर्वमान्य और परम उपयोगी बनानेके लिये इन्होंने वेद, उपनिषद और अनेक धर्मशास्त्र ग्रंथ थोडे ही कालमें घोर परिश्रमकरके पढ लिये,ये शुरूहीसे गणितशास्त्रमें ऐसे तीव्र थे कि बडे २ सवाल जवानी हल कर लिया करते थे और सैकड़ा नाम विना किसी क्रमके सुनकर फिर सुना दिया करते थे. बुरी संगतिसे बचते थे और बेहूदा बातचीत कभी नहीं करते थे मांसभक्षणका निषेध करते, पुष्टदायक भोजन खाते, और कसरत किया करते थे. प्रथम कन्हैयालाल अलखधारीकी किताबें पढकर नास्तिक होगये थे, पश्चात आर्य्यसमाज लाहौरमें दाखिल होकर इनके ख्याल बदलगये थे, दयानन्द एङ्गलोवैदिक कालिजलाहौरका चंदा उघाने तथा

समाजिक उपदेश देनेमें इन्होंने बड़ा परिश्रम किया था परंतु शोककी बात है कि ऐसे होनहार विद्वानका चित्त स्थिर न था और न कोई काम नियमबद्ध था. कभी सोचते कि नौकरी करलें, कभी विचारते कि विरक्त होजायं, गर्मीमें जाड़ोंहीके कपड़े पहिने रहे और जाड़ोंको गर्मीहीके कपड़ोंसे काटडाला. पुस्तकावलोकनकी सूझी तौ रात दिन पढा किये, सोने लगे तौ कई दिनतक सोयाही किये. निदान जिस काम करनेकी ठानी घोर परिश्रम करके अल्पकालहीमें उसको पूरा करना चाहा. अन्तमें घोर परिश्रम करने, नियमविरुद्ध आचरण करने और चित्तके स्थिर न होनेसे व्याकुल रहिनेके कारण बहुत दिन बीमार रहिने के बाद २६ वर्षकी उम्रमें स०ई०१८९०में ये होनहार पुरुष कालके गालमें चला गया–योगाभ्यास भी सीखा था, पर नियमानुसार न होनेसे फलीभूत न हुआ–एक साथही अल्प कालमें सब बड़े २ कठिन काम करलिया चाहते थे जो सर्वथा नीतिविरुद्ध है– आर्य्य समाजोंने इनके बाल बच्चोंके पालन पोषणार्थ और इनका स्मारक चिह्न स्थापन करणार्थ प्रबन्ध किया था.

गुरुदत्तशुक्ल (भाषाकवि) कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौजके समीप मकरंदपुरके वासी भाषाके सुकवि थे–"पक्षीविलास" ग्रंथकी रचनाके समय कबूतर पक्षी के वर्णनमें "गुरुदत्त तुम्हें यह छांडबे ठाला" इत्यादि पद कहिगये–पीछे विचारकर देखा तो जाना कि, यह काव्य अगड़ पड़गया है सो मिथ्या न होगा अर्थात अवश्य यहांका वास छूटेगा–पश्चात गोरखपुरकी तरफ इनको जाना पड़ा, वहां किसी राजाने दो गॉव नानकार इनको दिये और तबसे ये वहीं रहिने लगे–इनके भाई देवकीनन्दन और शिवनाथभी अच्छे कवि थे. जन्म संवत १८६४.

गुलाबसिंह–(महाराजा काश्मीर व जम्बू)राजा ध्रुवदेवके प्रपौत्र तथा मिआं जोरावर सिंहके पौत्रथे–इनके पूर्वज जम्बूके राजा थे पर समय के हेरफेरसे राज्य जाता रहा था–गुलाबसिंह पहिलेपहिल खालसा फौजमें बतौर सिपाहीके भरती हुये, पर निज योग्यताके कारण बढते २ महाराज रणजीतसिंहके दर्बारमें उच्च पदको प्राप्त हुये–उक्त महाराजके पश्चात जब सिक्खोंकी फौज और ब्रिटिश गवर्नमेंटमें लड़ाई छिड़ी तब फौजने गुलाबसिंहको अपना मंत्री बनाया. सुबरा उनकी लड़ाईके बाद ब्रिटिश गवर्नमेंटसे सन्धि हुई जिसके अनुसार काश्मीर तथा जम्बूका राज्य गुलाबसिंहको मिला–स० ई० १८५७ में महाराज गुलाबसिंहने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मदद की और उसी साल अगस्तके महीनेमें परलोकको सिधारे–महाराज रणवीरसिंह उनके पुत्र गद्दीपर बैठे

गोपालचन्द्र–(भाषाकवि) वर्णके अग्रवाल वैश्य काशीवासी काले हर्षचंद्रके पुत्र वि० सं० १८९६ में जन्में सुप्रसिद्ध बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दु इनके पुत्र थे

गिरिधरबनारसी नामसे इन्होंने पदपूर्ति की है. दशावतारकथामृत, भारतीभूषण, विदुरनीति इत्यादि इन्होंने भाषापद्यमें लिखी हैं.

गोपीचंद–(गौड़देश बङ्गालका राजा) महाराज त्रिलोकचंद्रका पुत्र रानी मैनावती के उदरसे था–महाराज विक्रमादित्य सकारी तथा भर्तृहरि इसके मामूं थे–प्रसिद्ध योगीराज गुरु जलंधरसे इसने योगका उपदेश लिया और राज पाट छोड योगी होगया और विरक्त हो वनको चला गया. माता मैनावतीने इसके वियोगमें देह त्याग दी. इसके बहुतसी परम सुंदरी रानियें थीं.

गोवर्धनाचार्य–बंगालके राजा लक्ष्मणसेनकी सभाके वि० सं०की १२ वीं शताब्दीमें पंडित थे, यह वृत्तांत राजा लक्ष्मणसेनके सभास्थानके द्वारपर लगे हुए पत्थरपर अङ्कित निम्नस्थ श्लोकसे विदित होता है.

श्लो०–गोवर्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः ।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य च ॥

इनके रचे "अमृतमधुरामार्या" ग्रंथके अन्तिम पदसे विदित होता है कि उदयनाचार्य इनके भाइ थे.

गोविंददास स्वामी–(अष्टछाप) ये सनाढ्य ब्राह्मण आंतरी (अतरौली?) से महावनमें आरहे थे, पहिले स्वय लोगोंको चेला करतेथे फिर गोस्वामी विट्ठलनाथजीके शिष्य हो श्रीनाथजीकी सेवामें गोवर्धनपर रहिनेलगे. भक्ति सख्यभावसे करते थे भाषाके सुकवि थे अष्टछापमें इनकी गिनतीहै. कृष्णानंद व्यासदेव संग्रहीत रागकल्पद्रुममें इनके रचे सैकडों पदहैं. गवैयाभी अच्छे थे. तानसेनभी इनके गानेसे मोहित होते थे, इनके बनाये पद अच्छे संगीतज्ञके सिवाय कोइ नहीं गासक्ता. एकदिन भैरवराग गाते हुये इनकी किसी म्लेच्छने प्रशंसा करदीथी, तबसे भैरवराग भैरवी छूत समझी जाकर वल्लभीय संप्रदायमें ठाकुरजीके सामने नहीं गाईजाती है. गोविंददासकी "कदम्बखण्डी" अबतक गोवर्धनके पास विद्यमानहै. भक्तमालकी टीका तथा २५२ वैष्णवोंकी वार्तामें इनका चरित्र विस्तृतरूपसे लिखाहै. वि० स० १६५५ में विद्यमान थे.

गोविंद सिंह–(सिक्खोंके अन्तिम गुरु) खालसा पंथके गुरुओंमें ये सबसे अधिक विख्यात हुये. जातिके खत्री थे. इनके पिता तेगबहादुरको औरंगजेबने मरवाडाला था. उसवक्त इनकी उम्र केवल ९ वर्षकी थी. बड़े होकर म्लेच्छों के दमनकरणार्थ इन्होंने बड़ा तप किया. गुरु स्वयं लिखते हैं कि, चै०शु०९ वि०सं० १७५५ को देवीने मुझको वरदान दिया कि, तुम सदैव सुकार्योंमें लगे रहोगे और तुम्हें कोई नहीं जीत सकेगा. इन्होंने नानक आदि सब गुरुओंके उपदेश संग्रह करके और उसमें अपनेभी अनेक उपदेश मिलाकर सिक्खोंकी धर्मपुस्तक ग्रन्थ-

साहिब बनाई. औरंगजेबसे इनकी सख्त लडाई हुई जिसमें हजारों सिक्ख और इनके २ पुत्र काम आये. ये भी देश छोड़ परदेश बहुत दिनोंतक धर्मोपदेश करते हुये भ्रमण करते रहे. बंदानामक फकीरको जिसको बंदी गुरु कहते हैं इन्होंने उपदेश करके पंजाबमें अपने बाप और बच्चोंका बदला मुसल्मानोंसे लेनेके लिये भेजा था. बंदा साहिब जब पंजाब आये तो लाखों सिक्ख जो अपने गुरुके नुकसानों पर आंसू बहा रहे थे हथियार ले २ कर निकल पडे-फिर तो बन्दा साहिबने मुसल्मानोंकी वह गत की कि, न कहना बेहतर है, नाकचने चबा दिये, लाखों औरत मर्द बच्चे बुड्ढे काट डाले-गाँवके गाँव फूंक दिये माल लूटलिया बड़े २ मकान ढादिये-जब गुरु गोविंदसिंहने बंदाकी कर्तूत सुनी तो यही कहा "वाह गुरुकी इच्छा!" गुरु गोविंदसिंहको उनके मुसल्मान नौकरोंने छुरी भोंककर मारडाला. गुरुने मरनेसे पेश्तर फरमाया कि "गुरुओंकी परम्परा हमसे खतम है हमारे पीछे केवल ग्रंथ साहिबही गुरु करके माने जायंगे."

सं० ई० १६६६ में जन्मे.

सं० ई० १७०७ में मरे.

गोरखनाथ (गोरक्षनाथ)-ये योगशास्त्रके प्रसिद्ध सिद्ध हुये हैं. बहुतोंका विश्वास है कि, अभी जिन्दह हैं, महाराज भर्तृहरी इन्हींके उपदेशसे योगी हुये, नागा लोग इनके अधिक चेले हैं और नैपालके रहिनेवाले इन्हींके नामसे गोरखिया कहिलाते हैं. गोरखपुर इन्हींका वसाया हुआ है और वहां इनका एक मन्दिर अभीतक विद्यमान है. ये गुरु जलंधरके शिष्य थे तंत्रविद्याका सिद्ध इनके समान आजतक दूसरा नहीं हुआ. अनेक संस्कृतग्रंथ इन्होंने बनाये थे जिनमेंसे कामशास्त्र अबतक मिलता है. ९ नाथ तथा ८४ सिद्धोंमें इनकी गणना है, ये तनु पर विभूति रमाये, सिद्धरूप बनाये, दिगंबर वेष किये, हाथमें कमंडलु लिये, शृंगीनाद बजाते, शिष्योंसहित बाहर निकलाकरतेथे सपेडे वगैरह अबतक गुरुगोरखनाथकी दुहाई अपने मंत्रोंमें लगाते हैं.

गोल्डस्मिथ-(आलीवर गोल्डस्मिथ-Oliver Coldsmith.) ये अंग्रेजी कवि आयर्लैंडके लांगफोर्ड प्रदेशांतर्गत पैलसके रहिनेवाले थे. प्रथम ट्रिनिटी कालिज डबलिनमें इन्होंने शिक्षा पाई, पश्चात् डाक्टरी पढने एडिनबरानगरको गये, फिर डाक्टरी छोड़ कानून पढने लगे लेकिन् कानूनकोभी अधूराही छोंड़ा सं० ई० १७५५ में जेबमें केवल एक गिनी (१५ रु० भरका सिक्का), पीठपर एक कुर्ता और हाथमें बँसुरी लिये हुये यूरुपके अनेक देशोंकी यात्राके लिये पैदल निकले-इस यात्रासे लौटकर लंडन नगरमें ठहिरे और स्कूलमास्टरी करली, समाचारपत्रोंको मजमूनभी लिखा करते थे पश्चात् एक सप्ताहिकपत्र जारी किया लेकिन् वह चला नहीं-इसके बाद गौल्डस्मिथने स्वरचित "चीनीपत्रों" को न्युवरी साहिबके "पबलिकलेजर" नामक समाचारपत्रमें छापनेको भेजा.

स० ई० १७६५ में सौंदर्यसे परिपूर्ण इनका रचा एक उपन्यास छपा जिसकी बिक्रीसे इनकी हालत माकूल होगई पर इनको स्वाभाविक लापर्वाही, बेहूदगी और जुआ तथा शराबपीनेकी ओर रुचि होनेके कारण सदैव अनेक आफतोंमेंही पडा रहेना पड़ा. यह शराबखानों और चंडूखानोंमें पड़े रहिकर २। २ पैसे पर अपनी पद्य रचना सुनाया करते थे इसीसे इनकी इजत न हुई-इनके बाप पादरी थे, जिनसे ४० पौंड वार्षिक आयकी जायदाद इनको मिली थी-डिज़र्टेड विलेज (उजाडगांव) और ट्रैवलर (पथिक) इत्यादि अनेक ग्रंथ इनके रचे रोचक और ललित हैं-इबारत साफ सादी और सरल है-विचार प्रहसन नम्रता और खूबीसे युक्त हैं-स० ई० १७७४ में लंडनमें मरे.

गौतमऋषि-(न्यायदर्शनकार)इनका दूसरा नाम शतानन्द था--पितृमेधसूत्र तथा सामवेदके गृह्यसूत्र इन्होंने रचे थे और न्यायदर्शन शास्त्रभी इन्होंने निर्माण किया था-इनका समय सांख्यदर्शनकार कपिलसे प्रायः२००वर्ष पीछेका है-सामवेदीय धर्म सूत्रभी इनके कहे मिलते हैं-भूमण्डलपर ये सबसे पहिले न्यायशास्त्रके आचार्य हुये और इन सरीखा दूसरा "न भूतो न भवष्यति"-इनकी स्त्री अहल्या और राजा इंद्र तथा चन्द्रमाके मुर्गा बनकर बोलनेकी पुराणोक्त अलंकाररूपक कथा जगत्प्रसिद्ध है.

गौतमबुद्ध-देखोबुद्ध.

गंगकवि-(भाषा कवि). जिला इटावाके रहिनेवाले ब्राह्मण स०ई० १५९५ में जन्मे थे,पूरानाम गंगाप्रसाद था. अकबरके दर्बारमें इनका बड़ा आदर सत्कार होता था. कविता करनेकी शक्ति दैवी थी, इनके बनाये पद अत्युत्तम होते थे जिसके विषयमें प्रसिद्ध है कि,

दोहा-उत्तम पद कवि गंगको-उपमा को बलवीर।
केशव अर्थ गंभीरको-सूर तीन गुणधीर॥

बादशाह अकबर, अब्दुलरहीम खानखानाँ तथा जयपुरनरेश मानसिंहने इनको अनेक अवसरोंपर बहुत कुछ इनाम दे २ कर निहाल किया था. बीरबलने इनको छप्पयमें १ लाख रु०इनाम दियाहीथा. अकबरके बाद जहांगीरने भी दिल्लीके तख्तपर बैठकर इनको कईदफे इनाम दिया था.एकदिन ये जहांगीरको कवित्त सुना रहे थे जहांगीर उस वक्त अपने पाइजामेंमें हाथ डाले गुप्त स्थानको खुजला रहा था, यह देख गंगने कहा "बादशाह सलामत, कवीश्वरोंके कवित्त सुनकर मर्दोंका हाथ मूंछपर जाता है, आप यह क्या कर रहे हैं."इस बातसे चिढकर जहांगीरने कवि गंगको हाथीसे चिरवाडाला-यह देख दर्बारके अमीरोंने शोक किया और बादशाहसे अर्ज़की कि, गंगके समान दैवीशक्ति रखनेवाला दूसरा कवि पैदा नहीं होगा, बादशाहने भी अफसोस किया और गंगके १० वर्षके

लड़केको अपने दर्बारमें बुलवाया-इस बच्चेने दर्बारमें आतेही बादशाहको निम्नस्थ पद सुनाया और फूट २ कर रोता हुआ लौट गयाः-

गां ्की हेत कहा-कल्लरको खेत कहा
वेश्याको विश्वास कहा गुप्त बात पाइके
रांगके रुपैयाको कहांलौं परखाइये
तोसे कहा गां ्नको गद्दी ठहिराइये
गुलामनके तिलाम ्तियोंके बादशाह
कवि गंगसे गुणीको क्या जंघसे चिराइये

गंगेशउपाध्या-(नैयायिक पंडित) इन्होंने न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों-का सारांश लेकर चारभागोंमें चिन्तामणि ग्रंथ रचा-यह ग्रंथ ऐसा उपयोगीहै कि इसने अल्पकालहीमें न्याय वैशेषिक आदि प्राचीन ग्रंथोंका तिरस्कार कर-दिया-इस ग्रंथपर उत्तरोत्तर क्रमसे १० तिलक रचेगये हैं-गंगेशजी उत्तमकुल मैथिल ब्राह्मण थे प्रसिद्ध पंडित वर्धमान उपाध्या इनके पुत्र थे.

ग्लैडस्टोन- The Right Hororable William Gladstone).महारा-नी विक्टोरियाके समयमें यह बहुतदिनतक प्रधान मंत्री रहे-इनकी राजनीति ऐसीथी कि जिससे शत्रुभी इनकी प्रशंसा करते थे. वर्तमानकालके सुप्रसिद्ध राजप्रबंधकर्ताओं तथा उपदेष्टाओंमें इनकी गणना है-महारानी विक्टोरियाकी इनपर पूज्य बुद्धि थी-ये बड़े उच्चस्वरसे वक्तृता देते थे जिसका प्रभाव तुरंत चित्त-पर पड़ताथा,बड़े योग्य परिणामदर्शी और विचारशील थे-६४ वर्ष बराबर पार्ली-मेंटके मेम्बर रहे-सदैव सोचतेविचारते रहिते थे, चालढाल सादी थी इतने बुढ्ढे होगये थे पर परिश्रम करनेकी बान नहीं छोडते थे-लंडनमें रहिते२जब थक जाते तो अपने ग्रामको यार्कशायर में चलेजाते और वहां १० । १५ दिन रहिकर शाहबुलूतके दरख्त काटाकरतेथे जिससे उनके बदनमें खूब फुर्ती और चुस्ती आजातीथी-इतने अमीरहोनेपर भीरहिन सहिन इतनासादाथा कि बहुधा पैदल-चलतेथे-होमरूल इत्यादिके कारण इनकी बहुत प्रसिद्धी हुई-यह उदारविचारों के पुरुष थे-आयर्लैंडवालोंको पृथक् पार्लीमेंट देनेकी उदार इच्छा इन्होंने प्रगट-की थी.कई अंग्रेजीग्रंथभी रचे थे--लिवरपूलके एक सौदागरके घर स०ई०१८०९में जन्मे स० ई० १८९८ में मरे.

ग्वाल (भाषा कवि). मथुराके रहिनेवाले भाट स० ई० १८७९ में विद्य-मान थे, साहित्यमें परमचतुर थे. निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैंः-

नखशिख, गोपीपचीसी, यमुनालहरी, साहित्यदूषण, साहित्यदर्पण, भक्ति-भाव, शृंगारदोहा, शृंगारकवित्त, हमीरहठ. इनके सिवाय २ ग्रंथ इनके संग्र-हीत भी मिलते हैं-नीचे लिखा प्रसिद्ध दोहा इन्हींके हमीरहठका हैः-

दोहा–सिंहगमन सापुर्ष वचन–कदली फल एकबार
त्रियातेल हमीरहठ–चढे न दूजी बार

घटकर्पर–ये विद्वान् महाराज विक्रमादित्य हर्ष उज्जैनवालेके दर्बारके नवरत्नोंमेंसे था. इसने एक ग्रंथ संस्कृत पद्यमें, जिसमें वर्षाऋतुका मनोहर वर्णन है, अपने नामसे रचा था. ये वर्णके ब्राह्मण थे.

घाघ–(भाषा कवि). जिला कानपुरके किसी गांवका रहिनेवाला कान्यकुब्ज ब्राह्मण वि० सं० १७५३ में विद्यमान था. इसके बनाये दोहे, छप्पय, लोकोक्ति, ग्रामीण बोलचालमें विख्यात हैं–घाघशब्द आजकल चतुरपुर्षवाची होरहा है, निम्नस्थ दोहा इसीका है:–

दोहा–ढीलोवेंट कुलहाडी डारैं–हंसके मागैं दम्मा.
ऐ हो करके नार बुलावैं–घघ्घा तीन निकम्मा.

चङ्गेज़खाँ–(तातारका बादशाह) इसका बाप पिस्केखाँ मुग़ल सर्दार इस्को १३ वर्षका छोड़कर मरगया था. २० वर्षकी उम्रमें इसने बाँगखाँ तातारी सर्दारकी बेटीसे शादी की, यह बात और सर्दारोंको बुरीलगी, एवं उन्होंने बांगखाँपर चढाई की, पर चङ्गेज़खाँने मदद करके उसको बचालिया, पश्चात् बांगखाँने कृतघ्नी होकर चङ्गेज़खाँके पकड़नेका इरादा किया, पर चङ्गेज़खाँने उसको परास्तकर्के मारडाला और तातारका तख्त अपने क़ब्जेमें करलिया–फिर चङ्गेज़खाँने निजसेनाका सुधार किया, जिसमें छः लाखसे अधिक सिपाही भरती किये और उत्तरीय चीन तथा तातार प्रदेशान्तर्गत अनेक देशोंको जीता इस तरह तातारके छोटेसे राज्यको पूरव-पश्चिम ६ हज़ार मील और उत्तर–दक्षिण ३ हज़ार मीलमें फैलाया. ऐसा बृहत राज्य इतनी शीघ्रतासे किसी दूसरे बादशाहने आजतक नहीं विजय किया-स० ई०१२१७में हिंदोस्तानपर हमला किया और ईरानसे लेकर सिंधु नदीके किनारेतक जो साम्हने पडा उसको मारडाला, शहर तथा गांव जलादिये और लूटलिये–जब चङ्गेज़खाँ पूरवी देशोंमें विजय प्राप्त कर रहा था उसने अपने प्यारे पुत्रके मरनेकी खबरपाई जिससे उसको बड़ा शोक हुआ और ज्वर आगया. अंत समय उसने अपने सब पुत्र पौत्रादिकोंको बुलाकर कहा कि सब मिलझुलके रहना,ऐसा न हो कि,आपसके बिगाड़से राज्य नष्ट होजाय, ये बड़ा विजयी निर्दयी रणकुशल और क़ानून बनानेमें दक्ष था.

स० ई० ११६३ में जन्मा.
स० ई० १२२७ में मरा.

चतुर्भुजदास--(भाषाकवि--अष्टछाप). गोस्वामी बिट्ठलनाथजीके शिष्य थे और श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य कुंभनदासके सप्तमपुत्र होकर जमनावते ग्रामके रहने-

वाले थे-इनकी अल्लगौरवा थी-ये पिता पुत्र अत्यंत धनहीन थे और बड़े सुकवि थे-साधु महात्माओंके यथाशक्ति सनमानी थे-इनके बनाये अनेक पद जो भक्ति-भावसे भरपूर हैं, कृष्णानंदव्यास देवकृत रागसागरोद्भवमें हैं.

चंदा-(पंजाबकेशरी रणजीतसिंहकी सबसे छोटी रानी) महाराज रणजीतसिंहके मरते समय इसकी उम्र बहुत छोटी थी और इसका पुत्र दलीपसिंह दूध पीता था. स०ई०१८४३ में दलीपसिंह ५ वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठा-हीरासिंह तथा जवाहिरसिंह क्रमशः दीवान नियत हुये और फौजके सिपाहियोंके हाथसे मारेगये-तब तो रानीने दर्बारमें बैठकर राजकाजकरना स्वयं आरंभ करदिया और लालसिंहको दीवान नियत किया-लालसिंहपर रानीकी विशेष कृपाथी, पर यहांपर रानीके दोषोंको छोड़, जो स्त्रीमें स्वतंत्र होनेसे पैदा होजाते हैं, उसकी बुद्धिमानीहीका वृत्तांत लिखनेसे प्रयोजन है-रणजीतसिंहके बाद खालसा फौज बड़ी उपद्रवी होगई थी इसलिये दूसरी ओर ध्यान बटानेकेलिये रानीने फौजको दिल्ली और बनारस लूटनेके लिये भेजा-यथार्थ में इस कार्यवाहीसे रानीका विचार अंग्रेजोंसे लडनेका न था बरन इस बहानेसे उपद्रवी फौजको नष्टकराके अपने प्राण और राज्यकी रक्षा करनेका था -फौज तो आधीसे अधिक कटमरी पर पंजाबमें अंग्रेजी रजीडेंट मुकर्रकिया गया रानीको राजकाजसे अलहिदा करके डेढ़लाख रुपया वार्षिक पेन्शन दीगई और लालसिंहको २ हजाररुपया मासिक पेन्शन देकर रानीसे अलाहेदा होकर बृटिशराज्यमें बसनेका हुक्म दियागया-यह बातें रानीको पसंद न आई एवं उसने बृटिशराज्यकी दुश्मन बनकर काबुल, कंधार, काश्मीर और राजपुतानाके सबराजाओंको अपनीतरफ मिलाया और अंग्रेजोंकी सिक्ख फौजको बिगडनेके लिये उकसाया उससमय कोई सिक्ख सर्दार ऐसा नहीं था कि जिसके दिलमें यह ख्याल न पैदाहोगया हो कि एकदफे सिक्खोंका झंडाफिर फर्रावे--पर ठीक समयपर यह भेद खुलगया, रानीकी पेन्शन घटाकर ४ हजार करदीगई और उसको कैदकरके बनारस भेजदियागया-कैदसे रानी शिवाजी मरहटेकीतरह टोकरेमें छिपकर निकलभागी और नैपालपहुँची--नैपाल दर्बारने उसको १ हजार मासिक पेन्शन नियत की और बाकी उम्र उसने वहीं काटी-बृटिश गवर्नमेंटने नैपालदर्बारको हठपूर्वक रानीके वापिस करनेको लिखा पर उक्तदर्बारने साफ जवाब देदिया कि "शरण आयेहुयेको अशरणकरना हमारे धर्मके विरुद्ध है बृटिश गवर्नमेंटको उससे कुछ भय नहीं रखनाचाहिये हम उसकी खुद सम्हाल-रक्खेंगे."

चंदासाहिब-(नवाबकर्नाटक). अर्काटके नवाबकी लड़की इसको विवाहीगईथी-कर्नाटकके मारकेमें इसके समान वीर पुरुष कोई दूसरा नथा-स०ई० १७३६ में ट्रिचनापल्लीका राज्य इसने ज़बर्दस्ती छीन लिया-स०ई० १७४१ में यह

मरहटोंके हाथ पड़गया और सतारा के क़िलेमें कैदकियागया–फरासीसी गवर्नर डुपलेसाहिबने इसे कैदसे छुड़ाकर कर्नाटककी गद्दीपर बिठलाया–स०ई० १७५२ में मरहटोंने इसका शिर काटडाला.

चंदवर्दाई–(कविचंद). दिल्लीके अन्तिम हिंदूपति महाराज पृथ्वीराजका प्रधान मंत्री तथा राजकवि जातिका भाट असलमें लाहौरका रहनेवाला था–इसके पूर्वजभी कवीश्वर थे और अजमेर तथा रणथम्भोरके चौहान उनके यजमान थे चंदक-वि सं० वि० ११२० में रणथम्भोरसे दिल्लीआकर पृथ्वीराजके दर्बारमें उच्चपदको प्राप्तहुआ–कवीश्वरहोनेके सिवाय बुद्धिमान, वीर, चतुर, रणकुशल, नीतिज्ञ और स्वामिभक्तभी था और विद्वानहोनेमें तो कुछ शकही नहीं सबलड़ाइयोंमें महाराज पृथ्वीराजके साथही रहा–इसका बनवाया एक कुँवा अबतक कूंचज़िला हमीरपुरमें है. यह उसवक्त बनवायागया था जब राजापरमालके साथ युद्धमें घायलहोकर पृथ्वीराज कूंच में ६ महीनेतक पड़ारहा था–चंदका ज्येष्ठपुत्र कवि जल्ह पृथ्वीराजकी बहिन पृथाबाई के दहेजमें चित्तौड़के राना समर्सीको दियागयाथा–जल्हकी संतति अबतक मेवाड़में है और वहांके राज्यमें उसको प्रतिष्ठा है–कहतेहैं कि कविचंद और पृथ्वीराजका जन्म तथा मरण साथ २ एक ही दिनहुआ–पृथ्वीराजका जन्म वि० सं० १२०५ में और मृत्यु वि० सं० १२४९ में हुई. चंदने पृथ्वीराजके वृत्तांतमें " पृथ्वीराजरायसा" ग्रंथरचकर स्वामिभक्तिका पूर्ण परिचय दियाहै–१ लक्ष श्लोकोंका यह ग्रंथ ६९ खण्डोंमें विभागित है–इसमें पृथ्वीराजके जीवनकालकी मुख्य घटनायें, क्षत्रियोंकी वंशावली, आबूपर्वतका माहात्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियोंकी शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव, चलन व्यवहार आदिका विस्तारपूर्वक वर्णनहै–यह ग्रंथ वीररससे परिपूर्ण है–भाषा इसकी प्राकृतके अन्तिमरूप और हिंदीके आदिरूपसे मिलतीहै–इसमें दिये सन् संवत आनन्द विक्रमीसंवतके अनुसारहैं–आनन्द विक्रमीसंवत् प्रचलित विक्रमीसंवतसे ९० वर्ष पूर्व शुरूहोताहै. कवि चंद्रके १२ पुत्र थे.

चंद्रगुप्त–(मगधनरेश) महाराज नन्दका पुत्र मुरानामक नाइनके पेटसे था इसकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) में थी प्रसिद्ध पंडित चाणक्यने तिरस्कृत होकर महाराज नन्दको ८ पुत्रों सहित नाशकिया और चंद्रगुप्तको गद्दीपर बिठलाया और आप प्रधान मंत्री बना. चंद्रगुप्त बडा धीर वीर पुरुष था, उसने भारतवर्षसे परदेशियोंको निकाल दिया था यूनानके बादशाह सेल्युकसने उसपर चढाई की पर हारकर अपनी लडकी, ५००हाथी तथा सिन्धनदीके किनारेका मुल्क देकर संधि करली और मैगेस्थनीज़ नामक राजदूतको पटनाके दर्बारमें छोड़कर यूनानको लौटगया. इस राजदूतने अपनी पुस्तकमें चन्द्रगुप्तके राज्य प्रबंधका सविस्तर वृत्तांत लिखाहै जिसका सारांश यह है कि पटना उस समय अत्यंत

रमणीक शहिर था सफाई तथा पुलिसका प्रबंध अच्छाथा, रथोंमें लड़ाईके समय घोड़े और चलते समय बैल जोते जाते थे सड़कोंका जीर्णोद्धार होता रहिता था. और खेत सींचनेके लिये नहिरें जारी थीं. जमीनकी पैदावारसे चौथा हिस्सा राजकोशमें जाता था. फौजमें ६ लाख पैदल, ३० हजार सवार और ८ हजार हाथी थे इसका पुत्र बुन्दसार इसके बाद गद्दीपर बैठा. प्रसिद्ध बौद्ध मतानुगामी राजा अशोक इसका पौत्र था.

स० ई० से ३१५ वर्ष पूर्व गद्दीपर बैठा.
स० ई० से २९१ वर्षपूर्व मरा.

चन्दनराय-(भाषा कवि). पुवायां जिला शाहजहाँपुरका रहिनेवाला भाट महा विद्वान् और संतोषी था और राजा केशरीसिंह गौड़के यहां रहिता था. केशरीप्रकाश, शृंगारसार, कल्लोलतरङ्गिणी, काव्याभरण, चन्दनसतसई और पथिकबोध इत्यादि ग्रंथ इसके बनाये हुये हैं-मनभावन आदि इसके १२ शिष्य महा कवि हुये हैं, चन्दनराय पुवायां छोड़ कहीं नहीं गया-एक दफे किसी बुन्देल खण्डी राजाने इसको बुलवाया था पर ये नहीं गया और निम्नस्थ दोहा लिखकर भेज दिया:-

दोहा-खरीदूक खर. खरतुआ खारीनोन संयोग।
येतो जो घरही मिले चंदन छप्पन भोग।

वि०सं० १८३० में विद्यमान था.

चरकमुनि-(चरकसंहिताके रचयिता). कहिते हैं कि आयुर्वेदके प्रणेता चरक, सुश्रुत और वाग्भट, तीनों धन्वंतरि वैद्यके शिष्य थे चिकित्सा ग्रंथोंमें चरकसंहिता सर्वोत्तम है यथा-"निदाने माधवः प्रोक्तः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः। शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तश्चरकस्तुचिकित्सके" चरकके विना पढे अन्य सैकड़ों ग्रंथोंके अवलोकनसे भी वैद्य निपुण नहीं होसकता,कहाभी है "चरकोनालोकितो येन स वैद्यो यमकिंकरः" चरकसंहिता निम्नस्थ ८ भागोंमें विभागित हैं:-सूत्रस्थान, निदानस्थान,विमानस्थान, शरीरस्थान, इन्द्रियस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, और सिद्धिस्थान- इनका समय बहुत प्राचीन है पर आर० सी० दत्त सी० यस स्वरचित भारत इतिहासमें इनका स० ई० के छठे शतकमें होना सिद्ध करते हैं-चरकसंहितापर सबसे प्राचीन व्याख्या हरिश्चन्द्रकृत है और विक्रमकी १२ वीं शताब्दीसे पूर्वकी मालूम देती है.

चरणदास-(भाषाकवि). इन्होंने नारायणके भजन, स्मरण, ध्यान और गुणानुवादमें एक बड़ा ग्रंथ " चरणदाससागर " बनाया है और "स्वरोदय " नामकी एक छोटीसी पुस्तक भी, जिसमें २२७ छंद हैं और जिसका साधन बड़े २ ज्ञानी, ध्यानी, योगी, जती लोग करते हैं इनकी रचित है, ये डेहरा ग्राम

रियासत अलवरके रहनेवाले मुरलीधर ढूंसर वैश्यके पुत्र वि० सं० १७६० में जन्मे थे इनका नाम पहिले रणजीत था और एक पैरसे लंगड़ेथे-कुछ बड़े होकर माताके साथ अपने नानाके घर दिल्ली गये-दिल्लीमें एक दिन कोई महात्मा मिल गये, उनके पैर इन्होंने पकड़ लिये और कहा "प्रभो ! मुझ अपंगको पार लगाओ मैंने आपके चरणोंकी शरण ली है" महात्मा इनको कंधेपर रखकर कुछ दूर लेगये और चरणदास नाम रखकर अपना परिचय दिया और राममंत्रका उपदेश किया.

दोहा-गुरु शुकदेव मंत्र यह दीना राम नाम तत्सारा ।
चरणदास निश्चयसे जपले उतरै भवनिधि पारा. ॥

गुरूपदेशके प्रभावसे चुरणदासजी कुछ दिन बाद बड़े महात्मा हुये, बहुतसे इनके शिष्य हुये जिनकी परम्परा दिल्ली, लखनऊ, बांदा आदि नगरों में अबतक चलती है-इनके मतानुगामी फ़कीर चरणदासी कहिलाते हैं. दिल्लीमेंही वि० सं०१८३९ में इनका देहांत हुआ-जहां दाह दीगई थी वहां इनकी समाधि बनी है और उसपर हर वसंत पंचमीको मेला होताहै.

चांदबीबी-अहिमद नगरके नव्वाबकी बेटी थी और बीजापुरके नवाब अली आदिलशाहको विवाही गई थी. स० ई० १५८० में विधवा होनेके कारण राजकाज इसको खुद सम्हालना पड़ा बादशाह अकबरके बेटे मुरादने स०ई० १५९५ में इसके किलेका घेरा किया परंतु चांद सुल्तानाने बड़ी वीरतासे सामना किया मुग़लोंने हारकर संधि करली-अपने समयकी मुख्य राजनीति विशारद स्त्री थी-और बड़ी निडर तथा हौसलेमंद थी.

स० ई० १५९९ में दक्षिणी लोगोंने इसे मारडाला.

चाणक्य पंडित-पूरा नाम इसका विष्णुगुप्तचाणक्य था. नीति, वैद्यक, ज्योतिष, रसायनादि विद्या पढ़कर ब्रह्मचर्य धारण कियेहुये पटना नगरकी ओर आया था और विवाह करनेकी इच्छा रखता था शहरके बाहर ही पैरमें कुशा गड़ जानेसे इसके मनोरथ में विघ्न हुआ और इसको बड़ी तकलीफ हुई, एवं रास्तेमें से कुशोंको उखाड़ २ उनकी जड़ में मठा इस गरजसे डालने लगा कि, फिर न उगें — मगधनरेश महाराज नन्दके तिरस्कृत मंत्री शकटायरने इसको ऐसा करते हुये देख कारण पूंछा-चाणक्यने कहा कि, जबतक रास्तेमें उगे हुये इन कुशोंकी जड़तक न नाश करलूंगा तबतक शहरमें न जाऊंगा-शाकटारने इस दृढप्रतिज्ञ पुरुषको महाराज नंदसे उलझाकर अपनी मानहानिका बदला लेना चाहा-एवं मज़दूर लगाकर कुशा सब खुदवाके फिकवा दिये और चाणक्यको समझा बुझाके शहरमें लेआया और एक पाठशाला खुलवादी-कुछ दिनोंबाद महाराज नन्दके यहां श्राद्ध हुआ जिसमें बहुतसे ब्राह्मण निउतेगये शक्टारने इसको

सुअवसर जान महाराज नन्दकी आज्ञा विना चाणक्यको निउता देदिया क्योंकि उसने विचारा कि, महाराज नन्द उस कुरूप बेनेवते ब्राह्मणको देखकर जरूर उठादेगा जिसके बदलेमें वह अवश्यही उसका नाश करदेगा और ऐसाही हुआ. महाराज नन्दने आतेही चाणक्यको उठादिया और इस मानहानिके कारण चाणक्यने भी नंदको आठों पुत्रों सहित नाश करनेकी प्रतिज्ञा की-निदान चाणक्यने नन्दके पुत्र चंद्रगुप्त को जिसको नायनके पेटसे उत्पन्न होनेके कारण और भाइयोंकी अपेक्षा पिताके बाद गद्दी मिलनेकी कुछभी आशा न थी,अपनी तरफ मिलालिया और महाराज नन्दको आठ पुत्रों सहित विष दिलवाके नष्ट करदिया पश्चात् चाणक्यने चंद्रगुप्तको राजासिंहासनपर बिठलाया और आप उसका मंत्री बनी ये राजनीतिका पूर्ण ज्ञाता, चतुर और विद्वान् पुरुष था इसने मंत्री होकर राज्यप्रबंध ऐसा किया जिससे चंद्रगुप्तका प्रताप भारतवर्ष-भरमें तथा अन्य टापुओंमें भी फैलगया-चाणक्यकी राजनीति विशाखदत्त-कृत मुद्राराक्षस नाटकसे संग्रह होसकती है, चाणक्यसूत्र तथा चाणक्यनीति इसके रचे ग्रंथ हैं.

चार्वाक-(प्रसिद्धनास्तिक) महाभारतमें लिखाहै कि, ये राक्षस था और कौरव पांडव युद्धके अंतमें इसने यह अफवाह फैलाकर कि भीम मारागया, पांडवोंका नाश करनाचाहा था--इसने एक शास्त्र रचकर नास्तिकताका प्रचार किया, वास्त-वमें अनीश्वरवादी शास्त्रके मुख्य नियम जिनको "बार्हस्पत्यसूत्र" कहतेहैं, पहिले पहिल बृहस्पतिने निर्माण किये थे, चार्वाकने केवल उनका अधिक प्रचारकिया और उनको श्रेणीबद्ध किया.

चार्ल्सब्राडला-(Sir Charles Bradlaugh) ये पृथ्वीप्रसिद्ध नास्ति-क स० ई० १८३३ में लंडनमें पैदाहुआ लेख तथा वक्तृताद्वारा यथाशक्ति नास्ति-कता फैलानेमें उद्योग किया पहिले निर्धनी होनेके कारण कोयला बेचाकरता और छोटी २ नौकरियाँ करता था--पश्चात् २ पौंडमासिकपर एक वकीलकी नौकरी करली थी- इस नौकरीपर रहकर इसने स्वामिसेवा ऐसी उत्तमतासेकी कि, उसने अपना क्लर्क इसको बनालिया--इस नौकरीपर रहकर थोडेही कालम बहुतसी का-नूनकी बातें इसको मालूमहोगईं और ये अच्छी वक्तृताभी देनेलगा--स० ई० १८५९ में इसने और जोज़ेफबार्कर साहिबने मिलकर "नेशनल रीफार्मर" नाम-क साप्ताहिक पत्र जारी किया और कुछदिनबाद यह उसका स्वतंत्र सम्पादक बन-गया--स० ई० १८८९ में हिंदोस्तानकी तरफसे पार्लियामेंटका मेम्बर हुआ दूसरी साल नेशनेल कांग्रेसमें शरीक होनेको हिंदोस्तान आया,उनदिनों इसकास्वास्थ्य अच्छा न था--थोडेही दिनोंबाद मरगया.

चासर-(ज्योफ्री चासर, Geoffrey Chaucer), ये अंग्रेजी भाषाके आदिकवि थे-इनका बाप लन्डन नगरका रहनेवाला बड़ा अमीर सौदागर था.

कैम्ब्रज और आक्स फोर्डके कालिजोंमें इन्होंने पढ़ा था. इंग्लैंडके बादशाह एड-वर्ड तृतीयके समयमें ये फरासीसोंसे लड़े, बाद अनेक पदों पर रहे, २ दफे मतविवादका दोषी ठहर कर कैद भुगतनी पड़ी थी. अंतमें आक्स फोर्ड नामक शहरमें बस रहे थे. "कैन्टर वरीटेल्स" नामक पुस्तक अंग्रेजी पद्यमें इनकी रची हुई है, स० ई० १३२८ में लन्डनमें जन्मे. स० ई० १४०० में मरे–

चिन्तामणि त्रिपाठी (भाषाकवि) टिकमापुर ज़िला क़ानपुरके रहनेवाले ब्राह्मण थे. इनके पिता रोज़ टिकमापुरसे एक मीलके फ़ासलेपर बनकी भुइयां नामक देवीके मंदिरमें दुर्गापाठ करनेको जाया करतेथे–एक दिन भगवतीने प्रसन्न होकर ४ मूँड दिखाय वर दिया कि, तेरे ४ पुत्र होंगे–ऐसाही हुआ क्योंकि पंडितजीके चिन्तामणि, मतिराम, भूषण और जटाशंकर ४ पुत्र हुये–ये चारों भाई बड़े पंडित और कवीश्वर थे. चिन्तामणिजी बहुत दिनोंतक मकरंद-शाह भोंसलाके दर्बारमें नागपुरमें रहे और उन्हींके नामसे छन्दविचार नाम पिङ्गल बनाया–काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, काव्यप्रकाश तथा रामायण आदि ग्रंथभी इनके बनाये हुये हैं, रुद्रसाहिसुलंकी तथा दिल्लीके मुग़लबाद-शाह शाहजहांनेभी इनको बहुत इनाम दिया था. इन्होंने कवितामें कहीं २ अपना नाम मणिलालभी लिखा है–

चूडामणि जाट(भरतपुरराज्यके संस्थापक). जब बादशाह आलम-गीरकी फ़ौज दक्षिणसे लौट रही थी तब इन्होंने फौजका सब सामान रास्तेमें लूट लिया और मालदार होकर भरतपुरका किला बनवाया और जाटोंके सर्दा-र बन बैठे–बड़े साहसी और वीर पुरुष थे. भरतपुरका राज्य अबतक इस प्रभाव-शाली पुरुषके वंशमें है–स० ई० १७२० में मुगल बादशाह दिल्लीकी फ़ौजसे लड़-कर मारेगये और बदनसिंह इनके पुत्र गद्दीपर बैठे.

चूडामणि कवि–काशीवासी बाबू हरिश्चंद्र भारतेंदुने कविचूडामणि नामसे पदपूर्ति की है–देखो हरिश्चंद्र भारतेंदु.

चेतसिंह (काशीनरेश) स० ई० १७७० में निज पिता बलवंतसिंहके पीछे गद्दीपर बैठे, बलवंतसिंहके पीछे नव्वाब वज़ीर अवधने बनारसका राज्य खाल-सा कर लेना चाहा था पर ईस्ट–इन्डिया–कम्पनीने ज़ोर लगाकर चेतसिंहको गद्दी दिलवाई– बलवंतसिंहको बनारस, जौनपुर तथा चिनारकी जागीर और राजा बहादुरका खिताब बादशाह दिल्लीकी तरफसे स० ई० १७३९ में मिला था. लार्ड वारन हैस्टिङ्ग्ज़ गवर्नर जनरल हिंद और महाराज चेतसिंहमें कुछ दिनबाद झगड़ा हुआ क्योंकि ज़रूरत पडनेके कारण राजासे मामूली खिराजके सिवाय अधिक रुपया मांगा गया था, जिसके देनेसे उसने इनकार किया था. इस झगड़ेका नतीजा यह हुआ कि, महाराज चेतसिंहको अधिकार रहित करके

उनके भाजे महीपनारायणको राजा बनायागया, चेतसिंहने शेष उमर ग्वालियरमें महाराजा सेंधियाके पास रहकर गुजारी. स० ई० १८१० में मरे-महाराजमहीप नारायणके बाद क्रमशः उदितनारायणसिंह, ईश्वरीनारायणसिंह व सर प्रभुनारायणसिंह के. सी. यस. आई. (वर्तमान काशीनरेश) गद्दीपर बैठे. महाराज चेतसिंहका जीवनचरित्र "चेतचंद्रिका"•नामक ग्रंथमें है जो उनके पुत्रका बनाया हुआ है।

चैतन्यमहाप्रभु (वैष्णवधर्मके प्रचारक). मि० फा० सु० १५ वि० सं० १५४२ को सन्ध्यासमय बंगदेशके नवद्वीपनगरमें इनका जन्म हुआ-उस दिन चंद्रग्रहण था. पिताका नाम जगन्नाथ मिश्र और माताका शची देवी था. विद्यामें यह केशवपुरीके शिष्य थे और दीक्षागुरु इनके माधवेंद्र थे-बालकपनमें यह बड़ेही उपद्रवी थे. इनके माता पिताको सदा उलहिना मिला करता था-पिता इनको छोटा छोड़ मरे थे और बड़े भाई विश्वरूप पहिलेसेही संन्यासी होगये थे. इनका विवाह बल्लभाचार्य्यकी कन्या लक्ष्मी देवीसे हुआ था. इनकी विद्याकी प्रशंसा अकथनीय है. बचपनहीमें परम विद्वान् केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मणको धर्मसंबंधी शास्त्रार्थमें हराया था. इनकी पहिली स्त्री सौंपके काटेसे मर गई तब माताके अनुरोधसे इनका विवाह नवद्वीपके प्रधान राजपंडितकी कन्या विष्णुप्रियाके साथ हुआ. उन दिनों सर्वत्र बंगदेशमें शाक्तधर्मका प्रचार था और तंत्र मंत्रका बड़ा जोर था. २४ वर्षकी अवस्थामें गृहत्यागी हो इन्होंने वैष्णवमतका प्रचार किया. पहिले तो ६ वर्षतक ब्रज तथा जगदीशपुरीमें भ्रमण करके निज मतका प्रचार किया और उपयुक्त शिष्यमंडली संग्रहण की. फिर ब्रजमंडलमें अपने शिष्यरूप सनातन गोस्वामीपर और बंगदेशमें अद्वैत और नित्यानंदमहाप्रभुपर धर्मप्रचारका भार छोड़कर आप १८ वर्षतक श्रीजगन्नाथजीकी सेवामें नियुक्त रहे.

अंतको ४८वर्षकी उमरमें एक दिन समुद्रके तीर नहाने गये थे.वहाँसे नहीं लौटे निम्नस्थ संस्कृतग्रंथ इनके बनाये हुये हैं:- गोपालचरित्र, तत्त्वसार, प्रेमामृत, संक्षेपभागवतामृत, हरिनामकवच. चैतन्यदेवको बंगवासी लोग कृष्णका अवतार मानते हैं.

चौंडा-ये राना लखाराम चित्तौड नरेशके ज्येष्ठ पुत्र बड़े बलाढ्य और दृढप्रातज्ञ हुये हैं. इन्होंने निजपिताके किसी कुवाक्यपर अप्रसन्न होकर चित्तौडका राज्य त्याग करअपने छोटे भाई मोकलदेवजीको इस शर्तपर दे दिया था कि, चौंडा और उसकी संततिका चित्तौड दर्बारके सरदारोंमें सदैवकेलिये सर्वोच्चपद रहेगा और उसका चिह्न भाला सदैव राना चित्तौडके दस्तखतोंके साथ लिखा जायगा राना लखारामके पश्चात् स० ई० १३९८ में राना मोकलदेव अपने बड़े भाई

चौंडाकी दोनों शर्तोंको स्वीकार करके चित्तौडकी गद्दीपर बैठे. अबतक महाराना उदयपुरके दस्तखतोंके साथ चौंडाका भाला चिह्न लिखाजाता है और सालंबरके रावत जो चौंडाके वंशज हैं अबतक उदयपुर दर्बारके सर्वोच्च सरदारोंमें गिने जाते हैं.

चौंडा (चौंड्रियाराय) पृथ्वीराज अन्तिम दिल्लीपतिका मुख्य सेनापति था ये बड़ा चालाक कलाकौशल्यादिमें निपुण, रणकार्यमें दक्ष, वीर पुरुष था. बहुधा वेष बदल २ कर स्त्रियोंके वस्त्र और आभूषण पहिनकर शत्रुओंके दलमें घुस जाता और प्रधान शत्रुको वध करता था. एक दफे पृथ्वीराज घायल होकर कूचमें ६ महीनेतक अपनी सेनासहित पडारहा था. उसीवक्तकी बनवाई चौंडाकी बैठक अबतक कूचमें विद्यमान है. अंतमें पृथ्वीराज और परमालके युद्धमें ऊदल आदि अनेक वीर सावन्तोंको मारकर चौंडा रणशायी हुआ. मक्कार और दिलबढ़ी स्त्रीको अबतक चौंडरा कहते हैं.

चंद्रसखी–ये भाषा कवि स० ई० १५८१ केसाल ब्रजमें जन्मे। इनके बनाये अनेक भजन देश भर में प्रसिद्ध हैं। इनका छाप यह है–"चंद्रसखी भज बाल कृष्णछवि"

च्यवन ऋषि–ये भृगुऋषिके पुत्र थे नर्मदातटपर बैठ कर इन्होंने बहुत दिनोंतक तप किया था एक दिन राजा श्रजात शिकार खेलता हुआ सुकन्या नामक राजकुवाँरीसहित च्यवनऋषिके स्थानपर जा निकला–सुकन्याने च्यवनऋषिको मट्टीका ढेला समझकर उनके नेत्रोंमें जो दो सूराखसे मालूम पडते थे उनमें लकड़ी चुभोदी–जब रुधिर बह चला तब ज्ञात हुआ कि, यह तो कोई ऋषि हैं जो तप करते २ देहानुसन्धान रहित हो गये हैं. राजाने यह देख राजकुमारीको ऋषि के स्थानपर छोड़दिया और खुद अपनी राजधानीको लौटगया. कुछ दिनों बाद अश्विनीकुमार वैद्य वहां जानिकले और सुकन्याके यौवन पर तरस खाकर च्यवनऋषिकी आँखोंको आराम करदिया और एक ओषधि (च्यवनरसायन) उनको खिलाकर बूढेसे तरुण करदिया. बादको च्यवन ऋषिने बहुतकालतक गृहस्थाश्रम धारण किया. उनकी संतति दूसर कहलाई. आराम करनेके बदले च्यवनऋषिने अश्विनीकुमारका यज्ञोंमें भाग नियत कराया. इनका नाम वेदकी अनेक ऋचा ओंमें भी पायाजाता है. "जीवदान" नाम चिकित्सा ग्रंथ इन्होंने बनाया था.

छीतः स्वामी–(भाषाकवि–अष्टछाप). ये गोस्वामी विठ्ठलनाथजीके शिष्य अच्छे कवि थे ब्रजके ८ प्रसिद्ध कवीश्वरोंमें इनकी गणना है. २५२ वैष्णवभक्तोंकी वार्त्ता तथा राजा नागरीदासकृत पद्प्रसङ्गमालामें लिखा है कि, ये मथुराके चौबे थे. पहिले बड़े गुंडे थे लोगोंसे छेडछाड किया करते थे और गोस्वामी विठ्ठलनाथजीकी प्रशंसा सुन ईर्षावश जलभुन जाते थे एक दिन तंग करनेकी इच्छासे खो-

खले नारियलमें राख भरकर और एक खोटा रुपया लेकर गोस्वामीजीके पास आये और भेंट किया गोस्वामीजी भेद समझकर बोले छीतः स्वामीजी नारियल फोड़कर गिरी वैष्णवोंको बाँट दो. नारियल जो फोडागया तो उत्तम गिरी निकली उसी समय छीतःस्वामीने गोस्वामीको गुरु करलिया. छीतःस्वामी राजा वीरबलके मथुरिया पंडा थे.

छत्रसाल महाराजा (बुन्देला) अपने दादे रावरतनके बाद बूँदीकी गद्दीपर बैठे पन्नाका राज्यभी इन्हींके अधिकारमें था. इनके पिता चंपतराय गद्दीपर बैठनेका अवसर आनेसे पूर्वही मर चुके थे, ये दिल्लीके तख्तको राजस्व देते थे शाहजहाँने इनको दिल्लीका सूबेदार नियत किया था और उस पदपर ये बहुत दिनोंतक रहे शाहजहाँके बीमार पडनेपर स० ई० १६५८ में जो उसके बेटोंमें तख्तके लिये झगड़ा पैदा हुआ था उसमें राजा छत्रसाल शाहजादे दाराशिकोहके तरफ दार थे और इसी मारकेमें मारेगये. राजा छत्रसाल महान् कवि, गुणीजनोंके ग्राहक, साहित्यके निपट चाहक, शूरशिरोमणि, उदारचित्त बड़े नामी थे. बहुतसे कवि इनके दर्बारमें नौकर थे और बहुतसे देशदेशान्तरोंसे इनका यश सुनकर आते और निहाल होकर लौटजाते थे. निदान इनकी दान सन्मानकी कीर्त्ति सुन बुन्देलखण्ड, बैसवाडा, अन्तर्वेद (हरिद्वार और प्रयागके बीचका मुल्क) इत्यादि देशोंमें हजारों कवीश्वर हो गये थे राजा छत्रसालने छत्रप्रकाश नाम ग्रंथ जिसमें बुन्देलोंकी उत्पत्तिसे छत्रसालके समयतक बुन्देलखण्डी राजोंका वृत्तांत है बनवाया था. एक साल अकाल पडनेके कारण बुन्देलखण्डकी प्रजा भूखों मरनेलगी तब छत्रसालजूने प्रजागणका दुःख मिटानेके लिये छत्रपुरनामका नगर बसाया और बहुत रुपया खर्चा करके वहां ऐसी मंडी डाली जिसमें दूर २ से माल आने लगा और काल मिटगया-एक दफे उड़छाके राजाने उट्टेके तौरपर यह लिखा कि "उडछाके राजा और दतियाकी राई । अपने मुहँ छत्रसाल बनत भनवाई"॥ तब छत्रसालने निम्नस्थ कवित्त लिखकर उनके पास भेजादिया- "सुदामा तन हेर्यो तब रङ्कहूते राव कीन्हो, विदुर तन हेर्यो तब राज दियो चेरेते । कुबरी तन हेर्यो तब सुंदरस्वरूप दीनो, द्रौपदी तन हेर्यो तब चीर बाढ्यो तेरेतें । कहत छत्रसाल प्रह्लादकी प्रतिज्ञा राख्यो, हरनाकश्यपु मार्यो तनिक नजरके फेरेतें। एरे अभिमानी गुरुज्ञानी भये कहा होत, नामी नर होत गरुडगामीके हेरेतें."॥ छत्रसालजूके ४ पुत्र थे जिनकी संतति अजयगढ, चरखारी, पन्ना, विजावर इत्यादि रियासतोंमें अबतक राज्य करती है.

क्षेमेंद्र-काश्मीरनरेशके दर्बारमें विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें क्षेमेंद्रनाम बड़े भारी कवि हुये थे-इनके रचे अनेक ग्रंथोंमेंसे कुछेक नाम नीचे लिखते हैं:-

अमृतरङ्गकाव्य, औचित्यविचारचर्चा, कलाविलास, कविकण्ठाभरण, चतुर्वर्गसंग्रह, चित्रभारतनाटक, दशावतारचरित्र, पद्यकादम्बरी, बृहत्कथामंजरी, भार-

तमंजरी, मुक्तावली, राजावली, रामायणमंजरी, लावण्यवती, लोकप्रकाशकोश, वात्स्यायनसूत्रसार, शशिवंशमहाकाव्य और मुनिमतमीमांसा.

जगजीवनदास–(भाषाकवि–सत्यनामी पंथके आरोपणकर्त्ता). ये महाराज बडे महात्मा, भाषाके सुकवि, सत्यनामी पंथके आचार्य्य हुये हैं. चंदेलकोटवा जिला बाराबंकीके रहनेवाले वि० सं० १८४१ में विद्यमान थे–इन्होंने तथा इनकी परम्परामें होनेवाले सब महंतोंने भाषाकाव्य की है जिसमें बहुधा शान्तिमय गीत पायेजाते हैं–

जगतजीतसिंह–(कपूरथलानरेश). आपके पिता खड्गसिंहजी २८ वर्षके होकर मरे, एवं स० ई० १८७७ में ५ वर्षकी उमरमें आपको गद्दी मिली नाबालिगीकी हालतमें सरलेपिलग्रेफिन आदि ९ अंग्रेजोंने क्रमशः राज्यका प्रबंध किया–स० ई० १८९० में बालिग होनेपर राज्यका पूरा अधिकार आपको सौंपागया–चतुर और विद्वान् पुरुष हैं–फरासीसी तथा अंग्रेजीभाषामें खूब बातचीत करसकते हैं–स्वभाव मन लुभानेवाला है–काँगडाके एक प्रतिष्ठित राजवंशमें विवाहेगये हैं-रियासतमें ग्यासकी रोशनी जारी की है–नया महल अपना अंग्रेजीढंगसे सजाया है–प्रजागणकी शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान है– राज्यप्रबंध प्रशंसनीय है. खालसापंथको मानते हैं. यूरोपके अनेकदेशोंकी सैर कर आये हैं–ब्रिटिशगवर्नमेंटके आधीन आपकी रियासत है. फिरंगीलोग आपकी प्रतिष्ठा करते हैं. आपके दादा महाराजा सर रणधीरसिंहजीने सन् ५७ के गदरमें अंग्रेजोंकी मदद करके जी. सी. यस. आईकी पदवी और अवधप्रांतमें बहुतसी जमींदारी तथा १० हजार रुपया नक़द और खिलत पाया था और अपनी राजधानी कपूरथलामें अनेक सुंदर मकान बनवाये थे. रियासतका विस्तार ८०० वर्ग मील है और आबादी ढाईलाख मनुष्योंकी है.

जगतसेठ फ़तेचंद–मकसूदाबाद (मुर्शिदाबाद) के रहनेवाले थे, मुहम्मदशाह मुगल बादशाह दिल्लीने इनको जगतसेठका खिताब देकर बादशाही कोशाध्यक्ष नियत किया था. यह काम इनके वंशमें कई पीढियोंतक चला. यह उस गुप्त सभामेंभी शामिल थे जो नवाब बंगालके अन्यायसे दुःखी होकर बंगालके ४ प्रधान पुरुषोंने अंग्रेजोंको बुलानेके लिये की थी और जिसका नतीजा स० ई० १७५७ में पलासीकी लड़ाईमें निकला, ये तथा इनके अनेक वंशधारी बड़े उदार और दातार हुये हैं जिन्होंने अनेक रईसोंको शरण दी और लाखों रुपयेसे उनकी मदद की इनके समान धनाढ्य कोई दूसरा हिंदोस्थानमें नहीं हुआ है इनके व्यापार की कोठियाँ प्रायः हिंदोस्तानके सब बड़े२ शहरोंमें थीं. पलासीकी लड़ाईके समय लार्ड क्लायबकी इन्होंने तन मन धनसे सहायता की थी. जगतसेठ जैनी थे इनके मंदिरोंमें करोडों रुपयोंका सामान था. जवाहिरात, अशरफी तथा रुपया गिना या तोला नहीं जाता था वरन, कोठरियोंमें भर २ कर नापा जाता था. इतना सब होते हुयेभी यह कुबेरके समान धनाढ्यवंश समयके हेर फेरसे नि-

धनी होकर नष्ट होगया, जगतसेठ कृष्णचंद्रको ब्रिटिशगवर्नमेंटसे एक हजार रुपया मासिक पेन्शन गुजरानके लिये लेना पड़ी, ये काशीमें आ बसे थे और स० ई० १८९० में विद्यमान थे इनके कोई औलाद न थी एवं इनके पीछे जगतसेठके वंश में कोई न रहा सत्य है-

दो०-सदा न काहूकी रही, पीतमके गल बाँह। ढुरती २ यों गई, ज्यों तरुवरकी छाँह॥

जगनायक कवि-ये महोबा (बुंदेलखंड) वासी कवि स० ई० ११९१ में राजा परमालके दर्बारमें मौजूदथा। आल्हखण्ड इसीका बनाया हुआ है।

जगन्नाथ त्रिशूली, पंडितराज-तैलङ्गदेशवासी पेरूभट्टके पुत्र थे माताका नाम लक्ष्मी था. ये सम्पूर्णशास्त्र निजपिताहीसे पढ़े थे. कर्नाटकके राजाको अनेक श्लोक बनाकर इन्होंने भेंट किये पर उसने कुछ ध्यान न दिया निदान ये जयपुर चले आये जयपुरनरेशने पाठशालोंमें इनको अध्यापक नियत किया और पंडित राज उपाधि दी उसीसमय दिल्लीमें संस्कृतका ज्ञाता एक काजी था उसने धर्मविषयकशास्त्रार्थमें अनेक पंडितोंको हरा दिया था पंडितजीने यह बात सुनकर एक वर्षमें सब यवनधर्मके ग्रंथ पढ़े और फिर दिल्ली जाय उक्त काजीको परास्त किया. मुगलबादशाह शाहजहाँने इनको अपने शहजादे दाराशिकोहका शिक्षक नियत किया थोडेही दिनोंमें बादशाहसे इनका इतना मेल होगया कि, यह महलोंमें जाने लगे, ये बड़े खूबसूरत हृष्ट पुष्ट और अभिमानी पुरुष थे. ये एक दिन बादशाहके साथ शतरंज खेल रहे थे, बादशाहकी लड़की लवंगी इनको देख मोहित होगई और निजपिताको पानी पिलानेके बहानेसे सोनेकी सुराई लेकर चली आई बादशाहने पंडितजीसे कहा कि, हमारी शहजादीपर श्लोक बनाओ पंडितजीने तुरंत यह श्लोक पढ़ा-

श्लो०-इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा कुसुम्भारुणश्चारुचेलं दधाना।
समस्तस्य लोकस्य चेतःप्रवृत्तिं गृहीत्वा घटे स्थापिता सावभाति॥

बादशाहने प्रसन्न हो कहा कि, "माँगोइनाम" पंडितराजने उत्तरमें यह श्लोक पढ़ा-

श्लो०-न याचे गजालिं न वा वाजिराजिं न वित्तेषु चित्तं मदीयं कदाचित्।
इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा लवङ्गी कुरङ्गी दृगङ्गीकरोतु॥

निदान लवंगीका विवाह पंडितराजके साथ बड़ी धूमधामसे होगया और एक महलभी रहनेके लिये दिया गया कुछ दिनों तो दिल्ली रहे पीछे काशी चले आये-वहाँके पंडितोंने यवनीके त्याग करने तथा यथाविधि प्रायश्चित्त करनेको बहुत समझाया पर इन्होंने नहीं माना इनके रचे १३ संस्कृतग्रंथोंमेंसे गंगालहरी, करुणालहरी, मनोरमाकुचमर्दन, भामिनीविलास और रसगंगाधर मुख्य हैं-गंगालहरीकी रचना बड़ी सरस और अनोखी है, इसके रचनेका कारण यों सुननेमें आता है कि, जब काशीके पंडितोंने इनका बड़ा अपमान

किया तो इन्होंने काशीके माणिकर्णिका घाट पर बैठकर गंगाजीकी स्तुति पढ़ी प्रति श्लोक गंगा एक सीढी बढ़ती गई. ५२ श्लोक पूरे होनेपर गंगा उसी सीढीपर पहुंच गई जहाँ पंडितजी शहजादीसमेत बैठे थे और हज़ारों मनुष्योंके देखते २ वे दोनों गंगाजीमें लोप होगये. इनके समान संस्कृतकवीश्वर इनके बाद आजतक दूसरा नहीं हुआ.

जगन्नाथ सम्राट् (जयपुरराजगुरु-रेखागणितके कर्त्ता) ये जयपुरनरेश महाराज जयसिंह कछवाहेकी सभामें प्रधानपंडित थे. मिजास्ती नामक ज्योतिषसिद्धांतका अरबीसे संस्कृतमें इन्होंने उलथा किया और सम्राट्सिद्धांत उसका नाम रक्खा. उक्तग्रंथमें १३ अध्याय और १४१ प्रकरण हैं. उन सब यंत्रोंकाभी जो महाराज जयसिंहने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, काशी और उज्जैनके आकाशलोचनोंमें लगवाये थे उक्तसिद्धांतमें सविस्तर वृत्तांत लिखा है शाके १६४० (स० ई० १६६१) में उकलैदसके १५ हों अध्यायका अनुवाद अरबीसे संस्कृतमें करके रेखागणित नाम रक्खा. यह रेखागणित अबतक जयपुरराज्यके पुस्तकालयमें मौजूद है-रेखागणित बनानेके इनाममें ५ गाँव इनको मिलेथे जिनपर अबतक इनकी संततिका जयपुरमें अधिकार है-ये अर्बी, फ़ारसी, संस्कृत इत्यादिके पूर्ण ज्ञाता थे, जन्म इनका शाके १५७४ में हुआ.

जतेंद्रमोहन टागोर–(महाराजा सर जतेंद्रमोहन टागोर बहादुर, के सी. यस. आई) कलकत्ताके प्रतिष्ठित टागोर (ठाकुर) वंशमें बाबू हरकुमार टागोरके ज्येष्ठ पुत्र हैं-प्रसिद्ध संगीतज्ञ राजा सुरेंद्रमोहन टागोर आपके कनिष्ठ सहोदर हैं-आप ठाकुर नहीं हैं बरन वर्णके ब्राह्मण हैं-ठाकुर (जिसका अपभ्रंश टागोर है) आप इस लिये कहलाते हैं कि, पहिले पहिल उन सब लोगोंसे जिनका काम काज ईस्ट इन्डिया कम्पनीसे पड़ता था अंग्रेज़लोग ठाकुर (टागोर) कहते थे. हिंदूकालिज कलकत्तेमें आपने बंगला, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओंकी शिक्षा पाई, आपने अनेक नाटक रचे हैं जिनमेंसे विद्यासुंदरनाटक बंगलामें बहुत अच्छा है, बंगालप्रांतमें बड़ी भारी ज़मींदारीके भी मालिक हैं, आसामियोंपर बड़ी दया रखते हैं, अकालके समय प्रजागणकी रक्षाके लिये अपना धन लुटाते हैं, ब्रिटिश इन्डियन ऐसोसिएशन के प्रधान हैं, और बंगालकी लेजिस लेटिव कौन्सिल तथा वायसरायकी कौन्सिलके मेम्बर अक्सर बनाये जाते हैं, निम्नस्थ खिताब आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी ओरसे पाये हैं:–

" राजा बहादुरका खि़ताब स० ई० १८७१ में
महाराजाका खि़ताब स० ई० १८७७ में
सी. यस. आई का खि़ताब स० ई० १८८० में
के. सी. यस. आई का खिताब १८८२ में "

महाराजा बहादुरकी पदवी सदैवको उत्तराधिकारियोंतकके लिये
स० ई० १८९० में-

आप बड़े दातार और उदारभी हैं-

मेओ हस्पताल बनने के लिये जमीन तथा १० हजार रुपये दिये थे,-अनेक वजीफे तथा सोने चांदीके पदक अपने बाप तथा चाचाके नामसे इम्तिहान पास करनेवाले लड़कोंको दिये जानेके लिये कलकत्ता यूनीवर्सिटीको पूरी २ रकमें प्रदान की हैं-

निज माता शिवसुंदरी देवीके नामसे हिंदू विधवाओंके पालन पोषणार्थ १ लाख रुपया प्रदान किया है--बहुतसे और ऐसेही परोपकारके काम करके आपने अपने अनेक पूर्वजोंकी अचल कीर्त्ति स्थापन की है-महाराज कुँवार प्रद्योत कुमार टागोर आपके पुत्र हैं-बलिहार होनेका मौका होता है जब आपके छोटे भाई राजा सुरेंद्रमोहन टागोरसरीखे प्रधान पुरुष आपके चरणोंपर गिर जाते हैं.

जनक-मिथिलादेश (तिरहुत) के राजा थे. इनकी राजकुमारी जानकी माताका विवाह स्वयंवरविधिसे रामचंद्रमहाराजके साथ हुआ ऋषि याज्ञवल्क्य इनके पुरोहित तथा मंत्री थे-राजा जनक बड़े विद्वान् तथा धर्मशील थे और निजयोग्यताके कारण राजऋषिपदको प्राप्त हुये थे. बहुधा देहानुसन्धान रहित होजाते थे, इसीलिये विदेह कहलाते थे-

जनमेजय--चंद्रवंशी महाराज परीक्षितके पुत्र तथा अर्जुनके पौत्र थे-महाराज परीक्षित बचपनहीमें साँपके काटेसे मरकर इनको राज पाट सौंपगये थे-बड़े होकर इन्होंने वैशम्पायन मुनिसे महाभारतकी कथामें सुना कि, महाराज परीक्षित साँपके काटेसे मरेथे, एवं इन्होंने सर्पमेध यज्ञ किया और करोडों सांपोंके कुलके कुल जलवादिये जनमेजयने भारतवर्षका एकछत्र राज्य किया था.

जमदग्नि ऋषि--कर्मधर्ममें अत्यंत निपुण थे जिसके कारण अबलों कहते हैं कि, अमुक मनुष्य कर्म धर्म में जमदग्निके समान निपुण है भृगुवंशोत्पन्न ऋचीकऋषिके पुत्र थे, माताका नाम सत्यवती था. वेदविद्याके ज्ञाता होकर त्रिकालज्ञ थे, योगबलसे जो चाहते थे पलक मारतेमें कर लेते थे. पुराणों में आपकी अनेक कथाएँ वर्णित हैं और वेदकी ऋचाओंमेंभी आपका नाम आया है आपके ५ पुत्रोंमेंसे परशुरामजी प्रसिद्ध क्षत्रियकुलद्रोही सबसे छोटे थे.

जमशेद (ईरानका बादशाह) निजचचा तहमूरसके बाद ईसासे प्रायः २ हजार वर्ष पहिले फारिस (ईरान) की गद्दीपर बैठा. इसके समयमें फारिसमें कृषिका प्रचार हुआ. गाँव आबाद हुये. जंगल साफ किये गये, सड़कें और नहरें निकाली गईं बहुतसे देव इसके यहाँ नौकर थे जिन्होंने इसकी

प्रजाको कपडा बुनना, सीना, मकान बनाना, बाग लगाना, लोहे वगैरहकी चीजें बनाना तथा पढ़ना लिखना इत्यादि सिखाया था और इसके वास्ते एक उड़नखटोलना (विमान) तथा एक प्याला जिसमें पृथ्वीभरका हाल मालूम पड़ता था बना दिया था यह प्याला सम्भवतः पृथ्वीका ऐसाही गोला होगा जैसे कि आज दिन स्कूलोंमें प्रचार है, और यह बातभी अयुक्त नहीं है कि, जमशैदके यहाँ जो देव नौकर थे वे शायद भारतवासी विद्वान् ही हों क्योंकि भारतवासी अपने विद्वानोंको देव और उनकी बोलीको देववाणी कहते हैं जमशैद अग्निपूजक था और उसकी प्रजा ४ वर्णोंमें विभागित थी अंगूर खानेका उसको बड़ा शौक था. अंगूरी शराब बनानेका तरीका उसीके समयमें दरियाफ्त हुआ. जमशैद अंतमें ईश्वरसे विमुख हुआ. प्रजागण इससे फिर गये, अरबके बादशाह जुहाकने इसपर चढाई की जिसके कारण ये अफगानिस्तानकी तरफ भागा और वहांके राजाकी लड़कीसे विवाह किया पश्चात् हिंदोस्तानमें भाग आया पर यहांसे पकड़कर जुहाकके पास ईरान भेज दिया गया और वहाँ वध किया गया.

जमशैदजी जीजीभाई बैरन नायट (Sir Jamsedji Jiji Bhai Bart.) स० ई० १७८३ में पैदा हुये माता पिता इनको छोटाईसा छोडकर मरगये थे एवं सुसरालियोंने इनकी परवरिश की, थी स० ई० १७९९ में एकनातेदारके साथ ये १२०) रु० लेकर चीनको गये और वहां व्यापार किया. कुछ दिन बाद स्वदेश को लौटे और १५ हजार रुपया कर्ज लेकर फिर चीनमें जाकर तिजारत शुरू की और इतना रुपया पैदा किया कि, थोड़ेही दिनोंमें कर्जा अदा होगया और करोड़ों रुपयेके आदमी होगये–ईमानदारीके कारण इनकी तिजारत आफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलिया आदि देशोंमेंभी फैलगई थी स० ई० १८०७ में ये बम्बईमें आकर बसे उस वक्त इनके पास कई करोड़ रुपये थे इन्होंने कभी किसीपर नालिश नहीं की और जितनी आमदनी बढ़ती गई ये उतनीही अधिक खैरात करते गये–सैंकड़ोंही उदारताके काम इन्होंने किये जिनमेंसे निम्नस्थ मुख्य हैं–

१५ हजार रुपयेके खर्चसे एक मंदिर बनवाया–

आग लगनेसे नुक्सान उठायेहुये पूनावासियोंको ३५ हजार रुपये दिये–

पूनामें पानीके नल जारी करनेके लिये १० लाख ७० हजार रुपये दिये.

१ लाख रुपयेके खर्चसे १ धर्मशाला, २ लाख रु० के व्ययसे एक चिकित्सालय तथा ४० हज़ार रु० के खर्चसे एक दूसरा मंदिर बनवाया–

आपकी पत्नीने भी प्रायः ११ लाख रुपयेके खर्चसे बम्बईमें एक पुल बनवाया था.

उपरोक्त औदार्यके कामोंके पुरुष्कार में ब्रिटिस गवर्नमेंटने आपको नायट तथा बैरोनेटकी असाधारण अंग्रेजी उपाधियां दीं–यह उपाधियें आजतक किसी दूस-

रे हिंदोस्तानीको नहीं मिली हैं-स० ई० १८५९ में परमधामको सिधारे-बम्बईमें आपकी पाषाणमूर्त्ति स्थापन कीगई है-

जयचंद्र राठौर-(अन्तिम महाराजा कन्नौज) विजयपाल राठौरके पुत्र वि० सं० १२२५ में कन्नौजकी गद्दीपर बैठे पृथ्वीराज दिल्लीनरेशसे इनक। ईर्षा द्वेष था, एवं इन्होंने राजसूय यज्ञ किया जिसके अंतहीमें अपनी कन्या संयोगताका स्वयंवरभी रच दिया-इस यज्ञमें सब राजे आये थे पर समर्सी राना चित्तौड और पृथ्वीराज दिल्लीनरेश नहीं आये थे क्योंकि उनको जयचंद्रके घर दासकृत करना स्वीकार न था, निदान जयचंद्रने अन्यराजाओंकी दृष्टिमें प्रतिष्ठा घटानेके लिये उन दोनोंकी सुवर्णमूर्त्ति बनवाकर एकको बर्तन धोनेकी जगह पर और दूसरीको ड्यूढीपर खड़ा करदिया था, संयोगता जब सभामें बुलाई गई तो उसने सब राजाओंको देख भाल जयमाल पृथ्वीराजकी मूर्त्तिमें जो ड्यूढीपर खड़ी थी डालदी, पृथ्वीराज और संयोगतामें आन्तरिक प्रेम था एवं पृथ्वीराज पहिलेहीसे दिल्लीमें छिपा हुआ मौजूद था, अवसर पाकर अपनी प्राणवल्लभाको घोड़ेपर लाद दिल्लीकी तरफ चल पड़ा, कन्नौज और दिल्लीके बीच रास्तेमें ७ दिनतक दोनों राजाओंकी फौजोंमें घोर युद्ध हुआ पर पृथ्वीराज संयोगतासहित दिल्ली जीता पहुँच गया. यह अप्रतिष्ठा महाराज जयचंद्र सहन न करसके पर अकेले कुछ करभी न सकते थे निदान उन्होंने शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको काबुलसे पृथ्वीराजपर चढाई करनेके लिये बुला भेजा. शहाबुद्दीनने कई दफे चढ़ाई करनेके बाद पृथ्वीराजको रणशायी किया जिससे हिंदुओंका बल बहुत घट गया यह देख स० ई० ११९४ (सं० वि० १२५१) में शहाबुद्दीनने कन्नौजपरभी चढाई करदी जिसमें महाराज जयचंद्र चंद्रवार (फिरोजाबाद) के मैदानमें परास्त होकर मारेगये. राठौरलोग कन्नौज छोड़ मारवाड़की तरफ भागगये जहां महाराज जयचंद्के पौत्र शिवाजीने नया राज्य स्थापन किया. इनसे १० पीढी बाद राव चौंदा हुये जिन्होंने मंढौरके राजाको परास्त किया. राव चांदाके पौत्र राव जोधाने स० ई० १४५९ में जोधपुर बसाया जो अबतक माड़वाड़की राजधानी है. हिंदोस्तानमें राठौरोंके ८ राज्य हैं जिनमेंसे जोधपुरका राज्य मुख्य गिना जाता है. महाराज जयचंद्र और पृथ्वीराजके वैरभावके विषयमें यह कहना जरूरी है कि, परस्परके विरोध और गैरोंसे मेल मिलाप करनेके कारण हिंदुओंके दोनों राज्य नष्ट हुये और मुसलमानोंके राज्यकी मूलरोपण हुई. महाराज जयचंद्रका राज्य बक्सरसे कन्नौजतक सर्वत्र देशमें था.

जान्सन--देखो सैमुअल जान्सन.

जाबालि ऋषि-महाभारतमें लेख है कि, वैशम्पायन ऋषिने विन्ध्याच

लपर्वतके समीप तपोवनमें जाबालि ऋषिको अशोकवृक्ष के तले बेंतके आसनपर बैठा देखा, वे उन दिनों अत्यंत बूढे थे पर उनका तेज सूर्य्यकासा था वे तपस्वी थे और एवं क्षमाशील शान्ति अक्रोध और शतपथदर्शकताके अवतार मालूम होते थे उनके देखनेसे चित्तमें भय और विस्मय दोनों पैदा होते थे त्रिकालदर्शी थे और ज्ञानदृष्टिद्वारा संसार उनके करतल पदार्थकी भांति था--अनेक शिष्य उनसे विद्या पढ़ते थे और बहुतसे मुनीश्वर लोग तपोवनमें रहकर तप करते थे और फुर्सतके वक्त वेदशास्त्रके सूक्ष्म विषयोंपर उनसे वार्त्तालाप करते थे, वैद्यकग्रंथ हारीतसंहिताके कर्त्ता हारीत मुनि उनके पुत्र थे. ऋषि जाबालिके प्रतापसे तपोवनके वृक्ष, फल फूल और पत्तोंसे ढके हुये थे इलाइची और लवंगके वृक्षोंपर भौंरोंके झुंडके झुंड रहते थे सुगंधि चारों ओर छाई रहती थी.

अनेक लताओं और वृक्षोंकी डालियोंके मिलनेसे स्थान २ पर सुंदर रमणीय गृह बनगये थे जिनमें धूप नहीं जाती थी-बड़े २ ऋषि लोग वेद मंत्र पढ २ कर होम करते थे वायु होमकी सुगंधिसे व्याप्त होकर धीरे २ बहती थी--कोई ऋषिकुमार उच्चस्वरसे वेद और कोई शान्तभावसे धर्मशास्त्र पढ़ते थे-वृक्षोंकी शाखाओंमें मुनीश्वरोंके मृगचर्म, कमण्डलु और माला लटकरही थीं और तले बैठनेको वेदी बनी थीं, तपोवनके गऊ, मृग, सिंह और शृगाल.इत्यादि अनेक पशु, पक्षी सहज वैरको भूलकर सङ्ग २ निर्भय चरते थे. हिंसा, द्वेष, वैर और मात्सर्य्यका वहाँ लेशमात्रभी न था कामधेनु गायें घर आतेही बर्तनोंको दूधसे भर देती थीं यह सब जाबालिऋषिके तपका प्रभाव था, न्यायशास्त्र तथा वैद्यकशास्त्रके ये पूर्ण ज्ञाता थे और "तंत्रसार" नामक चिकित्साग्रंथ इनका रचा हुआ है, ये अवधनरेश दशरथजीके पंडित थे रामवनवासकी सम्मति इन्होंनेभी इस कारण दी थी कि, रामजी राक्षसोंको मार ऋषि मुनियोंका संकट दूर करेंगे.

जालीनूस (Galen) ये यूनानी हकीम स० ई० के दूसरे शतकमें पैदा हुआ वैद्यकशास्त्र पढ़नेके लिये इसने देश विदेश बहुत भ्रमण किया. मिश्र और यूनानके सब बड़े २ वैद्यक स्कूलों और हस्पतालोंमें जाकर रहा. वैद्यकशास्त्रकी प्रायः ४०० पुस्तकें इसने लिखी थीं अंतमें ये रोम में जाबसा अनेक असाध्य रोगियोंको चंगा करके प्रसिद्धि पाई. इसके रचे बहुतसे ग्रंथ रोमके एक मंदिरमें जलगये. अपने समयके यूनानी हकीमोंमें अद्वितीय गिना जाता था. स० ई० १९३ में ९० वर्षकी उमरमें मरा.

जीवाजीराव सेंधिया, के० सी० बी०, जी०सी०यस०आई० (ग्वालियरनरेश) महाराज जनकोजीराउ सेंधियाकी अपुत्रविधवाने इनको ८ वर्षकी उमरमें गोद लिया नाबालिगीकी हालतमें अंग्रेज रजीडेन्ट रियासतका

काम करता रहा स० ई० १८५४ में रियासतका पूरा अधिकार आपको सौंप दियागया. आपके समयमें रियासतमें अनेक सुधार हुये और मुल्कमें अमन चैन फैलाया गया, आपका मंत्री सर दिनकरराव, के० सी० यस० आई० एक सुयोग्य ब्राह्मण था. सन् ५७ के गदरमें महाराजने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मदद की जिसके पुरुष्कारमें पुत्र गोद लेने तथा फौज और तोपें बढानेका अधिकार तथा कुछ मुल्कभी और आपको दिया गया. स० ई० १८८५ में ग्वालियरका किला जो दौलतराव सेंधियाके समयमें अंग्रेजोंने फतह करलिया था महाराजको झांसीके बदलेमें वापिस मिला. आपने बड़ा खजाना जमा किया था जिसका भेद किसीको नहीं मालूम था. आपके बाद उसमें ६ करोड़ २० लाख रुपया नक़द पाया गया, और जवाहिरातका ढेर इतना बड़ा निकला कि,पृथ्वीपर दूसरी जगह नहीं होगा ५२ वर्षकी उमरमें स० ई० १८८६ के साल एक पुत्र मौधौराव सेंधिया (वर्त्तमान नरेश) को छोड़ आप स्वर्गगामी हुये आपका स्वभाव सुंदर और सरल था, चित्त उदार और निष्कपट था, गुणीजनोंका सत्कार करते थे और प्रजापालनमें दत्तचित्त रहते थे. ग्वालियरराज्यका विस्तार ३० हजार वर्ग मील है- १२ लाख पाउंड वार्षिक आय है. अनेक स्कूल और कालिज रियासतमें जारी हैं.

जुगलकिशोरभट्टराजा (भाषाकवि).ये दिल्लीनरेश मुहम्मदशाह मुगलके मुसाहिब थे. वि० सं० १८०३ में "अलंकारनिधि" नामक ग्रंथ इन्होंने बनाया, जिसमें ९६ अलंकार उदाहरणसहित वर्णित हैं. इसी ग्रंथमें निम्नस्थ दोहे इन्होंने अपने विषयमें लिखे हैं-

दोहा-ब्रह्मभट्ट हौं जातिको, निपट अधीन निदान ।
राजापद मोकों दियो, मुहम्मद शाह सुजान ॥
चार हमारी सभामें, कोविद कविमति चार ।
सदा रहत आनँद बढे, रसको करत विचार ॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, औ सुखलाल रसाल ।
शतंजीव सुगुमान हैं, शोभित गुणनि विशाल ॥

ये कैथलके रहनेवाले थे.

जेनर-(डाक्टर जेनर-Doctor Jenner).ये इंग्लैंडके किसी गाँवके रहने वाले थे. प्रथम जब ये वैद्यकशास्त्र पढ़ते थे तब स०ई०१७९६ में इनको एक ग्वालिनसे यह भेद मिला कि, ग्वालियोंके चेचक बहुत कम निकलती है. डाक्टर साहिबने बड़े परिश्रमसे दरियाफ्त किया कि, मनुष्यकी तरह गायोंमें कभी २ यह रोग थनोंके ऊपर छोटे२ जल भरे फफोलोंके सदृश देख पडता है जिसको गऊथन शीतला कहते हैं. इन फफोलोंमेंका चेप ग्वालियोंके हाथमें लगकर उनको सदैवके लिये चेचकसे निर्भय करदेता है जब यह निश्चय हो गया तो इस चेपकी

परीक्षा आदमियोंपर की गई और उसमें सफलता प्राप्त हुई, पर गउओंके थनोंसे यह चेप थोड़ाही मिलता था और इसीकारण चेपका अभाव रहता था. निदान सोचते २ डाक्टर साहिबने निश्चय किया कि, टीका लगानेसे जो बाल-कभी बाहँमें फफोले पडते हैं उनमेंसे जो ७ वें या ८ वें दिन चेप निकलता है वहही टीका लगानेका काम दे सकता है. अब दुनियाभर इसी चेपका प्रयोग टीका लगानेमें करती है. ब्रिटिश पार्लियामेंटने स० ई० १८०२ की सालमें डाक्टर जेनरको चेचकके टीकेकी ईजादके पुरष्कारमें एक लाख रुपया दिया और स० ई० १८०७ में २ लाख और दिये. जबतक डाक्टर साहिबको इस काममें सफलता प्राप्त नहीं हुई थी लोग उनपर हँसते थे और अनेक प्रकारके कष्ट उनको देते थे. परंतु जब मालूम हुआ कि, उन्होंने एक बड़ीभारी ईजाद की है तब तो सब-के दाँत खुलगये.

जेम्सवाट–(Games watt) इन्होंने न्युकोमन साहिबकी बनाई धुएंकी कलको पूर्णरीतिसे बनाकर सुधारा ये स्काटलैंडके रहनेवाले थे. बुद्धि बचप-नहीसे अद्भुत थी. ६ वर्षकी उम्रमें यूक्लिडकी १ साध्य इन्होंने सिद्ध की थी. पदा-र्थ तथा विज्ञानशास्त्रके तजरुबे करते रहते थे जिस खिलौनेको खरीदते उसको तोड़कर देखते थे कि, कैसे बना है. १८ वर्षकी उम्रमें लन्डन नगरको गये और १ वर्ष वहां रहकर अनेक प्रकारके औजार व यंत्रोंका बनाना सीखा. फिर स्का-टलैंडको वापिस आये और एक कारखाना जारी किया इन्होंने बहुकालतक धुयेंकी प्रकृति और उससे पहियोंमें हरकत पैदा करनेकी तरकीबपर गौर करके लोकोमोटिव एञ्जिन (धुयेंकी कल) बनाई दो और कलेंभी इन्होंने बनाई थीं. एक तो खत छापनेकी. दूसरी भाप सुखानेकी. जो काम हजारों लाखों घोड़ों बैलोंसे लेना कठिन था वह अब इनकी बनाई धुयेंकी कलसे रेल जहाज और पुतली-घरोंमें लिया जाता है स० ई० १८१९ में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे. असभ्य मनुष्य सब काम अपने हाथसे करते हैं अर्द्ध सभ्यलोग दूसरे लोगों और जानवरोंसे काम लेते हैं, सभ्यलोग जैसे आज कल्हके यूरोप और अमेरिकादेशवासी बड़े २ काम जल, वायु और अग्निसे चलनेवाली कलोंके द्वारा करते हैं और सभ्यताके सर्वोच्च शिखरपर पहुँचकर मनुष्य सब कठिन और असम्भव काम पलक मारतेमें योग अथवा तपोबलसे करलेते हैं जैसें इस देशके प्राचीन ऋषि मुनि.

जैमिनि ऋषि–(पूर्वमीमांसाशास्त्रके रचयिता). ये महर्षि व्यासके शिष्यथे-हाथीने इनको मारडाला-

जैयट उपाध्या–ये काश्मीर वासी प्रसिद्ध वैद्य हुये हैं, मम्मट, कैयट तथा औवट तीनों इनके पुत्र महाविद्वान् हुये हैं–सुश्रुतसंहिताका टीका सबसे

पहिले इन्हींने किया-विक्रमी संवत्की १२ वीं शताब्दी इनका समय है-जैयटका अपभ्रंश जेजट भी कहीं २ लिखा पाया जाता है-

जैसाल-(रावल जैसाल जैसलमेरु राज्यके संस्थापक) प्रायः स० ई० ११५६ में इन्होंने जैसलमेरु बसाकर वहां एक किला बनवाया-इनसे १७ पीढी बाद बरारसिंहने होकर फरीदकोटका राज्य स्थापन किया, बरारसिंहकी तीसरी पीढीमें फूलसिंह एक वीर पुरुष हुये जिनकी संतति अबतक झींद, नाभा, भादौर और पटियालामें राज्य करती है, फूलसिंहके द्वितीय पुत्र रामसिंहने पटियाला राज्यवंशकी मूलरोपण की-रामसिंहके पुत्र आल्हासिंहने पटियालेका शहर बसाया और अहमदशाह दुर्रानीसे राजाका खिताब स० ई० १७६२ में पाया.

जोधबाई- ये जयपुर नरेशकी बेटी बादशाह अकबरको व्याही थी-बचपनमें इसने स्वप्न देखा था कि, चाँद इसकी कोखसे निकलकर आस्मानकी तरफ ऊंचा हुआ और ये उसके पीछे उड़ी-जब चांद बहुत ऊंचा होगया तब ये गिरपड़ी-पंडितोंने इस स्वप्नका फल यह बताया कि, ये किसी अन्य जातीय बादशाहको व्याही जायगी और अपने पुत्रके गद्दीपर बैठनेसे पहिलेही मर जायगी. पंडितोंका कथन ठीक हुआ-स० ई० १५६९ में इसका विवाह बादशाह अकबरसे हुआ और आगरानिवासी फकीर शैख़ सलीम चिश्तीकी दुआसे इसके "सलीम" नामक शहजादा पैदा हुआ जो बादको जहांगीर नामसे तख्त पर बैठा जोधबाईको पं० रामानन्द महलमें जाकर पढ़ाते थे पश्चात् कुछ दिनों तक बीरबल पढ़ाते रहे-शहजादे सलीमके पैदा होनेपर पढ़ना लिखना छोड़ पुत्रके लालन पालनमें लगी और खुदही दूध पिलाया-जोधबाई भाषा कविता भी करती थी और इसके महलमें साप्ताहिक सभा स्त्रीकवीश्वरोंकी हुआ करती थी-अत्यंत सुंदरी और गुणवती होनेके कारण अकबरको अन्यबेगमों की अपेक्षा अधिक प्यारी थी. अकबरसे ११ वर्ष ६ महीने छोटी थी और राजपूतों के मामलातमें निजपतिको बहुधा सम्मति दिया करती थी. ये बड़ी उदार, दयामई और शीलस्वभावकी अच्छी थी. घोड़े पर चढ़ना मेख उखाड़ना खूब जानती थी और बड़ी निर्लोभ थी. मरते दमतक हिंदुओंके त्यौंहारोंको मानती रही-इसके पूजा करनेका मंदिर अबतक आगरेके किलेमें है-स० ई० १६०० में ४७ वर्षकी होकर मरी-शहजादा सलीम इसका जनाज़ा पकडकर रोया जिसे देख बादशाह अकबर भी रोनेसे न रुकसका इसके मरनेपर बादशाह अकबरने सब राजपूतोंको भद्र करानेकी आज्ञा दी और १० दिन तक सब कचहिरियां बंद रहीं-अकबरके बेटे जहांगीरको भी रावमालदेव जोधपुर नरेशकी जोधबाई नामक राजकुंवारी व्याही थी , पर वह विशेष प्रसिद्ध नहीं.

जोधासिंह राठौर-(रावजोधा जोधपुर नरेश). राव रणमलके २४ पुत्रोंमें सबसे बड़े थे, इन्होंने जोधपुर शहर बसाया और स० ई० १४५

में उसको अपनी राजधानी बनाया-अपने समयके अत्यंत पराक्रमी और साहसी राजा हुये हैं-इनके छठे पुत्र बिकासिंहने बीकानेर बसाया-

जोराष्टर-(Zoraster). इन्हींका दूसरा नाम ज़र्दश्त है. इन्होंने अग्निपूजकोंकी मत चलाया-इनके बाप पोर्शस्य वलखके रहनेवाले थे. स० ई० से ३ हजार वर्ष पहिले इनका समय है, पर फिरङ्गी विद्वान् स० ई० से ५२५ वर्ष पूर्व इनका होना सिद्ध करते हैं, पठन पाठनकी तरफ बचपनहीसे इनकी अधिक ... प्रतीत होताहै कि, इन्होंने भारतवर्षमें आकर विद्या पढ़ी थी. क्योंकि (इनके) नियम वैदिक मतके नियमोंसे बहुत मिलते हैं और इनकी निर्माण (की) हुई पुस्तक"जेंदावस्ता"में वेदोंका हवाला भी मिलता है और उसकी भाषा भी कुछ २ संस्कृतसे मिलती है, जरदश्त अत्यंत विद्वान् होकर ज्योतिषशास्त्रमें निपुण थे. बादशाह कैखुसरो ईराननरेश इनके मतके विरुद्ध था एवं उसने इनके मरवाडालनेके अनेक उपाय किये पर एक न चला. कैखुसरोके बाद गुस्ताशपने ईरानकी गद्दीपर बैठकर इनका मत ग्रहण किया और अस्फंदियार पहिलवान द्वारा अपने राज्यभरमें जो काबुलसे यूनानतक था और जिसमें अरब तथा तुर्किस्तान भी शामिल थे, इनके मतका प्रचार कराया. जब सिकंदर आजमने ईरानके राज्यको नष्ट किया तब अग्निपूजक लोग स्वदेश छोडकर अन्यदेशोंमें जा बसे. अब इस मतके अनुगामी बम्बईमें थोड़ेसे फारसी लोग रहगये हैं जो बड़े धनाढ्य हैं. अग्निपूजकोंकी "दसातीर" नामक पुस्तकमें लिखा है कि, एक यूनानी ब्रह्मज्ञानीको जरदश्तने अपनी जन्मकुण्डलीके ग्रह दिखलाकर विश्वास करा दिया था कि, मैं मक्कार नहीं बरन शतपथ दर्शानेवाला महात्मा पुरुष हूं. हिंदोस्थानसे भी एक जैनी विद्वान् और दूसरे महर्षि वेदव्यास जरदश्तसे शास्त्रार्थ करने ईरानको गये थे. शास्त्रार्थसे पहिलेही एक शिष्यने"जेंदावस्ता" खोल वे सब प्रश्नोत्तर जो ऋषिलोग करनेको थे दिखलाये जिससे दोनों जरदश्तकी प्रशंसा कर लौट गये. जरदश्तकी पुस्तकमें यहभी लेख था कि, जब ईरानी अधर्मी होजायँगे तब यूनानका एक बादशाह उनको परास्त करेगा जब सिकंदरने यूनानियोंको जीता तब किसी आदमीने उक्त लेख उसको दिखलाया जिससे वह जरदश्तके मतपर विश्वास करनेलगा .७० वर्षकी उम्रमें तुर्किस्तानके बादशाह अर्जासपके एक सरदारने जरदश्तको घायल करके मारडाला.

जयदेव मिश्र (गीतगोविंदके रचयिता).ये किन्दु बिल्वगाँम जिला वीरभूमिमें जन्मे. पिताका नाम भोजराज और माताका नाम रमादेवी था. वे दोनों इनको छोटाही छोड़कर मर गये थे. जयदेव ऐसे तीव्र बुद्धि थे कि, गुरुसे एकसमय में ही पक्षभरका पाठ पढ़लेते थे जिसके कारण इनका नाम पक्षधर मिश्र पड़गया था.

विद्या पढ़नेके बाद राजा लक्ष्मणसेन बंगालाधिपतिके दरबारमें राजकविके पदको प्राप्त हुये यह बात महाराज लक्ष्मणसेनके सभास्थानके द्वारपर लगे हुये पत्थरपर अंकित निम्नस्थ श्लोक से विदित होती है:-

श्लो०-गोवर्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः ।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य च ॥

स० ई० १२०३ में जब राजा लक्ष्मणसेन सुलतान मुहम्मद गोरीके सेनापति मलिक काफूरसे परास्त होकर उडीसाको भागे तो जयदेवजी भी उनके साथ उडीसा चले गयेथे और जगन्नाथ स्वामीकी सेवामें बहुत दिन रहे-वहीं इनका विवाह एक ब्राह्मणकी पद्मावती नामक कन्यासे हुआ और वहीं रहकर गीत-गोविंद बनाया-उडीसानरेश इनकी बड़ी प्रतिष्ठा करताथा-बहुत दिनोंबाद जब इनकी पतिव्रता स्त्रीका देहान्त होगया तो यह दुःखी हो अपनी जन्मभूमि किंदुबिल्वको लौट आये और एक पाठशाला स्थापन करके पढ़ाने लगे-भजन बहुत किया करतेथे और परम वैष्णव थे-विद्यार्थी इनका नाम सुनकर दूर २ से आतेथे प्रसिद्ध पंडित रघुनाथ शिरोमणि इत्यादि इनके शिष्य थे-किंदुबिल्व (केंदुली) गाँवमें अबतक इनकी समाधि है, जिसपर मकरकी संक्रांतिके दिन बड़ा मेला होता है हजारों वैष्णव इकट्ठे होकर संकीर्त्तन करते हैं-भक्तमालके लेखसे विदित होताहै कि, ये परमयोगी और तपस्वी,क्षमा, दया, शील और उदारताके अवतार थे अपने अपकारियोंका भी उपकार करतेथे गीतगोविंदके समान किसी दूसरे संस्कृतग्रंथकी रचना मधुर कोमल रसीली और मनोहर नहीं है-प्रत्येक पदमें प्रेमरस भरी भक्ति झलकती है-गीतगोविंदका अनुवाद अनेक फरंगी तथा हिंदुस्तानी भाषाओंमें होगया है

जयपाल-(पंजाबका प्राचीन राजा) ये ब्राह्मणवंशोत्पन्न राजा हितपालका पुत्र था-स्वतंत्र पंजाब में इसका राज्य था-लाहौर राजधानी थी स० ई०९७७ में इसने गज़नीपर चढाई की पर हारा और गजनी के सुलतान सुबुक्तगींको ५० हाथी देकर और ढाई लाख रुपया देनेका वायदा करके हिंदोस्तानको लौट आया-मंत्रियोंकी राय थी कि, वायदा पूरा किया जाय पर ब्राह्मण पंडितोंकी राय थी कि म्लेच्छको रुपया देनेसे धर्म नष्ट होगा-ब्राह्मणों की मति मानकर राजाने रुपया नहीं भेजा एवं सुबुक्तगीने हिंदोस्तानपर चढाई की और पेशावरपर अधिकार जमालिया स० ई० ९९७में सुबुक्तगी मरगया और उसके बेटे महमूदने हिंदोस्तानपर कई हमले किये जिनमेंसे १३ तो केवल पंजाब ही पर किये.दिल्ली अजमेर कालिंजर और कन्नौज के राजे महाराज जयपालकी मददके लिये आयेथे पर वे भी महमूदकी सेनाके सामने कुछ न करसके निदान जयपाल फिर हारा और उस समय की रीत्यानुसार २ दफे हारनेके कारण आगमें जलकर मरगया और राज

पाट निजपुत्र अनङ्गपालको सौंपदिया–अनङ्गपालके समयमें भी महमूदने कई हमले किये पर सफलता नहीं हुई क्योंकि अनङ्गपालके राजपूत सिपाही जीतोड़-कर लड़े और राजपूतस्त्रियोंने अपने पति पुत्रादिकोंकी जो फौजमें सिपाही थे, आ-भूषण और वस्त्र बेंच २ कर तथा अपने शिरके बालोंकी रस्सियें बना २ कर सहा-यता की. स० ई० १०१३ में महाराज अनङ्गपालके बाद उनका पुत्र जयपाल द्वितीय लाहौरकी गद्दी पर बैठा स० ई० १०२२ में महमूदने जयपाल द्वितीयको परास्त करके पंजाबका राज्य छीन लिया.

जयसिंह कछवबाहे–(अम्बरनरेश) ये महाराज मानसिंहके दत्तक पुत्र स० ई० १६१५ में गद्दीपर बैठे. दिल्लीके बादशाह शाहजहांके समयमें इन्होंने अनेक साहसपूर्ण काम किये. स० ई० १६२८ में काबुलमें जाकर उपद्रव शान्त किय औरंगजेबके समयमें मिर्जा राजाके नामसे यही प्रसिद्ध थे. स० ई० १६६४ में औरं-गजेबने इनको दक्षिण की सूबेदारी दी. स० ई० १६६६ में इन्होंने मरहटा वीर शिवाजीको फुसलाकर औरंगजेबके दर्बारमें हाजिर किया और इस तरहसे बड़ा भारी युद्ध जो होनेको था मेटा. स० ई० १६६७ में दक्षिणसे लौटती समय रास्तेमें बुरहानपुरके मुकाम मृत्युवश हुये गुणीजनोंका सत्कार करते थे. ज्योतिष तथा गणितशास्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे, संस्कृत, हिंदी, तुरकी, अर्बी, फारसी खूब पढे थे, इमारत बनवानेके शौकीन थे. कवि बिहारीलाल सतसईके कर्ता तथा पं० जगन्नाथ सम्राट् रेखागणितके रचयिता इन्हींकी सभामें थे. सतसईमें ७०० दोहे हैं, प्रत्येक दोहेके बदले महाराजने बिहारीलालजीको १ । १ अशर्फी इनाम दी थी. रेखागणित रचनेके पुरस्कारमें जगन्नाथको कई गांव दिये थे. दिल्ली, मथुरा, जयपुर, बनारस व उज्जैनमें आकाशलोचन बनवाये थे जो अबतक विद्य-मान हैं. आगरेमें जयसिंहपुरा नामक मुहल्ला इन्हींके नामसे प्रसिद्ध है. इस स्थान पर महाराजने बहुत से मकान बनवाये थे, जिनका अब पता नहीं है.

जयसिंह सवाई–(जयपुरनरेश) निजपिता विष्णुसिंहके बाद स० ई० १६९९ में अपने पूर्वजोंकी गद्दीपर बैठे. उस वक्त इनकी उम्र कम थी जब औरंगजेबके सामने पेश होनेको जाने लगे तो इन्होंने अपनी मातासे पूंछा कि, यदि बादशाह कुछ हमसे पूछें तो हम क्या कहें? माताने उत्तर दिया कि, मौकेके मुवाफिक बात कहना. निदान जब ये औरंगजेबके रोबरू गये तो उसने इनके दोनों हाथ पकड कर कहा कि, तेरे बापने मेरे समयमें अनेक उपद्रव किये अब तू क्या कहता है? इन्होंने उत्तर दिया कि, शादीके वक्त मर्दका एक हाथ पकड़ा जाता है जिसकी लाजसे स्त्री उसको जिंदगीभर निबाहती है. सो आपने तो मेरे दोनों हाथ पकडे हैं. इस उत्तरसे खुश होकर औरंगजेबने इनको सवाई तथा राजाका खिताब दिया और पूर्वजोंका राज्य इनको सौंप दिया और २ हजा-री मन सब इनका मुकर्रर किया-औरंगजेबके बाद बहादुरशाहके समयमें इनके भाई

विजयसिंहने राज्यका दावा किया. बहादुरशाह ने किसी भाईको भी नाराज न करनाचाहा एवं इनका राज्य ज़प्त करके एक मुसल्मान सर्दारके सुपुर्द करदिया थोडेही दिनबाद बहादुरशाहको उपद्रव शान्ति करनेके लिये दक्षिण जानापड़ा नि-दान अवसर पाकर जयसिंहने अपना राज्य छीन लिया. पश्चात् फर्रुखसियरने दिल्लीके तख्त पर बैठकर इनको महाराजाधिराजका खिताब दिया और मुह-म्मदशाहने तख्त पर बैठकर इनको मालवाका सूबेदार मुकर्रर किया. स० ई० १७२० में जयसिंह परगना जिला मथुरामें इन्हीने बसाया स०ई० १७२८ में जयपुर शहर बनवाकर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बनाया स०ई० १७४३ में सिधारे और इनके पुत्र ईश्वरीसिंह गद्दी पर बैठे. कुण्डलियोंके कर्ता गिर्धर कविराय इन्हींके दर्बार में थे. "जयसिंहके १०९ गुण" इनकी बनाई पुस्तक भाषामें अच्छी है और "जयसिंहकल्पद्रुम" नामक ग्रन्थ जिसमें साल भरके व्रतोंकी विधि विधान, उद्यापन आदिहैं. इन्हींके आश्रित पंडितोंका बनाया हुआहै.

जयादित्य पंडित—इन्होंने तथा पंडित वामनजी मिलकर पाणिनीय सूत्रों पर सूत्रक्रमसे "काशिका" नामक अत्यंत सरल वृत्ति बनाई है. यहवृत्ति महाभाष्यसे पीछे की बनी प्रतीत होतीहै क्योंकि उसके शुरूमें "वृत्तौ भाष्ये" इत्यादि स्थलमें भाष्यका नाम लिखाहै.

ज़रदश्त—देखो जोराष्टर.

जरासन्धु—(मगधदेशका राजा).इसकी लड़की मथुराके राजा कंसको व्याही-थी. कंसके मारेजाने पर जरासन्धुने अपनी लड़कीके कहनेसे कंसका बदला ले-नेके लिये १८ दफे मथुरामें श्रीकृष्ण पर चढाई की. पर अंतमें हारा और श्रीकृष्णके इ-शारेसे भीमसेनने उसको चीरडाला. तहसील जलेसर ज़िला एटामें जरासन्धुका बनवाया क़िला अबतक टूटाफूटा पड़ा है. जब जरासन्धुने मथुरा पर चढाई की थी तब अपनी फ़ौजके ठहरने के लिये यह क़िला बनवाया था. फिरङ्गी विद्वा-नोंके मतानुसार ईसासे १२८० वर्ष पूर्व जरासन्धु गद्दी पर बैठाथा.

जस्वंतराउ हुल्कर(इन्दौरनरेश). तुकोजीराउ हुल्करके पुत्रथे. निज पिता-के बाद बहुतसे झगड़े तै करके गद्दीपर बैठे. इन्होंने स० ई०१८०२ में संधिया तथा पेश्वाको परास्त किया और अपना अधिकार बहुत कुछ बढाया.

पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंटसे इनकी छिड़ी बहुत दिनोंतक लड़ाई जारी रही जिसमें कभी इनको और कभी ब्रिटिश गवर्नमेंटको हार हुई-अंतमें स०ई० १८०५में सन्धि होगई-स० ई० १८११ में मल्हरराउ हुल्कर नामक बालकपुत्र छोड़कर मरे-मल्हररावके समयमें रियासत इन्दौरने ब्रिटिश गवर्नमेंटका आधिपत्य स्वी-कार किया.

जस्वंतसिंह—राठौर हफ्त हज़ारी (जोधपुर नरेश-भाषाभूषणके कर्त्ता) निज पिता गजसिंहके रणशायी होनेपर माड़वाड़ राज्यके वारिस हुये-दिल्लीनरेश शाहजहांने खुद अपने हाथसे इनको राजतिलक किया-उस वक्त इनकी उम्र१२वर्ष की थी. ये ४२ वर्ष बराबर माळवा, गुंजरात, दक्षिण, दिल्ली, पंजाब और काबुलकी सूबेदारी पर रहे और अनेक मुहिम्मोंपर गये. मनसब इनका हप्त हजारी था जिसके वेतनमें १७लाख रुपये वार्षिक आयका मुल्क माड़वाड़, गुजरात, हांसी, हिसार इत्यादिमें मिला था और सवापांच लाख रुपया सालाना बादशाही खजानेसे मिला करता था. काबुल तथा ईरानके फल फूलोंके बीज लाकर इन्होंने जोधपुरके बागोंमें बोये थे, जिनमेंसे अनारका बीज अबतक क़ायमहै-ये बड़े स्वामीभक्त और उदार चित्त थे. भाषाकविताभी अच्छी करते थे-संस्कृत खूब जानते थे."भाषाभूषण" तथा भागवतका तिलक इनके रचे ग्रंथहैं-बर्नियरसाहब निज यात्राके ग्रंथमें लिखते हैं कि "शाहजहांके बीमार होनेपर जो झगड़ा तख्तके लिये उसके बेटोंमें हुआ उसमें औरंगजेब और मुरादकी मिली हुई फ़ौजोंके मुक़ाबिलेके लिये महाराज जस्वंतसिंह भेजे गयेथे उज्जैनके मैदानमें सामना हुआ, फौजके मुसल्मान अफ़सर औरंगज़ेबसे मिलगये, महाराज अकेलेही लड़तेरहे जब थोड़ेही साथी रहे तो व्यर्थ प्राणदेना समझ अपने राज्यकी तरफ कूंच किया महाराजकी रानीने जो राना उदयपुरकी बेटीथी क़िलेके फाटक बंद करा दिये और कहा कि, वह जो रणमें पीठ दिखावे महाराना उदयपुरसे वीर क्षत्रीका जंवाई कहलाने योग्य नहीं-तुरंतही रानीने चिता प्रचंड करनेका भी हुक्म दिया क्योंकि उसने विचारा कि, मेरा पति कभी रणमें पीठ दिखानेवाला नहीं है वह तो अवश्य जूझ गया होगा-थोड़ेही देर बाद संदेह मिटगया-महाराज महलपर पहुंचगये रानी कई दिनतक कोपभवनमें पड़ी रही और केवल निज माताके मनानेसे जो उदयपुरसे इसी कामके लिये आईथी, मानी. औरंगज़ेबने तख्त पर बैठकर महाराजको काबुलकी सूबेदारी पर जहां उन दिनों उपद्रव फैलरहाथा भेज दिया-निरंतर नंगी तलवार हाथमें रखकर महाराजने काबुलकी कट्टर प्रजाको खूबहीं ढीला किया औरंगज़ेबने महाराजके जीतेजी हिंदुओंके मंदिर नहीं तोड़े क्योंकि एक दफे महाराजने कह दिया था कि, मंदिरोंके बदले मसजिदें ढाई जायँगी-सं०, वि० १७३५ में ५२ वर्षकी उम्रमें जमरोद (पंजाबमें) मरे-सिवाय २ गर्भवती रानियोंके और सबने सत किया-सुविख्यात अजीतसिंह आपहीके पुत्र थे.

जस्वंतसिंह—(महाराजाधिराज सर जस्वंतसिंह बहादुर, जी सी. यस. आई जोधपुरनरेश). निज पिता महाराज तखतसिंहके बाद स० ई० १५७३ में ३६ वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठे. इनके समयमें राज्य प्रबंध प्रशंसनीय रहा, प्रजाको सुख चैन मिला, रियासतमें गाँव २ स्कूल जारी हुयेजिसके कारण प्रजाका अधिक भाग

हिंदी लिखना पढना सीख गया-जस्वंतकालिज जोधपुर आपहीने जारी किया था-प्रजाके हितार्थ अनेक और कामोंमें भी लाखों रुपया सालाना खर्च किया जाता था. कवि मुरारीने जस्वंतयशोभूषण ग्रंथ रचकर १ लक्ष मुद्राके ४ गाँव इनाम पाये थे. ब्रिटिसगवर्नमेंट आपके राज्यप्रबंधसे सदैव प्रसन्न रही-आपके वैकुंठवास होने पर महाराज कुमार सर्दारसिंहजी (वर्तमान जोधपुरनरेश) गद्दी पर बैठे-रियासतका विस्तार ३७ हज़ार वर्गमील और आबादी प्रायः साढ़े अट्ठाईस लाख मनुष्योंकी है-

जहाँगीर-(मुगल बादशाह दिल्ली).बादशाह अकबरका बेटा स० ई०१५६९ में पैदा हुआ-कहते हैं कि, नामी फकीर शैखसलीम चिश्तीकी दुआ से फतेहपुर सीकरीमें इसका जन्म हुआ-निजपीताके मरने पर स०ई० १६०५में गद्दी पर बैठा बड़ा शराबीथा लेकिन दूसरों को शराबपीनेसे बहुत रोकता था इसी लिये कोई इसका कहना ठीक २ नहीं मानता था-इसने रेशमकी डोरीमें बाँधकर सोनेकी घंटियाँ अपने महिलमें लटका रक्खी थी-डोरीका दूसरा सिर महिलसे बाहर लटकता था-इन घंटियोंके बजादेनेसे हरकोई फरियादी बादशाहके पास तुरंत बुलाया जाता था-तख्त पर बैठतेही इसने शेरअफ़ग़ानखाँ बंगालके सूबेदारको मरवाडाला और उसकी बीबी नूरमहलको अपनी बेगम बनालिया और नूरजहां नाम रक्खा-जहांगिर नूरजहांका वशीभूत था-सर्कारी कागज़ोंकोभी नूरजहांही सुना करती और हुक्म दिया करती थी नूरजहांका चेहरा जहांगीरके साथ सिक्के पर भी छपता था और उसके बापको वजीर का ओहदा दिया गया था अंतमें महावतखाँ पंजाबके सूबेदारने जहांगीरको कैद कर लिया, पर नूरजहां बड़ी चालाकी से उसको छुडा लाई थोड़ेही दिन बाद स० ई० १६२७ में लाहौरको जाते वक्त रास्तेमें जहांगीर मरगया और क़िलेके बाहर नूरजहांके बाग़में दफनाया गया. ये विचारशील न था एक खूब सूरत लौंडेकीभी जिन्दा खाल इसने खिंचवाडाली थी.

जंगबहादुर-(सर जंगबहादुर, जी० सी० बी० जी० सी० यस आई० राज्य नैपालके मंत्री) नैपालके रहनेवाले एक प्रतिष्ठित वंशोत्पन्न क्षत्री थे. स. ई० १८४६ में नैपाल राज्यके वजीर हुए. स० ई० १८५० में इंग्लैंड की सैरको गये तबसे नैपाल दर्बार और ब्रिटिशगवर्नमेंटमें गाढी मित्रता हो गई. स० ई० १८५६ में नैपाल दर्बारने इनको महाराजकी उपाधि दी स० ई० १८५७ के गदरमें दर्बार नैपालने अपनी गोरखा पलटनसे सूबे अवधमें बगावत मिटवादी इस सहायताके पुरस्कारमें जंगबहादुरको जी० सी० यस० आई०, जी० सी० बी० की उपाधियां ब्रिटिशगवर्नमेंटने प्रदान कीं. स० ई० १८७६ में जब प्रिन्स आफ वेल्स नैपाल परधारेथे तो जंगबहादुरने खरीता पेश कियाथा ब्रिटिशराज्यमें इनकी सला

भी तोपके १९ फैरोंकी थी स० ई० १८७७ में ब मुकाम पिथौरा घाट तराई पलकमारतेमें मरगये शेरचीतेका शिकार खूब करते थे अनेक प्रकारके जनावरोंके पालनेका शौक था जिस्मानी कर्तबों और खेलोंमें अद्वितीय थे. अब इनके पुत्र रियासत नैपालके सुयोग्य मंत्री हैं टामसरो (सरटामसरो–Sir Thomas Roe.) स० ई० १६१४ में इंग्लैंडके बादशाह चार्ल्स प्रथमने इनको राजदूत नियत करके मुगलबादशाह जहांगीरके दर्बारमें हिंदोस्तान भेजा-सरटामसरोने यहाँ ४ वर्ष रहकर अंग्रेज़ोंकी तिजारती कोठियां बंगाल, मदरास इत्यादि में स्थापन करनेकी आज्ञा प्राप्त की–इंग्लेंड लौट कर इन्होंने अपने सफ़रका मनोहर वृत्तांत छपवाया–हिंदोस्तानसे सरटामसरो बहुतसी हस्तलिखित पुस्तकें संग्रह करके ले गये थे, जो इन्होंने स० ई० १६२८ में, किसी पुस्तकालयकी भेंटकर दीं हस्तलिखित सिकंदर की बैबिल भी ये यहांसे लेगये थे, जो इन्होंने बादशाह इंग्लैंडकी भेंट की–स० ई० १६३९ में इनके उद्योगसे पोलैंड और स्वीडेन के बादशाहोंमें संधि हुई स० ई० १६४१ में राजदूत नियत होकर रहिस्बन गये–वहांसे लौटने पर प्रिवीकौंसलके मेम्बर इंग्लैंडमें होगये-स० ई० १६४४ में ६४ वर्षके होकर मरे.

टीपू सुल्तान–निज पिता हैदरअलीके बाद स० ई० १७८२ में मैसोरकी गद्दी पर बैठे–उस समय मैसोर राज्यमें १ लाख फौज थी और कोशमें ३करोड़ रुपया और बहुतसी जवाहिरात थी–पुरनिया नामक ब्राह्मण इनका मंत्री था–टीपू निज पिताके समान रणकुशल और निर्दयी था– ३० हजार ईसाइयोंकी इसने सुन्नत करवाई और १लाख हिंदुओंको मुसल्मान किया प्रजा इस निर्दयीके अन्यायसे अकुलाय उठीथी–स० ई० १७९० में मरहटा, निजाम और अंग्रेजोंने मिलकर इसकी राजधानी श्रृंगापट्टनका घेरा किया–२वर्षतक लड़ाई जारी रही-अंतमें संधि हुई, जिसके अनुसार टीपू को अपना आधा राज्य और ३ करोड़ रुपया लड़ाईका खर्चा देना पड़ा–इस लड़ाईके बाद टीपूका बल पराक्रम बहुत घटगया था पर उसके दिलमें बदला लेनेकी आग भबकतीथी निदान उसने फरासीसोंसे मेल किया–यह देख लार्डवेलिजली ब्रिटिश गवर्नर जेनरल हिंदने टीपूकी राजधानीका स० ई० १७९९ में घेरा किया और टीपू बड़ी वीरतासे लड़कर मारागया–अंगरेज़ों मरहटों और निजामने उसका राज्य आपसमें बांट लिया और मैसोरके आसपासके थोड़ेसे मुल्क पर मैसोरके प्राचीन हिंदू राज्यवंशका एक लड़का बिठलाकर मैसोर की रियासत बनादी.

टेनीसन–(Alfred Tenneyson)इनका पूरानाम ऐल्फ्रेड टेनीसन था.इनके बाप लिन्कनशायरके पादरी थे. कैम्ब्रज देश विद्यालयमें पढकर इन्होंने बी० ए० की परीक्षा पास की थी. पहिले पहिल स० ई० १८३० में इन्होंने निजकविताकी एक पुस्तक छपवाई और स० ई० १८४२ के बाद इनके रचे अनेक और

ग्रंथभी छपे, जिनसे इनकी प्रसिद्धि दिन प्रति दिन बढ़ती गई, यहां तक कि, अंग्रेजीके उत्तम कवीश्वरोंमें इनकी गणना हुई. स० ई १८५१ में कवि वार्डस्वर्थके मरने पर इंग्लैंडके राजकविका पद इनको दिया गया. स० ई० १८५५ में आक्सफोर्ड विस्व विद्यालयने डी० सी०यल की पदवी इनको प्रदान की० और स० ई० १८८३ में ब्रिटिशगवर्नमेंटने पीअरेज (Peerage) की पदवी इनको प्रदान की स० ई० १८९० में ८० बर्षकी उम्रमें मरे.

टोडरमल-(अकबरके दीवान आला) दर्बार अकबरीके नवरत्नोंमें इनकी गणना है. लाहौरमें एक खत्रीके घर जन्मे थे और ५ ही वर्षकी उम्रमें पितृविहीन हो गये थे. निदान माताने इनको अपने मायकेमें रहकर गुजरातकी किसी ग्रामीण पाठशालामें पढाया था ११ वर्षकी उम्रमें ये राजा हरवंसरायके यहां नौकर होकर लाहौर गये. ३ वर्ष बाद हरवंसरायके मरनेपर इन्होंने शेर शाहसूरके यहां मुंशियोंमें नौकरी करली. शेरसूरके मरने पर बादशाह अकबरकी फौजमें नाम लिखाया. योग्य पुरुष तो थेही थोड़ेही दिनोंमें वर्दी मेजरके पदपर पहुंचगये और दाऊदखाँ सूबेदार बंगालाको जो बागी होगया था बड़ी वीरतासे परास्त किया स० ई० १५८० में अकबरने इनको बंगालका सूबेदार नियत किया. वहां रहकर इन्होंने निम्नस्थ सुप्रबंध किये जिनके कारण इनका नाम अबतक लोगोंकी ज़बान पर है:-

१ ईरानदेशके अनुसार हिसाब किताबका तरीका जारी किया.

२ खेतोंकी पैमायश कराके सीमाबन्दी की और लगान लगाया.

३ रुपयेके ४० दाम ठहराये जिससे सर्व साधारणको लेने देनेमें सुभीता हुआ.

४ राज्यभारमें डिपुटी कमिश्नर नियत किये.

५ सरकारी घोड़ोंके दाग लगवाये.

६ सहस्त्रों लौंडी और गुलामोंको बंधनमुक्त कराया अंतमें.

बादशाह अकबरने इनको दीवान आलाके पदपर नियत करके दिल्ली बुलालिया. पंजाबी खत्रियोंमें तीन साला सियापेकी रसमको उठाकर वार्षिक रसम इन्होंने जारी की. ये फार्सी, अरबी और संस्कृतके पूर्ण विद्वान् थे. भाषाकविताभी अच्छी करते थे. भागवतका फारसीमें उल्था किया था. निजपूर्वजोंके धर्मको दृढतासे मानते थे. काशीवासी पं० रामदैवज्ञने, "टोडरानन्द" ज्योतिषग्रंथ इनके नामसे रचा था.

स०ई०१५८९ में ७२ वर्षके होकर लाहौरमें मरे. इनका इकलौता बेटा धारासिंधकी किसी लड़ाईमें मारागया. लहिरी ग्राम जि०सीतापुरके रहेनवाले टोडरमल कायस्थ, शाहजहांके दरबारमें वजीरथे.

टोलेमी प्रथम-(Ptolemey). सिकंदर आज़मका सौतेलाभाई था सिकंदरके वक्तमें सेनापति रहा और उसके साथ देश विदेश घूमा. सिकंदरके निःसन्तान मरनेपर राज्य सेनापतियों और रिस्तेदारोंके बीच बटा और मिश्रदेशका राज्य

टोलेमीके हिस्सेमें आया. इसने बड़े न्याय और प्रबंधसे राज्य किया और उत्तरीय अफरीकाको विजय किया. इसकी राजधानी अस्कंदरिया पृथ्वी भरकी तिजारती मंडी थी. अस्कंदरियामें एक रोशनीका मीनार, एक अजायबखाना और एक पुस्तकालय इसने खोलाथा इस पुस्तकालयमें ६० लाख पुस्तकें करोड़ों रुपयेके खर्चसे भूमण्डलके अनेक भागोंसे ढुँढ़वाकर संग्रह करलीगईथीं. जब मुसलमानोंने मिश्रदेश फ़तेह किया तो खलीफा उमरके हुक्मसे यह पुस्तकालय जलाकर बरबाद किया गया. टोलेमी बडा विद्याअनुरागीथा. उसने स्वयं कई ग्रंथ रचेथे जिनमेंसे एक सिकंदरके जीवनचरित्रकी पुस्तक थी. स० ई० से २८५ वर्ष पूर्व मरा और उसके पुत्र टोलेमी द्वितीयने गद्दी पर बैठकर अपने दो भाइयोंको वध किया, अपनी भार्य्या तथा बहिनसे शादी की, रोमनलोगोंसे मेल किया, व्यापारकी उन्नति की, लालसागरपर एक शहिर बसाया, जहाज़ों केबेड़े बनवाये, विद्वानोंका सत्कार किया, बाइबिलका अनुवाद ग्रीक भाषामें कराया और ६ वर्षकी उम्रमें स० ई० से २४७ वर्ष पहिले मरा.

टोलेमी–(ज्योतिषी) स०ई० १४० में मिश्रमें हुआ–ज्योतिष और भूगोल पर इसने बड़ी२ पुस्तकें रची थीं–"मजस्ती" नाम ज्योतिषसिद्धांत इसका रचा हुआहै–इसी सिद्धांत के अनुसार फिरङ्गी लोग हजारों वर्षतक मानते रहे कि, पृथ्वी ठहरी हुई है और उसके चौगिर्द सूर्य्य चंद्र इत्यादि ग्रह घूमते हैं. इसीका दूसरा नाम बतलीमस है.

डफरन–(मार्कुइस-आफ डफ़रन Marquis of Dufferin) इनका असली नाम फ्रेडरिक टेम्पिलब्लैक वुड था–स० ई० १८२६ में पैदा हुये–एटन और आक्स फोर्ड के कालिजों में उच्च श्रेणीकी शिक्षा पाई, स० ई० १८४१ में पिताके मरने पर डफ़रनके बैरनका पद पाया–स० ई० १८५९ में आयसलैंड (बर्फिस्तान) की सैरको गये और उक्त यात्रा का वृत्तांत एक पुस्तक में छपवाया–स० ई० १८६० में कमिश्नरके पद पर नियुक्त होकर स्यामद्वीपको गये और ईसाइयोंके क़त्लकी तहक़ीक़ात की और वापिस आनेपर के० सी० बी० उपाधि पाई–स०ई० १८६४ से ६६ तक हिन्दोस्तानके उपमंत्री और फिर रणविभागके उपमंत्री हुये पश्चात् पोस्ट मास्टर जेनरल रहे–

स०ई० १८७२ में कनाडाके गवर्नर जेनरल हुये–थोड़ेही दिनबाद महाराजा रूसके दर्बारमें राजदूत नियत करके भेजेगये स० ई० १८८१ में शाह रूमके दर्बारमें राजदूत बनकर गये–दूसरी साल झगड़ा शांति करनेके लिये मिश्र भेजे गये–स०ई० १८१४ में वायसराय नियत होकर हिंदोस्तान आये–इस पद पर ४ वर्ष रहकर स०ई० १८८८ में इस्तीफा देकर इंग्लैंडको वापिस गये–इनके समय में उपरी ब्रह्मा विजय हुआ अमीर क़ाबुलसे मित्रता भाव जारी हुआ और आइनसभायें स्थापित हुई–हिंदोस्तानसे वापिस जाकर मार्कुइसकी उपाधि पाई और

रूमके दर्बारमें राजदूत नियत करके भेज दियेगये-अर्ल लिटनके मरने पर वे फ्रांसके दर्बार में राजदूत नियत किये गये-स० ई० १९०२ में मरनेसे पहिले इनको व्यापारमें बड़ा घाटा बैठा था जिससे इनको व्यथा लगी थी-इनकी पत्नी लेडी डफ़रन ने हिंदोस्तानमें सब जगह जनाना हस्पताल जारी किये-राजा महाराजा रईस अमीरोंने दिल खोलकर जनाना हस्पतालोंके लिये चंदा दिया था और बड़े२ ख़िताब पाये थे-

सबसे पहिले जनाना हस्पताल जारी करनेकी प्रेरणा इस प्रकार हुई. एक समय महारानी पन्ना बहुत बीमार हुई. रोग ऐसा था कि, जिसका इलाज लज्जाके कारण पुरुष डाक्टरसे नहीं करा सकती थीं. बहुत कष्ट सहन करनेके पीछे एक डाक्टर मेमने लखनऊसे आकर महारानीको आराम किया. इन्हीं मेमको महारानीने लन्डन भेजकर राजराजेश्वरी विक्टोरियासे जनाना हस्पताल जारी करानेके विषयमें विनती की-इस विनतीपर करुणामय होकर कैसरे-हिन्दने लेडी डफ्टरनसे जिनके पति उन दिनों वायसराय होकर हिंदोस्तान आनेको थे, जनाना हस्पताल जारी करनेको कहा था. लेडी डफ्टरनने हिंदोस्तानमें आतेही चन्दा उघानेका उद्योग निज पतिकी मददसे किया जिसके द्वारा हिंदोस्तानके सब बडे शहरों और कसबोंमें जनाना हस्पताल खोल दियेगये, जिनके द्वारा अब लाखों स्त्रियां उन रोगोंसे मरनेसे बचती हैं जिनका इलाज पहिले लज्जाके कारण डाक्टरों या हकीमोंसे नहीं करासकती थीं.-

डागीर-(Dawgere) एक फरासीसी था जिसने स. ई. १८२९ में फोटोग्राफी (अक्सी तस्वीरें खीचनेका इल्म) अन्वेषण किया.

डामाजी गैकवाड़ प्रथम-(बरोडा राज्यके संस्थापक). ये केरोजी मरहटाके पुत्र राजा साहू सतारा गढवालेके दर्बारमें सेनापति थे. मुगलों तथा अन्यशत्रुओंसे ये बड़ी वीरतासे लड़े थे जिसके पुरस्कारमें साहूने इनको मरहटा दलमें दूसरे दर्जेका पद, शमशेर बहादुरका खिताब और गुजरात प्रांतमें बड़ी जागीर दी थी, स. ई. १७२० में डामाजी गैकवाड़का देहांत हुआ. बरोडामें अबतक इन्हींकी सन्तति राज्य करती है-पहिले पहिल डामाजी गैकवाड़ पेश्वाके दर्बारमें छोटे दर्जेके नौकर थे. बालापुरकी लड़ाईमें इन्होंने बड़ी वीरतासे लड़कर मुगलसम्राट् दिल्लीकी फौजके दांत खट्टे करदिये निदान मरहटा दलके सेनापतिकी सिफ़ारिशपर राजा साहूने इनको उपसेनापति नियत किया.

डामाजी गैकवाड़ द्वितीय-(बरोडानरेश). पिल्लाजीके पुत्र तथा डामाजी गैकवाड प्रथमके पौत्र थे. स० ई० १७३१ में पिल्लाजीके बाद इन्होंने गद्दीपर बैठकर ४० वर्ष पर्य्यंत लड़भिड़कर गुजरात तथा आसपासके देशोंको स्वराज्यमें मिलाया-स० ई० १७३१ की साल पानीपतकी लड़ाईमें इन्होंने

बडे २ वीरताके काम किये और स० ई० १७३२ में शहर दर्डे डाफतेह किया-पश्चात् शहर पट्टन और गुजरातकी प्राचीन राजधानी अहिमदाबादपर अधिकार जमाया. अन्तमें काठियावाड़के सब राजोंने परास्त होकर इनको राजस्व देना स्वीकार किया-इनके पीछे इनके २ पुत्र गोविंदराव तथा फतेहसिंह क्रमशः बरोडाकी गद्दीपर बैठे-स० ई० १८०३ में रियासत बरोडाने ब्रिटिश गवर्नमें-टका आधिपत्य स्वीकार किया. तबसे एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट राजधानी बरोडामें रहता है और गवर्नमेंट हिंदको राजस्व दिया जाता है-कई पीढ़ी बाद इस गद्दीपर स० ई० १८७५ में महाराज सैय्याजीराव तृतीय (वर्तमान नरेश) सुशोभित हुये. आप सर्वगुणसम्पन्न प्रतापी नरेश हैं-

डिकेन्स-(चार्लस डिकेन्स-Charles Dickens) ये पृथ्वी प्रसिद्ध उपन्यासकार पोर्टस मौथ (इंग्लैंड) के समीप लैंड पोर्टमें जन्मे-इनके बाप जान डिकेन्स ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सामुद्री सेनाके बखशीके दफ्तरमें क्लर्क थे. चार्लस डिकेन्स ८ भाई बहिन थे, एवं इनके बापका गुजारा कठिनतासे होता था और इसी लिये इनको किसी स्कूलमें शिक्षा देनेकी जगह निज परिश्रमसे ही विद्योपार्जन करना पडा था. बडे होकर इन्होंने कुछ दिन-तक किसी वकील की मुहर्रिरी स्वल्प वेतन पर की पश्चात् अखबारोंके लिये मजमून लिखना आरम्भ किया और स० ई० १८४५ में अखबार "डेलीन्युज" के सम्पादक हो गये. कुछ दिनबाद उपन्यास रचना की तरफ़ इनका ध्यान झुका जिससे जगत्में प्रसिद्धि पाई और धनाढ्य हो गये. फिर तो रोचेस्टरके समीप इन्होंने " गैडशीलभवन" खरीदा इनका कुटम्ब बड़ा था और ये उन सबका पालन पोषण करते थे. कई दफे अमेरिका गये और वहाँके निवासी इनके उपदेशोंसे कृतार्थ हुये. निर्भय होकर अन्याय, लंपटता, कमीनेपन इत्यादिकी निन्दा करतेथे और सहनशीलता, न्याय इत्यादि सुकर्मोंकी प्रशंसा करतेथे स्वरचित ग्रंथोंमें इन्होंने प्रहसनके साथ २ चातुर्यता और सत्यताके उपदेश संयुक्त किये हैं. हजारों मनुष्य इनकी वक्तृताको सुनकर प्रसन्न होते थे और लाभ उठाते थे. २० वर्ष निर्वाह होनेके बाद इनमें और इनकी स्त्रीमें अनबन हुई और सम्बंध टूट गया स० ई० १८७० में १ दिन बीमार रहकर ५८ वर्षकी उम्रमें मरे और वेस्ट मिनिस्टर ऐबीके कबरस्तानमें दफन किये गये.

डेलहौजी-(James Andrew Lord Dalhowsie). इनका पूरा नाम जेम्स एन्डरू लार्ड डेलहौजी था. हारो और आक्सफोर्डमें पढ़कर एम० ए० की परिक्षा पास की थी. स० ई० १८४३ में बोर्ड-आफ-ट्रेडके उपप्रधान हुये. स० ई० १८४७ में गवर्नरजेनरल नियत होकर हिंदोस्तान आये पंजाब इन्हींके समयमें सर्कारी अमलदारीमें मिलाया गया नागपुर, सतारा, झांसी, बरार, और अवध इन्हींके समयमें खालसे किये गये. नहिरें, सड़कें, रेल, तार इत्यादि

इन्हींके वक्तमें हिंदोस्तानमें जारी हुआ.ये चाहते थे कि, शनैः २ सब देशी राज्य ब्रिटिश राज्यमें मिलालिये जायें और किसी राजाको गोदलेनेकी सनद् न दी जावे.

स० ई० १८५७ के गदरके कारणोंमें लार्ड डूलहौज़ीकी यह राजनीतिभी मानी जाती है-अंतमें ५ हज़ार पाउंडकी वार्षिक पेन्शन पाई.

स० ई० १८६० में ४८ वर्षकी उम्रमें मरे.

ड्यूक-आफ़-वेलिङ्गटन (Sir Arthur Wellesley Duke of Wellington) पूरा नाम सर आर्द्र वेलिज़ली ड्युक-आफ-वेलिंगटन था-इन्होंने कुछ दिन इंग्लैंडमें और फिर फ्रांसमें रहकर विद्या पढी-स० ई० १७८७ में अंग्रेजी सेनामें भरती हुये. स. ई. १७९७ में हिंदोस्तान आकर मैसोर के गवर्नर नियत हुये-असाईकी लड़ाईमें जो स० ई० १८०३ में हुई, इन्होंने ८०० सिपाहियोंसे सेंधियाकी ३० हज़ार फौजको परास्त किया-स० ई० १८०५ में इंग्लैंडको वापिस गये और अनेक कठिन अवसरोंपर राज्यसेवा प्रशंसनीय तौरपर की-नेपोलियन बोनापार्टको वाटरलूकी लड़ाईमें परास्त करके ड्युक-आफ वेलिङ्गटनकी उपाधि पाई-पश्चात बड़े २ ओहदों पर रहे-युद्ध में कभी पीठ न दिखलानेवाले प्रामाणिक और यूरुपमें परम प्रतिष्ठा प्राप्त महा पुरुष थे-

स० ई० १८५२ में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे-महारानी विक्टोरियाने मृत्युकी हृदयविदारक ख़बर पाकर कहा 'आज इंग्लैंडका नहीं ग्रेटब्रिटेनका गर्व कीर्ति महापुरुष नहीं रहा इसके समान कोई दूसरा न हुआ न होगा" श्रीमतीने स्वयं इस वीर पुरुषके विषयमें लिखा है "स्मरणीय योधा ड्युक मरनेपरभी अपने सुकार्यों से चिरंजीव रहेगा-उसमें भूमण्डलके सन्मानका समावेश था-प्रजागणमें वह सर्व्वोत्तम था- दोनों दल उसका आदर करतेथे-राज्यका परम मित्र होनेपर भी बड़ा सादा था- सब काम धैर्य्य और निर्भयतासे करता था- इस राज्यको कभी ऐसा स्वामीभक्त महात्मा नहीं मिलेगा-वह सदैव सुसम्मति और कठिनताके समय सहायता देनेको तैय्यार रहता था- ऐसा कोई मनुष्य न होगा जो उसकी मृत्युपर न रोया हो !" पार्लियामेंटने अपने खर्चसे इनको राजसी ठाटसे दफनाया लार्ड वेलिजली गवर्नर जेनरल हिंद इनके बड़े भाई थे.

ड्रेक-(सरफ्रान्सिस ड्रेक-Sir Francis Drake.) इस प्रसिद्ध इंग्लैंडवासी अमीरुल बहिरने रानी एलिजाबेदके समयमें स० ई० १५७९ की साल २ वर्ष १० महीनेमें पृथ्वीकी परिक्रमा कीथी. स० ई० १५८९ में पार्लियामेंटके मेम्बर होगये.

स० ई० १५३९ में जन्मे.

स० ई० १५९५ में मरे.

ढोलाराव-इन्होंने जयपुर प्रान्तमें कछवाहोंका राज्य स०ई०९६७में स्थापन किया. इनके पुत्र अथवा पौत्रने पुरानी राजधानी अम्बरको मीना लोगोंसे फतेह कियाथा. स० ई० १७२८ में जयसिंह सवाईने जयपुर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बनाया. मारु नामक स्त्रीसे ढोलाका अत्यंत प्रेम था, जिसके विषयमें गीत अबतक गायेजातेहैं. ढोलाके पश्चात् इस गद्दीपर बैठनेवाले राजोंमें सवाई माधौसिंहजी (वर्तमाननरेश) १०६ वें हैं.

तख्तसिंह–(रावल सर तख्तसिंह, जी० सी० यस० आई०, यल० यल० डी०)भाउनगर (काठियावाड़ नरेश) स० ई० १८५८ में जन्मे. निजपिता महाराजा जस्वंतसिंहके बाद स० ई० १८७० में गद्दीके वारिस हुये. स० ई० १८७१ में राजकोट कालिजमें पढनेके लिये भेजेगये. कालिजके अध्यापक आपके परिश्रमी स्वभावसे खुश रहे. स० ई० १८७४ मे आपके ३ विवाह हुये और ३ विवाह और पीछे किये. स० ई० १८७५ में कालिज छोड़नेके बाद लफटेन्ट करनैल नट साहबके साथ हिंदोस्थानका दौरा किया और उक्त साहबसे विशेष शिक्षा भी पाई स०ई०१८७७ के दिल्लीदर्बारमें आपकी सलामी तोपके ११ फैरसे १५ फैर किये गये स० ई० १८७५ में राजका पूरा अधिकार आपको सौंपागया आपने २ रेल्वे लायन्स १२० मीललम्बी ८० लाख रुपयेके खर्चसे बनवाई. स० ई० १८८१ में के० सी० यस० आई० और स० ई० १८८६ में जी० सी० यस० आई० की उपाधि पाई इनके समयमें २५ लाख रुपये देश सुधारनेमें खर्च हुये. शिक्षाविभागपर आपकी विशेष दृष्टि थी. स्त्रीशिक्षाके भी उद्योगी थे. पानीके नल आपही के समयमें भाउनगरमें जारी हुये. १ लाख रुपया नार्थब्रुक इन्डियन क्लबको चंदेमें दिया इस क्लबका उद्देश इग्लैंट और इन्डियामें मेल मिलाप कराना है. स० ई० १८९३ में इंग्लेंड जाकर यल० यल० डी० की उपाधि कैम्बृज विश्वविद्यालयसे प्राप्त की स० ई० १८९६ में मृत्यु हुये और आपके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा भाउसिंहजी (वर्तमान नरेश) २१ वर्षकी उम्रमें गद्दी पर बैठे. राज्यका विस्तार २८६० वर्गमील है. सालियाना आमदनी ४१ लाख रुपयेकी है. इस रियासतके राजे गोहेलवंशी हैं. गोहेल वंश चंद्रवंशकी एक शाखा है. गोहेलवंशी राजोंका स० ई० ८१२ के बहुत पहिलेसे सौराष्ट्र (काठियावाड़) में अधिकार है. पहिले राजधानी सीहौर थी. स० ई० १७२३ में रावलभाउसिंहने भाउनगर बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया.

ताजबीबी–(इसका असली नाम अर्जुमंदबानु बेगम था और शाहजहाँ बादशाह दिल्लीके साथ शादी होनेपर मुमताजमहल लकब पायाथा. ये नूरजहांके भाई आसफ़खाँ वजीरकी बेटी थी. स० ई० १५९२ में पैदा हुई–स० ई० १६१२ में शाहजहांके साथ इसकी शादी हुई. स० ई० १६३१ में बुरहानपुरमें

मरी-मरते समयका इसका वृत्तांत यों है कि, ये उन दिनों हामला थी दैवगतिसे १ दिन गर्भमें बच्चा रोया-जिसके गर्भमें बच्चा रोता है वह स्त्री जीती नहीं है- निदान ताजबीबीने बादशाहको बुलाकर गले लिपट रोकर कहा कि, बादशाह सलामत मैं आपसे रुखसत होती हूं,, आपकी बादशाहीका मैंने थोड़ाही सुख, भोग पाया क्योंकि आपको तख्तपर बैठे पूरे ४ वर्ष भी नहीं हुये हैं खैर मालिककी मर्जीमें कुछ वश नहीं, लेकिन दो बातें मैं आपसे कहती हूं एक तो आप अब दूसरी शादी न करें क्योंकि आपके दाराशिकोह आदि ४ बेटे और ४ बेटियें मौजूद हैं और दूसरी बात यह है कि,आप मेरा मकबरा ऐसा बनवादें कि- उसकी समान पृथ्वीपर दूसरा न निकले. शाहजहांने इन दोनों बातोंपर अमल किया-दूसरी शादी नहीं की और जमनाके किनारे आगरेमें ताजबीबीका रोजा संगमर्मरका ऐसा बनवा दिया कि. जिसकी समान भूमण्डलपर दूसरा मकबरा नहीं है-पहिले तो ताजबीबीकी लाश बुरहानपुरमें गाड़ दी गई थी फिर जब आगरेमें रोजा बनकर तैयार होगया तो वहांसे हड्डियें उखाड़कर रोजेमें दफनाई गई.

तांतियाटोपी-(सन् ५७ के गदरका प्रसिद्ध बागी). ये पूनाके जंगलोंमें घूमता पकड़ा गया और१८अप्रेल स०ई०१८५९को फांसी दिया गया. फांसी दियेजानेसे पहिले जो इसने अपना बयान लिखाया वह यह है-" मैं पूनाका रहनेवाला ब्राह्मणहूं ३० वर्ष हुए तब पूनासे मध्यहिंदमें आया और तोपखानेमें चाकरी करली. बादको बिठूर (कानपुर)आकर नाना साहिबके यहां नौकरी की. गदरके समयमें मैं नाना साहिबहीका नौकर था कानपुरमें मेरेही उकसानेसे मेमों और उनके बच्चोंको बागियोंने मारडाला. नाना साहिब मेरी इस काररवाईपर बहुत नाराज हुये क्योंकि वे उनकी हिफाजतका वचन दे चुके थे. १० आकटुबर सन् ५७ को बागियोंकी ८ हजार सेनान जो आगरेमें अंग्रेजोंपर धावा किया था. उसका सेनापति मैंही था यदि मैं धोका न खा जाता तो अंग्रेज सहिल नहीं जीतने पाते. बेतवाकी लड़ाई में मेरे पास २२ हजार सेना और १३० तोपें थीं. इससे अधिक फौज मेरे अधिकारमें और कभी नहीं रही थी.

तांतिया भील-(डॉकू) जिला नीमर मुल्क बरोडाके किसी गांवमें स० ई० १८४१ की साल पैदा हुआ. माता इसको छोटासा छोड़ मरी थी और इसका बाप भाऊसिंह कृषिकारथा लड़कपनहीसे पराक्रमी मालूम होता था साथके खेलनेवाले लड़के आतंक मानते थे. लड़कपनमें इसने खेती करना तीर कमान चलाना और निशाना लगाना सीखा था. जब ये ३० वर्षका था तब इसका बाप मर गया. बापके जीते जी इसने शराब पीने और नाचने गानेमें अपना समय बिताया था गरीबों फकीरोंकी सहायत करनेकी आदत इसमें

शुरूहीसे पाई जाती थी. बापके मरनेसे कुछ दिनोंबाद एक दफे तांतियासे माल-गुजारी अदा न हो सकी इस लिये सरकारने उसके खेत नीलाम कर दिये तब तो लाचार होकर वह बरोडासे पोखड़को चलागया क्योंके वहाँ उसके बापकी कुछ जमीदारी थी पर वहाँके जमीदार शिवपटैलने बहुतसे लोगोंसे मिलकर उसकी वहभी जमीदारी छीन ली सर्कारी अफसरोंने भी बहुतसे लोगोंकी गवाही पर . उसके खिलाफ फैसला कर दिया पश्चात् शिवपटैल और उसके साथियोंने मिल मिलाकर निर्दोष तांतियाको कैद करा दी कैदसे छूटकर वह बेचारा हुल्करकी रियासतमें बसकर खेती करने लगा परंतु पोखड़वासी उसके शत्रुओंने पुलिससे मिलकर चैन नहीं लेने दिया, मुकद्दमें बना२ अकसर उसको सज़ा कराते रहे–इन कमीनेपनकी चालोंसे तंग आकर तांतिआके दिलमें पोखडवासी शत्रुओं तथा पुलिससे बदला लेनेकी आग भबक उठी, पर कोई उपाय न देख उसने डांकूका पेशा इख्तियार करलिया और मध्य हिंदके जंगलोंमें रहने लगा–उसकी चातुर्यता और उदारताको देख बहुतसे डांकू उससे आमिले–फिर तो तांतियाने शिवपटैल और उसके बहिकानेसे उत्पन्न हुये अनेक पोखड़वाशी शत्रुओंको नाक चने चबादिये उनके घर फूक दिये, माल अस्बाव लूट लिया अनेकोंकी नाक काट डाली और उनकी बहिन भाञी, बहू बेटियोंके सतित्व भंग कर दिये, बहुतसे शत्रुओंके प्राण हत डाले शिवपटैलका बीज बकला नष्ट कर दिया, पुलिस उसके पकड़नेकी फिक्रमें मुद्दतों तक रही, पर उसने अनेक सिपाहियों को नासिका हीन करदिया, पुलिस अफसरोंके सामनेसे उनके घोड़े ले२ कर भाग गया, और कितनी दफै हवालातसे निकल चम्पत हो२ गया–भील लोग तांतियाके सुशील स्वभावसे बहुत प्रसन्नथे, वे उसका पता किसीको नहीं बताते थे और वहभी उनकी सब प्रकार मदद करताथा–लूटका माल अपने साथियोंमें बराबर २ बांट देताथा–अमीरोंको लूटता और ग़रीबोंको देता था–एक दफे टापटी नदीके तीर एक दिन में भूखोंको ६ हज़ार रुपये दे दिये थे–अंतमें जब पुलिस कुछ न कर सकी तो फौज को तांतियाके पकड़नेका हुक्म हुआ. सर लेपिल ग्रेफ़िन और रिसालदार मेजर ईश्वरीसिंह इस कामपर तईनाथ हुये. निदान एक सुन्दरी स्त्रीकी मददसे, जिससे कि, तांतियाकी मुलाकात थी, ये डांकू आकर स० ई० १८८९ में पकड़ा-गया जब्बलपुरमें उसका मुकद्दमा हुआ और फांसीका हुक्म मिला–अपने बयानमें झूंठ नहीं बोला. अन्तमें केवल यह प्रार्थना की कि, मुझको फांसी देनेकी जगह गोलीसे मार दिया जाय, लेकिन कुछ सुनाई न हुई. जब फांसीको लाया गया तो उसको कुछ करना बाकी नहीं था मुखपर प्रसन्नताके चिह्न मालूम देते थे क्योंकि दुष्ट शत्रुओंसे यथोचित बदला लेकर परम धामको सिधारता था.